★ पुस्तक : सस्कृति रा सुर

★ प्रवचनकार राजस्थानकेसरी पुष्करमुनिजी महाराज

★ सम्पादक : देवेन्द्र मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

★ रूपान्तरकार : श्रीनृसिहराज पुरोहित, एम. ए.

★ प्रस्तावना डॉक्टर शक्तिदान कविया, एम ए. पी-एच. डी.

★ प्रेरक . रमेश मुनि शास्त्री, राजेन्द्र मुनि शास्त्री,

★ प्रकाशक : श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, पदराडा जि. उदयपुर

★ प्रथम प्रवेश जनवरी १९७३

★ पुस्तक पृष्ठ एक सौ वहत्तर

★ मूल्य पाच रुपए मात्र

★ मुद्रक : सजय साहित्य सगम के लिए
रामनारायन मेडतवाल
श्रीविष्णु प्रिंटिंग प्रेस,
राजा की मडी, आगरा—२

प्रकाशकीय

'संस्कृति के स्वर' पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमारा हृदय आनन्द से झूम रहा है। हमारी कितने ही दिनो से इच्छा थी कि हम सद्गुरुदेव श्री के प्रवचनो की पुस्तक प्रकाशित करें, पर हमारी इच्छा मूर्त रूप न ले सकी। इसके पूर्व गुरुदेव श्री के प्रवचनो की पुस्तकें— 'जिन्दगी की मुस्कान, जिन्दगी की लहरें, साधना का राजमार्ग, 'ओकार : एक अनुचिन्तन' आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। गुजराती और राजस्थानी भाषाओ मे भी पुस्तकें निकली है, जो अत्यधिक लोकप्रिय हुई है।

सद्गुरुदेव श्री साहित्य और संस्कृति के संगमस्थल है। उनका व्यक्तित्व अनूठा है, और कृतित्व गौरवशाली है। वे स्थानकवासी समाज के एक प्रमुख सन्त है। प्रसिद्ध प्रवक्ता है और गम्भीर विचारक हैं। वे जब प्रवचन करते हैं तब गम्भीर से गम्भीर विषय को सरस व सरल बनाकर प्रस्तुत करते है। श्रोताओ मे प्रसन्नता के फव्वारे छूट पड़ते हैं।

पुस्तक के प्रवक्ता है श्रद्धेय सद्गुरुवर्य राजस्थानकेसरी पुष्कर मुनि जी महाराज और सम्पादक हैं समर्थ साहित्यकार देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री, जो उनके प्रधान अन्तेवासी है। गुरु के भावो को एक शिष्य पकड़ सकता है वह अन्य व्यक्ति नही पकड़ सकता। गुरुदेव श्री के मौलिक प्रवचनो का संग्रह देवेन्द्र मुनि जी के पास इतना है कि पच्चीस पुस्तकें तैयार हो सकती है। समय मिलने पर मुनि श्री की हार्दिक कामना है कि उन्हे सम्पादित कर प्रकाश मे लाया जाय।

हमारी योजना है कि 'राजस्थान केसरी व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' महत्वपूर्ण ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित किया जाय। उसका लेखन राजेन्द्र मुनि जी शास्त्री, काव्यतीर्थ ने प्रारम्भ कर दिया है। शीघ्र ही उसे भी हम पाठको के हाथो मे प्रदान करेंगे।

ग्रन्थालय ने इन तीन चार वर्षो मे महत्वपूर्ण साहित्य विविध विधाओ मे प्रकाशित किया है जिसका सर्वत्र हृदय से स्वागत हुआ है, प्रस्तुत पुस्तक भी उसी तरह अपनाई जायेगी, ऐसी आशा है।

मैं उन सभी अर्थ-सहयोगियो का हृदय से आभार मानता हूँ, जिनका मधुर सहयोग हमे प्राप्त हुआ है। भविष्य में भी प्राप्त होगा जिससे कि हम नित्य-नया साहित्य प्रकाश मे ला सकें।

शान्तिलाल जैन
मंत्री, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय
पदराडा (उदयपुर)

प्रस्तावना

भारतवर्ष एक जूनौ अर मिनखपणै री नमूनौ देश है। जूनै तरवर ज्यूं सुली लागै, उण ही भात जूनी परम्परा, संस्कृति अर धर्म रै क्षेत्र मे भी कठैई-कठैई खोखलापणौ लागै। उणरै इलाज सारू प्राचीन सरूप रा अनूप जाणकार कोई विरला ही लाधै, जके प्रेम-नेम सूं जीवण रौ पवित्र पंथ साधै। ससार मे मानखै सूं मूंघी अर मोवणी कोई चीज नी है, पण सगला मिनखा मे मिनखपणै री तमीज भी नी है। किणी रै वास्तै औ संसार चोखौ है, किणी रै वास्ते अनोखौ अर किणी रै वास्तै धोखौ है। उपयोग री दृष्टि सूं ही हर चीज न्यारा-न्यारा रूपा मे रैवै, ज्यूं पंछी परभात मे अर उल्लू रात मे ही राजी रैवै। आजकल असली री पूछ तो कम नै नकली रौ बाजार तेज है। इण वास्तै मांनखै रै मन मे तो नफरत अर ऊपर सूं हेज है।

इण जमानै मे मिनखा री घाटौ नही, पण मिनखपणै री घाटौ जरूर है। आज स्थांन री दूरी तो घटी, पण दिल एक दूजां सूं घणा दूर है। आज कपडा तो ऊजला दीखै पण मन मे घणी कालस है। तिकड़मबाजी मे लोग ताखडा है, पण ईश्वर रै नाम मे आलस है। आज बिजली रौ प्रकाश तो दीपै पण आत्म-प्रकाश मंद है। भ्रष्टाचार री तौ बाढ है, पण ईमानदारी री धारा बन्द है। रोग मेटण री लाखा दवाइया तौ आवै, पण विना दवाई नीद भी नही आवै। सात पीढिया रै सुख खातर माया जोडी जै, पण एक पीढी मे ई फूट पडै अर माथा फोडीजै। इन्सान विज्ञान रै साथे अज्ञान तौ जरूर पायौ, पण ज्ञान अर भगवांन नी पायौ। छत्रपति शिवाजी सिंहगढ जीतियौ जदे कयौ, कै गढ तो आयौ पण सिंह गयौ। सो वे ईज बाता आजकल बरतीजै है। मिनख उत्तम चीजा सू तौ अलगा रैवै अर रुली चीजा मायै रीझै है। इलम

वधै ज्यूं इन्सानियत घटती जावै है, नै हिवडा मे प्रीत री डोर दिनो-दिन कटती जावै है। कारण कि आजकल री शिक्षा तो फगत नौकरी वास्तै भिक्षा है। उणमे विचार तो कम नै प्रचार जादा है। इणी वास्तै घणकरा पढिया लिखिया छोकरा आजकल दादा है।

क्यूंकि ऐज्यूकेशन री मतलव हुयग्यो है 'ऐ ज्यूं कै सुन', तौ पछै पढण अर समभ़ण री तौ कैवै ई कुण। खोटै सचै मे ढालियोडा सिक्का ई खोटा है, सो आजकल नांम मोटा नै दरसण खोटा है। आज सचाई री सूरज इण भात ढल् गयौ है कि विद्यार्थी, गुरु, वापजी अर दादै री अर्थ ही वदल गयौ है। कारण कै इण शिक्षा री उलटी चाल है। मांयने तो भेडिया नै ऊपर भेड़री खाल है। जके पराये इतिहास में सुजाण है, वे ईज घर रै इतिहास मे अजांण है। जको विषय कोर्स मे नही है, वो तो मानो महत्त्वपूर्ण ही नही है। सो पाठ्यक्रम ही जद ज्ञान री कसौटी हुवै, उण समाज री हालत घणी खोटी हुवै। औ ईज कारण है कि आज विश्वविद्यालय तो वणग्या है विषविद्यालय और न्यायालय मे हुयग्यी है न्याय लय।

शिक्षा मे जद तांई सुन्दर सस्कारो री भूंघो मेल् नी हुवै, तौ मांनखै मे अंतस मे आणंद री केल् नी हुवै। आजकल पढाई ऊपर तो जोर है, पण वा पढाई समाज रै पतंग सूं कटियोडी डोर है। कारण कै, शिक्षा नीति री जको वर्तमान कायदो है, उण सूं ईज कुछ खास लोगो रौ फायदो है। अवार जो प्रजातंत्र है, उणनै समभ़ण री औ ईज मंत्र है; सव करै ज्यूं करौ यानी समाजवाद री वातां करौ नै आपोआप रा घर भरौ। आज ईमानदारी तो टकै सेर विकै है नै चोरटो रै घरे मालपूआ सिकै है। आंधा पीसै नै कुत्ता खावै है, वै'ती गंगा मे हाथ नी धोवै जके पछतावै है। कुए भाग पड़ी है अर जनता पीवण नै अड़थड़ी है। करौ पाप तो खाओ धाप, करो धरम तो फूटै करम, ऐ औखांणा इण जमांनै में सुणीजै है, अर सदाचारी मिनखां रा तो सुण-सुण नै काल्जा सीजै है।

सायत आज सूं पैली समाज मे इतरौ भ्रष्टाचार कदेई नी हौ जित री आज है। औ जनता री राज है। इणमे न तो ईश्वर री डर है अर न मिनखां री लाज है। गरीव चिड़िया रै वास्तै चालाक मिनख बाज है और समाज तो एक तरै सूं विना खेवटियै री जहाज है। औ इज

कारण है कै आज भला-भला मिनख चोर डाकू नी करता जैड़ा कुकर्म करै है अर पछै जाल् रै जंजाल् में खुद फंस नै विनां मौत मरै है। आज राज-काज में तो भ्रष्टाचार, व्यौपार में कालोवजार, धर्म मे धुंधूकार अर शिक्षा मे वंटाढार है। ऐडी अवेढी, अवखी अर अटपटी वेला में धार्मिक शिक्षा अर संस्कारो री घणी जरूरत है, पण उणसूं ई पैली औ समझणी है कै धरम री कांई असली सूरत है। जकी चीजां जितरी जूनी हुवै उतरी ही जोजरी भी हुवै, इण वास्ते वांरा रूप वदल् जावै नै तेज ढल् जावै। जद वांरो आकार वदल्णो पड़ै अर नांम भी वदलणो पडै। आज 'धर्म' नै जिण अर्थ मे समझियो जावै है, उण तरै तो धर्म निरपेक्ष राज मे धर्म री वात करतां ई लाज आवै है।

राजस्थान केशरी पंडित प्रवर श्री पुष्कर मुनिजी महाराज कृत तथा देवेन्द्रमुनि जी द्वारा संपादित पुस्तक 'संस्कृति रा सुर' नै 'जद आद सूं अंत ताई पढी, तो म्हारै अंतस में आणंद री लै'र वढ़ी। इणरै अलग-अलग अध्यायो मे जो अनुभव रा मोती पोया है, जो समाज सुधार रा सपना संजोया है; वे घणा ही उजला, अनूठा अर उत्तम है। वांरी जितरी प्रशंसा की जाय उतरी ही कम है। मांनवता रो जको ऊजलो आदर्श सुरंगै ढंग अर रूपालै रंग में दरसायो है, वो म्हारै घणो मनभायो अर दाय आयो है। इण जमांनै मे पुष्कर मुनि जी, श्री देवेन्द्र मुनि जी, आचार्य विनोवा भावे जैड़ा अनूठा विद्वानों रा सारपूर्ण विचार हर समझदार व्यक्ति अर विद्यार्थी नै पढ़ाया या समझाया जाणा चाहीजै, ताकि हियै मे सचाई अर सनेह री जोत जाग सकै, नै अज्ञान रूपी अंधकार दूर भाग सकै, दरअसल माया रा त्यागी नै ईश्वर रा अनुरागी समझदार अर ईमांनदार विद्वांनों रा व्याख्यांनो तथा वांरी पुस्तकां रै प्रेम रस सूं ही मन वस मे हो सकै अर जीवण-वेल री काकड़ी पकै।

मुनि महाराज 'जीवण रै परभात' मे ही टावरो में चोखा संस्कारों री जो मरम री वात कही है, वा विलकुल सही है। अभिमन्यु, शिवाजी, नेपोलियन, अर वनराज चावड़ा जैडा डावडा इणीज वास्तै सपूत अर महापुरुष वणिया, कै माँ रै दूध रै साथे ही वांनै उत्तम संस्कार मिलिया। एक गुण रै पासै दूजो गुण आवै जदे ही मिनख पणो शोभा पावै। धन री तीन गति—दान, भोग अर नाश है। पै'लै में हुलास, दूजै मे प्यास अर तीजै में सत्यानाश है। दर

असल जो ऊजली दांन है, वो न तो विज्ञापन है अर न एहसांन है। ईमानदारी री लोय मे जीवण रौ उजियास अर मिठियास है। इणरी कमी सूं ही संसार पाखंड अर अफंड मे अलूझै अर पछै अमूंझै हैं। ईमांनदारी रौ आचरण ही धरम रौ मूलमंत्र है, इण सारभरी बात नै मुनि महाराज इतिहास रा अनूठा उदाहरण देय घणै रूपालै अर रलियावणै ढग सूं बताई है, समझाई है अर हियै लगाई ह। क्षमा वीरो रौ तो आभूषण, पण कायरो रौ दूषण है। जीवणरूपी वीणा रा तार है—विचार, वाणी अर व्यवहार यो तीनो रै हेल-मेल सूं ही प्रेम री सुरीली, रसीली अर नशीली झणकार पैदा हो सकै। पण इण जमानै मे तो पायल री झणकार, मै'ल-मालियो री कतार अर मोटरकार री भरमार तौ जरूर मिलै, पण प्रेम री झणकार तौ कम ही सुणीजै। जीवण मे सुख अर संतोष सूं जीवणौ है, तौ ईमानदारी रौ इमरत जरूर पीवणौ है। संसार मे जो कुछ सार है, वो परोपकार है, मरजादा री कार है, अर प्रेम री झणकार है, बाकी सव बेकार है। औ ईज इण पुस्तक रौ सार है, सिणगार है अर आधार है।

—**(डॉ०) शक्तिदान कविया**
एम० ए०, पी-एच० डी०
प्राध्यापक—हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय

सम्पादकीय

मानखै रै अनुभव नै वाणी रै द्वारा ही उजागर कियो जा सकै है। वाणी मिनख री अमोल संपत्ति है, अनूठी निधि है। जे मिनख रै पासे वाणी री घणमूंघी निधि नी हुंती, तो वो आपरै ऊजला विचारो नै पसु-पंखेरुवांरी भात प्रगट नही कर सकतौ, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, कला अर विज्ञान री निर्माण नी कर सकतौ। वैदिक ऋषियो इणी कारण वांणी नै 'सरस्वती' कही। **'वाचा सरस्वती,' 'जिह्वाग्रे सरस्वती'** कैवता वांणी री महत्त्व दरसायी।

ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि री प्राप्ति वाणी सूं ही होवै है। मांमूंली मिनख री वांणी वचन है, पण ऊँचै साधक री वाणी प्रवचन है। प्रवचन मे चिन्तन री गहराई, विचारो री निरमलता, भावो रौ फूटरापो नै प्रेरणा री पवित्रता हुवै, जकी श्रद्धालु श्रोतावां रै हिवड़ै मे अरस-परस होय बिजली ज्यूं गति री हिलोर पैदा करै। इणीज वास्तै कयौ है **'वक्ता दशसहस्त्रेषु'** यानी हजारो मिनखो मे कोई एकाधौ ही साचो वक्ता मिल सकै।

'संस्कृति रा सुर' पुस्तक पढती वेला सयाणा पाठको नै लागैला कै ऐ प्रवचन घणा सरला, सहज नै गंभीर है। पूज्य गुरुदेव श्री री विचारधारा नदी री रूपाली तरंग ज्यूं बहती जावै, उणमे न बणावटीपणौ है अर न ही छिछलापणौ। यो प्रवचनो मे जीवण रै अनेक पक्षो अर घणी मोकली समस्यावो ऊपर गैहरो चिन्तन है जको पूज्यगुरुदेवश्री रै अनुपम अर अनूठी अनुभव नै घणजाणी विद्या रौ निरखणी नमूनौ है।

गुरुदेवश्री रै प्रवचना री एक विराट संग्रह म्हारै कनै है, पण भांत-भात रा घणा लेखण काम-काज री वजै सूं म्हे उण पूरै काम रौ सपादन नी कर सकियौ हूँ। ऐ प्रवचन घणा बरसा पैली म्है संपादित किया हा, पण उण वखत छप नी सकिया। पण म्हे समझूं हूं कै आज भी वा प्रवचनो मे ताजगी है अर वो ईज नयापणौ है। आज भी ऐ प्रवचन पाठको रै हिवडै नै हरणवाला, मन नै मोवण वाला है। यो प्रवचनो रै संपादन रै समै सनेह-मूर्ति मुनि श्री नेमिचन्द्र जी रौ घणी अपणायत भरियौ सहयोग मिलियौ हो, जिणानै म्हे भूल नी सकूं ला। साथे ही, रमेशमुनि शास्त्री, राजेन्द्रमुनि शास्त्री री भी प्रबल प्रेरणा रही कै यो प्रवचनो नै घणा बैगा छपाया जावै।

इण पुस्तक रा रूपान्तरकार श्री नृसिहजीराजपुरोहित और भूमिका लेखक डॉ० शक्तिदानजी कविया रौ म्हे हृदय सूं आभारी हूँ कै वारी लगन अर मेहनत सूं आ पुस्तक राजस्थानी भाषा रा प्रेमियो रै हाथो मे घणै कोड सूं पूग रही है।

म्हनै आशा ही नही, पूरौ विश्वास है कै आ पुस्तक जणै-जणै रै मन मे ज्ञान री नवी किरण दरसावैला, प्रेम रौ पवित्र पंथ बतावैला।

—देवेन्द्र मुनि

हरखचन्द कोठारी हॉल
सरदार पुरा, जोधपुर
दिनाक १६-१२-७२

अनुक्रमणिका

—●●—

संस्कृति रा सुर

१

जीवण री झणकार

मांनखा रो जीवण एक समस्या है। इण समस्या रो ऊकेल काढवा सारू जुग जुगां सूं धरमधारियां, तीरथंकरां, पैगंबरां, रिसि-मुनियां अर संतां पूरी मैंणत कीनी है। संसार री दूजी जीवा जूंण करतां मांनखा रो जीवण अनोखौ है। मांनखा रा जीवण नै कोई साधारण आदमी पोता रा बुद्धि बल सूं नी नाप सकै। उणरा जीवण नै समझण वास्तै उण री समस्यावा रो ताग काढण वास्तै सजाग भेजा री जरूरत है। जठा लग जीवण मे सजागता नी वापरै, उठा लग मानखा की वाचा नी खुलै, अर वाचा खुल्या वगर जीवण रा इण भेद नै समझणौ घणौ कठण है, घणौ अवखौ है। जीवण मे इण सजागता रो रणकार पैदा करवा सारू खांमची हाथां री जरूरत है, मीठा सुर री जरूरत है अर जरूरत है मन रै मस्ती री। ए सगली वातां प्रेम सूं पैदा होय सकै। पण ओ प्रेम स्वारथ रो नी ह्वैणौ चाहिजै। स्वारथ रो प्रेम जीवण रा रणकार नै गूंगौ बणाय नांखै, उणरी आवाज नै बेसुरी कर काढै अर मोहरा पड़दा सूं रणकार नै मोलौ पाड़नै उणनै खतम इज कर नांखै।

मांनखा रो जीवण एक रूपाली वीणा रै उनमांन है। वीणा वजावण सारू, उण मे सूं मीठी रणकार पैदा करण सारू हाथ, गला अर मन तीनूं रै मेल री जरूरत है। इण रै सागै वीणा रा तीनूं तार पण मिलियौडा ह्वैणा चाहिजै। तार मिलियां विनां रणकार फूटणौ कठण है। तारां नै सफा ढीला छोड्यां सूं अथवा तण का तूताड़ किया सूं पण काम नी बण सकै। वांनै तो अनुमान सूं सम राखणा पड़ै। इणीज भांत मानखा रै जीवण रूपी वीणा रा पण

तीन तार है—मन, वचन अर सरीर। जे इण त्रितारी नै अनुमान सूं सम नी राखी ह्वै तो जीवण रूपी वीणा मे सूं प्रेम रो सुरीलौ झणकार नी जनम सकै। अर जे इण तीनूं तारा नै तण का तूं ताड करनै कस दिया जावै, मोह रूपी गूंद सू चेप दिया जावै, माया रूपी गाठ सूं बाध दिया जावै तो जीवण वीणा मे सूं रणकारौ ई नी फूट सकै। इणीज भात जे जीवण रूपी वीणारा तीनूं तार ढीला ढप्प छोड दिया जावै, आलस अर ऐंदी पणा नै गलै बांध लियौ जावै तो पण इण मे सूं मीठौ सुर नो निकल सकै। कैवण रो मतलब ओ के जीवण में सूं प्रेम रो सुरीलौ झणकार काढवा वास्तै मन वचन अर सरीर रा तीनूं तार ठीक हालत मे ह्वैणा चाहिजै। जे इण तीनूं तारां मे सूं कोई एक तार पण खराब ह्वै, ढीलौ ह्वै के गडबड मे ह्वै तो जीवण वीणा में सूं मधुरौ सुर काढवा रो सपनौ अधूरौ इज रैवै। सुपनौ तो पूरौ उण हालत मे इज ह्वै के जिण वखत ए तीनूं तार ठीक ढंग सूं जोडियौडा ह्वै। ठीक ढंग सूं रो अरथ ओ के जीवण वीणा बजावती वखत जाणी-कार गवैया रा हाथ, मन अर गलौ इसा केवटियौडा ह्वैणा चाहिजै के प्राण जीवण सागै एकमेक होय नै प्रेमरी मस्ती मे झूमण लाग जावै। मोह, माया अर ममता मे गूंथिज्यौडौ रैवण सू इण काम मे भांजगड़ पडै। इण गडबड नै मिटावण वास्तै सगला तारा मे तटस्थता ह्वैणी चाहिजै। तटस्थता रो मतलब ओ के जिण जिण वखत प्राण जीवण सागै आसक्ति अर मोह-माया मे जकडवा रा संयोग आवै, उण वखत तीनूं तारा नै थोडी ढील दे देवणी चाहिजै। इण सूं एकता वणी रैवै। एकता रो सरूप बिगडै जरै इज तटस्थता री जरूरत रैवै। पण इण कोसिस मे तटस्थता रो सरूप नी बिगड़णौ चाहिजै। मिनख जमियौडा ताना रे मूल मे घाव देय नै, प्रांण जीवण सागै एकात्म भावरी उपेक्षा करनै नकामी उदासीनता धारण करनै तटस्थता रो सेवन करण लागै जं रै इज तटस्थता रो सरूप विगडै।

कैवण रो अरथ ओ के जीवण वीणा बजावती वखत खामची वीणा वादक नै ताना अर तटस्थता रूपी ताकडी रे दोनूं छैला रो पूरौ ध्यान राखणौ चाहिजै। पूरौ ध्यान राखिया सूं इज जीवण वीणा मे सूं सरस अर मधुर प्रेम रूपी झणकार निकल सकै। नी तर का तो प्रेम रो झणकार मोह रा सुर मे बदल जाएला अर का पछै वैर, विरोध अर उदासीनता रो सरूप धारण कर लेवैला। ए दोनूं सरूप जीवण

वीणा री खरावियां रा निसाण है, तांना अर तटस्थता रे तूटण रा सैनांण है ।

आप नदी तो जरूर देखी व्हैला । जठा लग नदी दोनूं खडकां रे वीच मे पोतारी मरियादा मे वैवै, उठा लग दुनिया नै निरमल जल पावै अर अलेखूं जीवा जूंण री पालणा करै । पण जिण वखत आ पोतारी मरियादा नै तोड नाखै, ढावा तोड नै वैवण लाग जावै, उण वखत कांई हालत व्है ? नतीजौ ओईज निकलै के जिकौ निरमल जल जीवा जूंण री पालणा करै, मांनखा नै जीवण अरपै, वो इज जल जीवा जूंण रे वास्तै काल रो सरूप वण जावै । नदी मे पूर आवण सूं नदी रो नेह रस समतोल नी रैवै । वैर, विरोध, क्लेस अर माया-मोह रे वसीभूत होय नै पोतारी समतुला गुमाय नाखै । आसक्ति रो रूप धारण करै, इण कारण दुनिया री जीवा जूंण वास्तै आफत रूप वण जावै । इणीज भांत जे कोई भूल्यौ वटाऊड़ौ नदीरी ढावा देखनै उठै पोतारी तिरस वुझावण नै आवै पण आगै नदी सफा सूखी मिलै तो उण वटाउडा री किसीक हालत व्है ? इसी नदी पण जीवा जूंण रे कांई काम री ?

भावारथ ओ है के जिण भांत नदी दो ढावां रे वीच मे एक सरीखी वैवती थकी अलेखूं प्राणिया री जीवणदाता वण सकै, उणीज भात मांनखा री जीवण गंगा पण ताना अर तटस्थता रा दोनूं किनारा विचालै वैवती रैवै तो कई जीवा रे वास्तै जीवणदाता बण सकै । नी तर मोह अर ममता वधवा सूं जीवण गंगा रो निरमल जल पण आफत रो कारण बण जावै । अथवा वो जल सफा सूख इज जावै । इण भात तिरस बुझावण नै आयौड़ा वटाऊडा रै वास्तै वा दुख रो कारण वणै । ए दोनूं हालता नदी रै ज्यूं जीवण रूपी नदी रै वास्तै पण खरावारी है । आ वात एक दाखला सूं साफ व्है जाएला ।

मांनलो के एक मा है । उण रै एकाएक वेटौ है, जो उणनै घणौ इज व्हालौ है । उणरै हिवडा मे वेटा रै वास्तै अथाग प्रेम है । पण उण प्रेम रो समतोल किण भांत राखणौ चाहिजै ओ उण नै भांन नी है । उण हालत मे उण रौ प्रेम नकांमौ है । कारण कै वा प्रेम अर मोह रा भेद नै नी समझै । आलस, ऍदीपणा अर तटस्थता रो फरक नी जाणै । वा पोतारा वेटा नै घणा लाड कोड सूं उछैरै । छोकरौ नाजोगा काम करै पण वा उणनै नी वरजै । वो चोरिया करै, बजार मे जायनै पैसा उडावै तामपण उण नै कांई नी कैवै । इसी हालत मे उणरो ओ प्रेम, प्रेम नी पण

मोह है, वात्सल्य नी पण आसक्ति है, नेह नी पण ममत्व है। इणीज भांत उणरो बेटी पढण नै नी जावै, मोटौ हुया पछै ई कोई काम नीं करै, वजर ठोठ अर जडभरत बण्यौडौ रोवतौ फिरै, तो ई वा सहन करै। उण हालत नै इसा प्रेम नै किण नाम सूं ओळखणौ चाहिजै ? उठी कानी एक दूजी मा है। वा पोता रा बेटा नै बात-बात माथै लड़ै, बिना कसूर कूटती रैवै। उण हालत मे पण आइज बात कैवणी चाहिजै कै उठै पण प्रेम नी, रूखापणौ है, नेह नी पण निरदयता है, तटस्थता नी पण उदासीनता है अर चेतनता नी पण जडता है। मा रै प्रेम रा ए दोनूं दाखला साफ बतावै कै इणा मे साचौ प्रेम नी है। कारण कै प्रेम मे तो लगाव अर तटस्थता दोन्यूं रो मेल ह्वैणौ चाहिजै। इण रै वास्तै मन मे पूरी सजागता ह्वैणी चाहिजै। पण ऊपरला दाखला मे तो सजागता रो वास्तौई नी है। इणीज वास्तै एक विचारक कह्यौ है—

प्रेम पथ पावक री ज्वाला

प्रेम रो मारग आग री डाडी अर खाडारी धार है। उण ऊपर चालता जरा पण चूक पडी कै पछै थाग लागणौ कठण है। पग चूका पताल है। इण वास्तै प्रेम पंथ रा वटाऊडा नै पूरौ सावचेत रैवणौ पडै। कारण कै मामूली सी भूल पण जोखम मे नाखती जेज नी करै।

प्रेम रो थरमामीटर ओ है कै जठै लगाव अर तटस्थता रा सीमाडा लाघ्या नी जावै, तापमान पोतारी मरियादा मे चालै-उणरौ नाम इज प्रेम है। पण इण मे जे जरा पण घट-वध होवै तो उणनै मोह, माया, ममता, आसक्ति कै वैर समझणौ चाहिजै। भलैई वो प्रेम रो वानौ धारण करनै आवै।

साजा सरीर मे ९८·६ गरमी ह्वैणी चाहिजै। पण जे इण सूं वधारै गरमी ह्वै तो उण मिनख नै मादौ समझणौ चाहिजै। इणीज भात कम गरमी ह्वैणी पण मादगी री निसाणी है। नॉरमल गरमी वाळौ सरीर साजौ गिणी जै। थरमामीटर सू उणरी तुरत परीक्षा ह्वै सकै।

मानखा रा हिवडा मे प्रेम री गरमी पण नॉरमल ह्वैणी चाहिजै। आइज साजा पणा री निसाणी है। हिवड़ा मे आ गरमी एकदम ठंडी पड़ जावै तो गडवड गिणीजै अर जे एक दम तेज ह्वै जावै तो पण खतरौ खरौ है।

अवै आप आ वात आछी तिरियां समझग्या ह्वौला कै प्रेम किण नै कैवै अर वो किण हालत मे निरमल रैवै।

महात्मा बुद्ध रै एक चेला रो नांम भिक्खु उपगुप्त हो। वो एकर मथुरा नगरी रै कनै कोई वन मे एक झाडका रै नीचै सूतौ हो। रात रो वखत हो अर चन्द्रमा रो निरमल चानणौ च्यारूं मेर फैल्योडौ हो। उण वखत मथुरा नगरी मै सूं एक नाचण वाली नरतकी उठै होय नै निकली। चालतां चालतां अजाण मे उणरै पग री ठोकर उपगुप्त रै लागगी जिण सूं वो जागग्यौ। वो वैठौ होय नै पछतापौ करती नरतकी नै कैवण लागौ—वैन! ठोकर अजाण मे लागी है, इण वास्तै थूं मन मे कोई विचार मत करजै। म्हूं थनै माफ करूं हूं। नरतकी हाक-वाक होय नै देखण लागी। चन्द्रमा रा निरमल चांनणा मे उपगुप्त रो मुखडौ खिल्योडा कमल री गलाई लागतौ हो। वो राजा रो कुंवर हो पण भिक्खु वण्या पछैई उणरै सरीर रो फटरापौ कम नी हुयौ हो। ब्रह्मचर्य रो अनोखौ तेज उणरै चेरा माथै पल पलाट करै हो। प्रेम रो ओज उणरै सरीर मे सूं फटनै उणरी ओप नै वधारतौ हो। नरतकी ओ सगलौ खाकौ देखनै छकडीगम ह्वैगी। वा उपगुप्त न पूछण लागी—थारो ओ फूल जिसौ कोमल सरीर काई धूड मे रगदोलण वास्तै वण्योडौ है? थारी आ भरपूर जवानी काई दुखरी भट्टी मे वाल नै वरवाद करण वास्तै वणी है? उभा होय नै म्हारै सागै चालौ। म्हूं थासूं प्रेम करूंला। कोमल सेज माथै पोढाय नै म्हूं थारै जोवन नै सारथक वणावूंला। उपगुप्त कह्यौ—वैन, हाल वो वखत नी आयौ है। वो वखत आवैला जरै म्हू थनै प्रेम रे परगास रा दरसण करावूंला।

नरतकी मन मे दुखी होय नै उठा सूं रवानै ह्वैगी। वा जीवण री आकी-वाकी गलियां मे चालती थकी उपगुप्त नै भूलगी।

घणा वरस वीत्या पछै एकर भिक्खु उपगुप्त पाछा मथुरा कांनी आया। एक दिन संझ्यारा भिक्षा सूं निवडनें वन कानी जावता हा कै मारग मे कोई लुगाई रै कुरलावण री आवाज वारे कांना मे पडी। जाय नै देख्यौ तो एक लुगाई खाडा मे पड़ी वेभान हालत मे कुरलावै ही। वा पोता रै जीवण री छैली घडिया गिणती ही। उण नै चेतौ अणाय नै भिक्खु कह्यौ—"वैन! म्हूं थारा दुख मे मदद देवण नै आयग्यौ हूं।" थू अवै कोई वातरी चिंता मत करजै। नरतकी आंख्या

उधाड नै बोली—'ओ कुण परमात्मा रो लाल है, जिणै म्हानै मौत सूं बचाई ?'' उपगुप्त नरतकी नै ओलख लीवी । आ वाइज नरतकी ही कै जिणै एक दिन उणनै प्रेमरी मौज माणवा वास्तै नूंतौ दीनौ हो । आज उणरी हालत कितरी खराब ह्वैगी ही । उणरै शरीर मे सूं भयंकर रोगा रे कारण सूगली बदबू आवै ही । आखौ सरीर सडग्यौ हो । इण वास्तै उणरै रूप रा लोभी भमरा अवै उणरै नेड़ाई नी आवता हा । उणरा प्रेमिया इज राजा नै कैयनै उणनै नगर रै वारै खाडा मे फेंकाय दीनी ही । उपगुप्त विचार कीनौ आ लुगाई पेली मोह अर वासना नै इज प्रेम समझै ही । आज उणनै साचा प्रेम करावण रो मौको आयो है । वो मीठी वाणी सूं बोल्यौ "वैन. म्हूं वोइज आदमी हूं, जिकण थनै कह्यौ हो कै मौकौ आया साचा प्रेमरा दरसण करावूंला अर भीड पडया थारै कनै पूग जावूंला । संजोग सूं वो मौकौ आज आयग्यौ अर म्हे म्हारौ वचन निभाय लियौ । अवै थूं म्हारै साथै चाल, म्हूं थारी चाकरी करूंला । थारी दुख दूर करण री कोसिस करूंला ।''

नरतकी भिक्खु रै चरणा मे ढिगली ह्वैगी अर बुरी तरै सूं रोवण लागी । भिक्खु उणनै अपणाय लीवी अर उणरी पीडा नै मेट नांखी । वा फगत वासना अर मोह नै प्रेम समझै ही, पण उणनै सगला ससार री आत्मावा मे प्रेमरा दरसण हुवा । उणै पवित्र आचरण सूं पोतारी जीवण यात्रा पूरी कीवी जिणसूं उणरौ जीवण सुख साति सूं बीत्यौ ।

ओ है वासना अर प्रेम रो भेद । जितरौ फरक एक साधारण काचरा टुकडा अर हीरा मे है, उतरौ इज फरक प्रेम अर वासना जन्य मोह मे है । उपन्यास सम्राट प्रेमचंद रा सब्दा मे प्रेम अर वासना मे उतरौ इज फरक है जितरौ कै काच अर सोना मे है । नांम अर सरूप री निजर सूं आज इण दौनू बिचै भलाई कोई फरक मत गिणीजौ, पण दर असल मे फरक घणौ है । गाय रो दूध अर आकडा रो दूध नाम अर रूप सूं एक इज है । पण दोनू रै गुणा मे रात दिन रो फरक है । इण दोनूं भात रा दूध जितरौ इज फरक प्रेम अर मोह मे है । गायरो दूध इमरत री पाण ताकतवर है अर आकडा रो दूध परतख जहर है । इणीज भात प्रेम आत्मारी ताकत नै वधारण वालौ है अर मोह आत्मा रो नास करण वालौ है । लक्ष्मण अर रावण दोनूं रो लगाव महासती सीताजी कानी हो । पण लक्ष्मण रो लगाव गाय रा दूध जिसौ निरमल हो अर रावण रो लगाव

आकडा रा दूध री गलाई जहरीली हो । इण कारण इज एक जणा नै जीवण मिलयौ अर दूजौड़ा नै मौत मिली ।

जिण प्रेम मे वासना री पुट ह्वै, जठै प्रेम रा भेख मे वासना अर मोह छिप्यौडा ह्वै, उठै समझणौ चाहिजै कै प्रेम है इज कोयनी । उठै प्रेम रा साग मे वासना रो सडवौ है ।

आजरा नौजवान फिल्मी प्रेम नै साचौ प्रेम समझ लेवै । अर कई ना जोगा छोरा छोरियां तो लैला-मजनूं रो नाटक करनै पोतानै मोह रा कुंड में होम नाखै । जिकण रो नतीजौ दुखदाई अर खोटो निकलै ।

सुद्ध प्रेम मे आतमा री झलक रैवै । उण मैं सरीर रै रूप रो मोह नी टिकै । एक कवि प्रेम रो असली रूप वतावतां कह्यौ है—

> **विनगुन जोवन रूप धन, विन स्वारथ हित जानि,**
> **शुद्ध कामना ते रहित, प्रेम सकल रस खानि ।**

प्रेम आगला रै सरीर रा गुण-अवगुणा कांनी निजर नी राखै । रूप, जोवन, धन, स्वारथ कै दूजी कामनावा सागै पण प्रेम रो लेवणौ-देवणौ ई नी है । प्रेम इण सगला सूं घणौ ऊपर है । इण सगला रो सम्वन्ध सरीर सागै है, पण प्रेम रो सवंध आतमा सागै है । प्रेम अंदरूणी चीज है अर मोह वारली । प्रेम अमर है अर मोह पलक भरियौ । प्रेम वारला फ़टरापा री परवा कदैई नी करै पण मोह रो तो आधार इज वारलौ फ़टरापौ हे । वारला फ़टरापा रै लोभ विना मोह कायमइ ज नी रैय सकै । प्रेम दिन दिन वधै पण मोह दिन दिन घटै । प्रेम तरक्की रा मारग माथै आगै वधै अर मोह दिन दिन लारै सिरकै । प्रेम ऊँचौ देखाणियौ है तो मोह नीचे धूंणियौ है । प्रेम एक महासागर है तो मोह नैनौ खावौचियौ है । प्रेम सुद्ध नेहालू अर अमर ह्वै पण मोह वासना भरियौ, स्वारथी अर कम टिकाऊ ह्वै । प्रेम मन नै मोटौ वणावै अर मोह उण नै नैनौ करै । प्रेम वियोग मे वधै अर मोह संजोग मे । प्रेम जीवण नै परमारथी वणावै अर मोह जीवण नै स्वारथी वणावै । प्रेम मे न्याय-अन्याय रो विवेक ह्वै पण मोह मे विवेक झाखौ पड जावै । प्रेम मे देवण री विरती काम करै अर मोह मे लेवणरी । मोह मे वदलै री भावना जोर री ह्वै पण प्रेम मे इसी कोई भावना नी ह्वै । मोह मे डूबोड़ा प्राणी माथै जे थोडी घणौई दुख आवै तो वो दूजा माथै ढोलण री कोसिस करैला । पण प्रेमी मिनख

दूजा रा दुखनैं ई पोता रा पिंड माथै लेवण री इच्छा राखैला। वो पोतारा दुखनै तो हंसतौ हंसतौ सहन करैला इज। मोह हमेसा पोतारै हक रो ध्यान राखै पण प्रेम उणरै फरज कानी लगन राखै। मोह मे फस्यौड़ौ मिनख पोतारै सुखरो ध्यान राखै पण प्रेमी मिनख सगला रै सुख मे पोता रो सुख मानै। प्रेम मानखा नै अपणात पणौ सिखावै पण मोह स्वारथ अर खुसामद सिखावै। यूं ऊपर सूं प्रेम अर मोह एक सरीखा इज दीसै अर दोनूं रो वैवार पण एक सरीखौ इज दीसै पण दोनूं मे रात दिन रो फरक है। एक चूंनौ है अर दूजौ मांखण है। चूंनौ खायां सरीर रो नास व्है अर माखण खाया सरीर री ताकत वधै। इण भात मोह अर प्रेम रो भेद जाण्या पछै मानखौ ठोकर नी खाय सकै। एक तत्वज्ञानी कह्यौ है के प्रेम करण रो मतलब ओ के पोतारा आणंद नें दूजा रा आणद मे मिलाय सकै।

मोह रा पडदा मे ढकी जियौडी आत्मा नै प्रेम रो परगास किण विध मिल सकै ? आत्मा जिण वखत मोह रा महासागर मे चूंबाकियां लगावण लागै, उण वखत विवेक री जोत बुझ जावै। पछै हिवडारूपी धरती माथै प्रेम रूपी परगास फैलण रो सवाल इज पैदानी व्है। सीताजी रै मन में सोनेरी मिरग रो मोह पैदा व्हियौ इण कारण विवेक रो परागास झाखौ पडग्यौ। अर ओ इज सीताजी रै हरण रो कारण बण्यौ। रावण रै वास्तै सीताजी रो मोह दुखदाई निवाड्यौ। कैवण रो अरथ ओ के मिनख जिण वखत मोहरा फंदा मे फस जावै, उण वखत उणनै दुख इज दुख पडै। आ बात भगवान महावीर री वाणी मे इण भात उतरी है—

'इणमेव नावबुज्झति, जे जणा मोहपाउगा'

मोह सूं घेरिजियोडौ मिनख विवेक नै भूल जावै। वो दुख नै नूंतौ देवै। दुनिया मे सगला दुखा रो कारण मोह है। प्रेम तो सुखा रो भंडार है। प्रेमी रै वास्तै तो दुखपण सुख मे पलटीज जावै। इण बाबत भगवान महावीर रा वचन ध्यान राखै जिसा है—

दुक्ख हय जस्स न होई मोहो'

जिणरौ मोह टूट जावै, उणरै दुखरो पण नास व्है जावै। जिको मिनख सगला ससार सागै एकात्मता रो भाव राखै अर पोतारी आत्मा नै प्रेम रा सागर मे सिनान करावै, उणरै दुख नैडौई नी फरुकै। उपनिसदां मे आइज बात इण भात कही है—

तत्र को मोह क शोकः एकत्वमनुपश्यतः

म्हूं आपनैं आ कैवतो हो के आप सुद्ध प्रेम नै ओलखौ अर जीवण मे खुसीरी जोत नै जगावौ । पेला रा सुखनैं पोतारो सुख मानै इणरो नांम इज प्रेम नी है । प्रेमी मिनख तो पेलारा दुखनैंई पोतारो दुख समझै अर उण दुख रूपी काटा नै काढवारी कोसिस करै । कैवण रो मतलव ओ के सगला संसार रा दुख नैं मेटण खातर पोतारा सुख नै लुटाय नाखै इणरी अरथ इज साचौ आणंद है । अर जठै आणंद है उठै इज प्रेम है । मांनखा जूंण एक फूल री गलाई है जिकण रै च्यारूं मेर कांटा उग्यौडा है । इण काटा री सेज माथै सूतौडा फूल जिसौइज ओ प्रेम रूपी फूल है । जिकौ इण रै खनै जावै उणनै सुगंध सूं लपटा लोल कर नाखै । पेला रा दुख मे डूबौडा मन नै खुसी सूं पागराय देवै । इण चामडा री जीभ सूं प्रेम रा वखांण होवणा कठण है । इणनै परखण वास्तै तो हिवडारी आंख्यां चाहिजै । हिवडा सूं इज इणरौ असली स्वाद चाख्यौ जाय सकै । इण वास्तै इज नारद भक्ति सूत्र मे कह्यौ है—

'अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूप मूकास्वादनवत्'

प्रेम रा वखाण जवान सूं हरगिज नी ह्वै सकै । ओ तो गूंगा वालौ गुड है । इण रौ तो फगत अनुभव इज कियौ जाय सकै । मूंडा सूं वोल नै इणरा वखान नी करीजै ।

पाणी में तिरतौ मिनख पाणी रै माथै ह्वै जितरै इज वोल सकै,पांणी में चूंमा की मार्‌या पछै तो वो काई वोल सकैला । इणीज भात प्रेम रूपी सरोवर मे डूब्या पछै मिनख रो वोलणौ वंद ह्वै जावै । उणरै मूंडा सूं एक आखरई नी फूट सकै । हा वो, प्रेम रो आचरण जरूर कर सकै ।"

अंग्रेजी नाटककार सेक्सपियर एक ठौड कह्यौ है के "जो पोतारा प्रेम नै सगला नै ई वतावती फिरै, उणरौ प्रेम हलकी जात रो ह्विया करै ।

जठै सुद्ध प्रेम ह्वै उठै इज आणंद ह्वै । अर उण ठौड इज पोतानै होम नाखण री विरती पणह्वै ।

कर्मयोगी कृष्ण सातिदूत वणनै जिण वखत दुर्योधन री सभा मे पूगा और साति री मागणी कीवी तो दुर्योधन सफा नटग्यौ । इण री कारण ओ के उणरा मन मे प्रेम नी हो । मोह सूं ढक्यौड़ा

हिरदा मे स्वारथ रो वास ह्विया करै। उण ठौड जीवण मे झणकार पैदा नी ह्वै। दुर्योधन री मीठी-मीठी बाता सूं इज भगवान कृष्ण समझग्या के अठै प्रेम रो लवलेस ई नी है। उणा विचार कियौ के म्हनै तो विदुरजी रै घरै जावणौ चाहिजै जठै सादगी प्रेम अर सुद्धता री त्रिवेणी बैवै है। कृष्ण झट उठनै विदुरजी रै घरां पूगा। उण वखत विदुरजी कठैई बारै गयौडा हा अर वारी पत्नि घरै ही। उणै कृष्ण री चोखी खातरी कीवी। बैठण नै आसण दीनौ। उण वखत आश्रम मे दूजी तो कोई खावण-पीवण री चीज नी ही पण थोडा घणा केला जरूर हा। वे केला काचा है अथवा पाका, चोखा है के खराव, आदेखण वास्तै विदुर पत्नि केला लेय नै चाखण लागी। इण कांम मे वा इतरी मगन ह्वैगी के उणनै ओ भान ई नी रियौ के वा पांवणा नै केला देवै है के वारी छाल देवै है। वा तो प्रेम मगन होय नै मीठा-मीठा केला गपागप खावती गई अर छाल छाल कृष्ण नै पकडावती गई। विदुर पत्नि री आ तल्लीनता अर प्रेमपरायणता देखनै कृष्ण एक आखर ई नी बोल्या, चूंकारौ ई नी कियौ, चुपचाप छाल चाबता रह्या अर पेट धरौ करनै संतोक मान लियौ।

इसौ ह्वै अण बोलिया प्रेम रो आणद। जिण वखत मिनख प्रेम रा आणंद नै भोगवै, उण वखत वो जचै जिसी आफत नै ई भूल सकै। कारण के प्रेम तो एक दुख दाईखुसी रो नाम है। इण सगला संसार रो गाडौ प्रेम माथै इज चालै है।

सबरी रा हिवडा मे प्रेम रो अखूट सागर हिलौला लेवतो हो। आश्रम रा पवित्र वातावरण मे वा पल-पुस नै मोटी हुई ही। इण वास्तै प्राणी मात्र सागै प्रेम रो बरताव राखण रा संस्कार उणनै बचपण सूं इज मिल्या हा। सबरी मोटी हुई तो उणरै विवाह री तैयारी होवण लागी। सबरी रे बाप जांनिया री खुराक वास्तै वाडौ भरनै जिनावर भेला किया। सबरी इण बात नै किया सहन करती। रातरी बखत जिनावरा रो तावाड़णौ सुणनै उणरी ऊंघ उडगी। वा एक दम वाडै पूगी अर फलसौ खोल दियौ। हल फलियौडा जिनावर जीव लैयनै नाठा। सबरी रो मन पण सासारिक माया मोह सूं ऊबग्यौ हो। वा तो संसार रा कल्याण मे पोतारो कल्याण मानती ही सो वा पोतै ई घर वार छोड़नै रातो रात वन कान रवानै ह्वैगी। दिनूंगै घरवाला उठनै

देख्यौ तो सवरी री पथारी खाली पड़ी ही अर वाड़ौ ऊघाड़ौ पड्यौ हो। उणानै घणी ई चिंता हुई पण काई करता। व्हैणारी वात व्है चुकी ही।

वन मे जायनै सवरी कुदरत रा वंधण हीण वातावरण मे रैवण लागी। उठै कुदरत रो खुल्लौ आंगणौ, रिसि मुनिया रा रुपाला आश्रम, आश्रमा मे रमता फूटरा फररा टावर अर किलोला करता पंखरू देखनै उणै पण आश्रमा मे जावण रो अर सतसंग करण रो विचार कियौ। पण आप जांणौ के कसौटी लगाया विना असली नकली रो काई ठा पड़ै। सवरी आश्रमा मे आवण जावण लागी तो उणरै प्रेम रे ई कसौटी लागण लागी। रिसिमुनि उणनै भील कन्या अर नीच कौमरी समझ नै दुत्कारण लाग्या। पण साचा प्रेम मे जात-पात, धर्म-संप्रदाय के देस-रेस री कीमत नी आकीजै। प्रेम जात-पात कै देसकाल रा वंधणां सूं आघौ व्हिया करै। सवरी रा प्रेम रै पाकौ रंग लाग्यौडो हो। इण कारण वा अपमान अर दुख सूं कंटालीजण वाली नी ही। उणै प्रेम नै कायम वणावण वास्तै दूजौ रस्तौ काढियौ। जिण मारग होय नै रिसि-मुनि स्नान करणनै के फल-फूल लावण नै जावता उणै वो मारग वेगौ भागफाटी रा उठनै बुहारणौ सरु कियौ। इण काम मे उणनै इतरौ आणंद आवतौ के वा अठी उठी ध्यान दिया विना वा मौज सूं सफाई करती रैवती। मारग बुहार्यौ झाड्यौ देखनै रिसिमुनि समझण लाग्या कै ओ म्हारी तपस्या रो फल है। श्रृंगी नाम रा एक पुराणा रिसि पण उठै रैवता। उणा विचार कियौ के रोज ओ मारग कुंण साफ करै है! इणरौ पतौ लगावणौ चाहिजै। दूजौडै दिन श्रृंगी रिसि भाग फाट्यां पे'ली उठीनै गया तो उणा सवरी नै मारग बुहारता देखी। उणां सगला मुनिया नै बुलायनै कह्यौ—"देखौ, आ देवकन्या नित रोज आपणौ मारग बुहारनै जावै। आपानै इणरौ उपकार मानणौ चाहिजै।" पण श्रृंगी रिसि सिवा वा कन्या कोई नै चोखी नी लागी। कारण के वा काली कडोपी भीलकन्या ही। वे सगलाई उल्टा उण माथै नाराज व्हिया। वे कैवण लाग्या—"आ छोकरी कितरी नालायक है, इणै आंपणौ मारग अपवित्र कर नाख्यौ।"

श्रृंगी रिसि आश्रम रै बारै झूंपडी बाधनै रैवण लाग्या अर सबरी नै वेटी समान मान नै उण नै ज्ञान देवण लाग्या। धीरे धीरे उण वयो वृद्ध रिसि रो अंतकाल आवै पूगौ। सबरी रोवती थकी कैवण लागी—

'हे महामुनि, अबै म्हारै जिसा नांकूच नै आत्म ज्ञान कुंण देवैला ? रिसि उणनै धीरज बंधावता बोल्या—"बेटी अबै थनै कोई ज्ञान री जरूरत इज नी है। थारै हिरदा मे प्रेम रो दरियौ हिलोला मारै है। उण रै आगै सगलौ ज्ञान थोथौ है। भगवान राम, लक्ष्मण अर सीता सागै वनवास रा दिना मे फिरता-फिरता थारी झूंपडी ताई आवैला, थारा पावणा वणैला, उण दिन थारौ प्रेम पूरण ह्वै जावैला।" आ बात सुणता इज सबरी रै हरख रो कोई पार नी रह्यौ। उणरौ मन रूपी मोरियौ थेई-थेई करनै नाचण लाग्यौ। भगवान राम इण मारग कद आवैला ? आ सोच-सोच नै उणनै एकूको दिन एक एक वरस रै समान लागण लाग्यौ। राम जिसा लाठा पावणा री खातरी वास्तै सबरी कन्नै काई हो ? मोटर, बंगला के छप्पन भोग तो उठै हा इज कोइ नी। उणरै कन्नै तो वारी खातरी वास्तै फगत एक इज चीज ही अर वा ही उण जंगला रा रसीला बोरा। नित रोज काम-काज सूं के उणनै नवरास मिलती तो वा वन मे जायनै बोर वीण नै लावती। रिसिमुनि पण भगवान राम रै पधारण री बाट जोवता हा। पण भगवान चतुराई सूं के आडंबर सूं रिझिझै जिसा नीहा वे तौ हिरदारी साची भावना नै ओलखणा वाला हा। आडंबर अर चालाकी सू वांनै नफरत ही। वे उठी नै पधार्‌या तो सीधा सबरी री झूंपडी मे पूगा। रिसि मुनि वारी वाट जोवता इज रैयग्या। वारी सगली तैयारी फाऊ गई। मुनिया नै मन मे घणौ खोटो लागौ पण राम किणरी परवा करै ? भगवान राम रा पधारण सूं सबरी नै इतरी खुसी हुई कै जाणै आंधा नै आख्या मिलगी। राम नै देखनै वा प्रेमगैली ह्वैगी। रामजी रो आव आदर किण भात करणौ—वा गतागम मे पडगी। उणनै कोई ध्यांन इज नी बाधतौ हो। छेवट सावचेत होयनै सबरी राम अर लक्ष्मण वास्तै एक गूदडी बिछाई। प्रेम सूं गूंथ्यौडी इण गूदडी मे जे आणद हो वो मखमल री गादी मे पण नी हो। राम री मेहमानदारी वास्तै जिकौ बोर उणै भेला कर राख्या हा, वे बोर सबरी लेयनै आई। उणै मन मे कियौ के इण बोरां मे सूं जे कोई खाटा हुवा तो ? उणै बोर चाख चाख नै रांम अर लक्ष्मण नै देवणा माड्या। खाटा बोर तो पोतै खाय जावती अर मीठा बोर राम नै देवती जाती। सबरी रा निस्वारथ भाव सूं दीनौडा ऐंठवाडा बोर पण राम नै मीठा गट्ट लाग्या। इसा मीठा तो महला मे राध्यौडा पकवांन पण नी लागै। सीता अर लक्ष्मण पण

रांम रै देखा देखी उण इमरती बोरा रो आणंद लीनौ । आबात सोलूं आना सही है जठै साचौ प्रेम ह्वै, उठै सूका पाका टुकडा रै आगै पकवांन ई फीका लागै ।

घणी ताल वाट जोयनै छेवट काया होयनै रिसि-मुनि वड़बड़ाट करता अर रामरी निंदा करता उठा सूं रवानै ह्विया । वे स्नांन करण खातर सरोवर माथै पूगा तो आगै काई देखै कै सरोवर रो पांणी रातौ चोल लोही री पांण ह्वै ग्यौ है । पांणी मे अलेखूं जीवडा कल-वलता हा । ओ तमासौ देखनै उणां मे सूं एक रिसि वोल्यौ—"आंपानै शृंगी रिसि अर सवरी जिसी पवित्र आत्मा री निंदा रो पाप लागौ है । इण कारण इज ओ पांणी खराब हुयौ है ।" सगला मुनि मन मे घणौ पछतावौ करता रांम कन्नै पाछा आया । राम वोल्या—सबरी रो जीवण पवित्र है । इणरौ पग जे सरोवर रा पांणी रै अड़ै तो पांणी पाछौ ठीक ह्वै सकै । सगला मुनियां माफी मांगी अर तलावरो पांणी ठीक करण री अरज कीवी । सबरी नरमाई सूं वोली—"मुनिराजा, म्हूं तो एक खोटा नसीव वाली मांमूली अवला हूं । आप लोगांरी किरपा सूं इज म्हैं वे आखर सीख्या है । रांम रै चरणां रो प्रेम पण म्हनै आपरी मेहरवांनी सूं इज मिलयौ है । म्हूं आपरा तलाव नै म्हारा पग सूं अपवित्र कियां करूं ।" सवरी रा ए वचन सुणनै रिसिया उणरी घणी आजीजी कीवी । छेवट रांमजी रा हुकम सूं सबरी तलाव मे पग दीनौ अर पग देतां पाणी पे'ली हो जिसौ रो जिसौ ह्वै ग्यौ । सबरी रै प्रेमरी पूरै पूरी कसौटी ह्वै गी ।

सुद्ध प्रेम री खासियत आहीज है के वो पारका दोसां कांनी तो निजर ई नी नाखै, पण पारका गुणां नै लेवण री कोसिस जरूर करै । पतंगिया जिसौ नैनौ जीव प्रेम रै खातर पोतारा पंड नै आग में होम नाखै । दीवा कांनी जावती वखत ओ मन में बिल्कुल विचार नी करै के उठै गया सूं म्हारौ नास ह्वै जाएला । इणरौ कारण ओ के साचौ प्रेम ह्वै उठै अवगुण निजर नी आवै ।

भमरौ इतरौ ताकतवांन ह्वै के वो लकडा नैई चीर नाखै । पण वोइज भमरौ प्रेम मे इतरौ गेलौ ह्वै जावै के कमल री कंवली पाखडियां में ववित्र्यौड़ो रैवै । वो पांखडियां नै चीर नै नी वारै निकलै अरनी कमल नै छोड़ नै कठैई जावै । इण कारण एक कवि कह्यौ है—

बंधनानि खलु संति बहूनि प्रेमरज्जुकृत बंधनमन्यत् ।
दारुभेद निपुणोऽपि षडङ्घ्रि निष्क्रियो भवति पंकजकोषे ।।

दुनिया मे भात-भात रा बंधण है, पण इण सगला में प्रेम रूपी डोर रो बंधण सबसूं टणकौ है, अनोखौ है। इण बंधण सूं इज लकड़ी नें चीरण वालौ भमरौ फूलरी कवली पाखड़िया मे बंधीज जावै।

जिण ठौड प्रेम रो असर ह्वै उण जगै मिनख पोतारो तन, मन अर हिवडौ सगला निछावर कर नाखै।

卐

२

ढाई आखर प्रेमरा

कालै जिकण बात री चरचा आप रै सामनै की वी ही, वा थोड़ीक अधूरी रैयगी। वा इज बात आज पूरी करणी है। एक आथूंणै विद्वान कह्यौ है के 'प्रेम गुलाब रा फूल जिसौ है।' इण सबद रो आकार छोटौ ह्वै तां थकांई ओ कोई मांमूली सबद नी है। कबीरजी जिंदगी नै ओलखणिया हा। बानै दुनिया रो ऊंडौ अनुभव हो। उणा दुनिया मे निराई किताबी कीडा देख्या। वांरी आछी तिरियां परीक्षा लीवी पण प्रेम रो कठैई लवलेस ई नी मिल्यौ। वे किताबी भणियौड़ा घणाई हा, वातां री झालां भरता हा, बुद्धिमांन पण हा छतां पण वारा हिरदा घणा ओछा हा। इण कारण कबीरजी नै कैवणौ पड्यौ के—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा पंडित हुआ न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पडित होय॥

थोड़ौ ऊंडौ उतर नै देख्यौ जावै तो आज रे पंडिताऊ जुग रा वैज्ञानिका रो पण ओइज हाल है। उणा विज्ञांन री अनेकां पोथ्यां पढ लीवी है। वां रो बुद्धिबल इतरौ वधग्यौ है के वे चन्द्रलोक माथै जावण री तैयारी मे है। वे मुओडा मिनख नै पाछौ सरजीवण करण री कोसिस मे है। वे रोग, मूडापा अर मौत नै पण जीतणी चावै। इतरौ ह्वै तां छतांई वारा हिरदा अर मन ओछा ह्वैता जावै है। ए मिनख पणानै अर प्रेम नै कायम राखण वास्तै कोई ध्यान नी देवै। इण वास्तै कबीरजी इसा पंडितां अर वैज्ञानिकां रै वास्तै बात बरोबर कही है। कारण के आज वां रौ लगाव प्रेम करतां भौतिक चीजां अर अस्त्र सस्त्रा कानी घणौ है। इण कारण इज एंसाइक्लोपिडिया ब्रिटेनिका रा

पेलडा संस्करण मे जठै प्रेम सवद वास्तै छ' पेज भरियौड़ा है अर अणु वास्तै फगत तीन लकीरा लिखियौडी है, उठै उणरा नवा संस्करण में अणु वास्तै पेज रा पेज भरियौडा है अर प्रेम सब्द रो कठै ई नामई नी है। पंचशील माथै इतरो जोर देवतां थकाई विस्व-प्रेम रा तो दरसण इज दुर्लभ है । इण ग्रथ मे मायडभोम रो प्रेम (Love of mother land) मैंणत सूं प्रेम (Love of labour, जनता सूं प्रेम (Love of people) अर विज्ञान मूं प्रेम (Love of Science) सगलाई सगलाई लिख्यौडा है पण मानखा सूं प्रेम के दुनिया सूं प्रेम रो कोई नाम निसाण ई नी है। इण कारण इज मोटा मोटा ग्रथ मौजूद ह्वै तां थकांई अस्त्र सस्त्र वधारवा री होड सी लागौड़ी है। इण आधूंणा विद्वाना रे दिमाग मे विस्व प्रेम री वात इज नी वैठे पण भारत मे तो जुगा जुंगा पे'ली अठारा रिसि मुनिया विस्वमैत्री, विस्ववंधुत्व, अद्वैत अर 'आत्मवत् सर्व भूतेपु' रा उपदेस दीना है। विनोबाजी रो जय जगत रो सूत्र भारत वासिया साचा रूप सूं हिरदा मे विठाय लीनौ है। भारतवासी सगला संसार सागै भाई पौ राखणौ चावै। भारत ज्ञांन विज्ञान रा मामला मे इतरौ आगै ह्वै ता छताई अणुअस्त्रा रै सख्त खिलाफ है। पण इण रै सागै इतरौ तो कैवणौ इज पड़ैला के विज्ञान रा संपर्क सूं प्रेम में सिरधा कम ह्वै ती जावै है, यूं प्रेम रै गीतारा धूकार उडै, प्रेमरी प्रसंसा करता जीभ नी थाकै, प्रेम माथै भासणा री झडी लागै पण सगली मामलौ लोक दिखाऊ। दिन दिन भारतवासियां री सिरधा फौज माथै, मिलटरी माथै, अस्त्र-सस्त्रा माथै वधती जावै है। इणरै सागै सागै पैसा कानी पण प्रेम वधारा माथै है। यु आपां भारतवासी जुद्ध के अस्त्रसस्त्रा रा नुकसाण सूं अजाण कोयनी। लारला दो महाजुद्धा री वरवादी निजरां आगै हुई है। रामायण अर महाभारत रो इतिहास पण सगलाई जाणा हां। मध्य जुग रा राजावारा आपसी टंटा रो फल पण आंपां भौगवै चुका हा। जातिवाद प्रांतवाद के भासावाद रै नाम सूं आज पण आप णै मुल्क मे झगडा ह्वै अर आपणा सगा हाथा सूं प्रेम रो खून ह्वै। इतरौ ह्वै तां छता पण आ अचूंभा री वात है के आपांणी आख्या क्यू नी उघडती।

पाडोस रा मुल्कां मे जिकौ सांग-विलौणा नित रोज होवै, आपा सूं छाना कोयनी। पाकिस्तान अमेरिका सूं अस्त्र सस्त्र मोल लीना है। अर देस री पूरी आवक ६०-७० प्रतिसत भाग इण काम खातर खरच

कीनौ है अर करै है। उणरौ नतीजौ पण आंपणी निजरां आगै है। आ सस्त्रां री ताकत पाकिस्तांन र वास्तै भस्मासुर बणगी है। उठै फौज रै हाथ में राजकरण जावण रो कारण ओहीज है। ए बाता देख्यां पछै तो आंप नै चेतौ व्हैणौ चाहिजै। कांई सस्त्रां री ताकत रै पांण दुनिया मे सांति कायम व्है सकै? हरगिज नी। संसार मे फगत प्रेम इज एक इसी चीज है कै जिकण रै आधार माथै सांति कायम रैय सकै। बाकी सगली वातां थोथी है। इतरी सगली वातां जाण्या पछैई भारतवासी फौजा, लस्करा कै हथियारां कांनी निजर राखै तो पछै बात खत्म व्हैगी। पछै प्रेम री सक्ति माथै भरोसौ कठै रह्यौ। इण रो नतीजौ ओ निकल्यौ है कै आज भारत मे मिनखपणा रो, नैतिकता रो देवालौ निकलग्यौ है। महात्माजी भारत नै आजादी हथियारा री ताकत सूं दिराई कै प्रेम री सगती सूं? प्रेम रै पाण आयौडी सुतंतरता आपा भोगवां हां, पण प्रेम माथै आंपा नै सिरधा कोयनी। गाधीजी तो आंपानै साफ साफ बताय नै गया के बंदूक री गोली करता प्रेम री गोली ऊंडौ घाव करै। जिण वखत नोआखली मे सांप्रदायिकता री आग लागौडी ही, हिन्दू-मुसलमान एक दूजानै देख्या नी छोडता हा, उण वखत भारतीय संस्कृति री आ जागती जोत राष्ट्रपिता महात्मा गाधी उठै पूगा, प्रेम रो हथियार पकड्या वे साफ निडर हा। वे मुसलमांना रा घरा मे बेधड़क पूग जावता। एक एक स्वयं सेवका वानै थोड़ा घणा हथियार सागै राखण री सलाह दीवी तो वे घणा नाराज व्हिया। वे बोल्या— "थां मे हालताई अक्कल नी आई। था नै प्रेम करता बंदूक अर पिस्तौल माथै वधारै भरोसौ है।" उणां सागै संरक्षक राखणा इज बंद कर दिया। कई वखत उणां पर हमलौ हुवै जिसा संजोग पण आया, छतापण उणां तो सस्त्र पाटी रै हाथ नी लगायौ सो नीज लगायौ।

कांई आप प्रेम रा अमर देवता भगवान महावीर री कथा नी सांभली? अनारज देस मे कई भयंकर कबाड़ा होवता, जिकौ उंणा प्रेम रै पांण बंध कराया। वां नै प्रेम री अमोघ सगती माथै पूरौ भरौसौ हो। उणां नै जे सस्त्रां री सगती माथै विस्वास व्हैतौ तो वे राज पाट क्यूं छोड़ता। वे फौज पलटण अर सस्त्रां री मदद सूं मानखा नै जीत सकै हा। पण वो मारग नी पकड़ नै उणा तो प्रेम रा प्रताप सूं इज मांनखा रा हिवड़ा नै जीत्यौ।

दुनिया मे जे सस्त्र सगती अर लस्करी ताकत इज सब सूं प्रबल ह्वैती तो कलिंग रा जुद्ध पछै असोक रो मन क्यूं पलटतो। असोक रो ओ मन पालटो भारतवासिया नै ढोल बजाय नैं बतावैं के लस्करी ताकत करता प्रेम री ताकत ऊंची है। प्रेमरी सगती इज असोक नै सांति रो मारग बतायो।

पण आज रो भारत तो इण सगला महापुरुसां रा वचना नै भूलनैं लस्करी ताकत कानी ध्यान देवण लागो है। आज भारतवासिया रै जबांन माथै तो प्रेम रा सबद है पण वारा हिरदा में सस्त्र पाटी रो संगीत गूंजै है। दिन दिन आ धारणा बधती जावै है के अस्त्र सस्त्रा री ताकत सूं इज दुस्मण बस मे ह्वै सकै है। पण आ एक मोटी भूल है। इण भांत री सिरधा धोखी देवण वाली है।

इण मुद्दा माथै ओ पडुत्तर दियो जाय सकै कै सस्त्रां री ताकत रा नतीजा तो म्हे निजर देख्या है अर प्रेम रै प्रताप री तो फगत वाता इज सुणी है। सापरत देखण रो मौको नी आयो। इण वास्तै आपणी सिरधा प्रेम करता राज सगती अर सस्त्र सगती पर बधारै है। पण ससार जो थरपत नियम है, उणा मे फरक नी पडै। सिक्षा सूं, निर्दयता सूं के वैर विरोध सूं सांति कायम राखणी असंभव है। आ कोसिस तो लोही रा दाग मिटावण नै लोही सू धोवण रै समान है। हिरदा नैं धोवणो ह्वै तो वो फगत प्रेम रा जल सूं इज धोवीज सकै। प्रेम सूं दुस्मण पण काबू मे ह्वै सकै अर प्रेम सूं इज एक पापी पण पुण्यात्मा बण सकें। ससार रो जे सुधार करणो है तो उणरो मूल मंत्र प्रेम इज है। हिंसा नै मिटावण वाली पण प्रेम है। प्रेम इज कुदरत री निर्दयता नै मिटाय सकै अर प्रेम इज विस्व प्रेम री अमर वेल रोप सकै। पापी नै पुण्यात्मा, दुर्जन नै सज्जन तथा निर्दयो नै दयालु बणावण वालो प्रेम इज है। प्रेम रा परगास सू इज कठोरता रो अधारो मिट सकै। राजसत्ता अर सस्त्र सगती तो पौतै अंधकार जिसा है। वे वापड़ा कांई परगास कर सकै? थे जो पोतारा हिरदा मे परगास चावता ह्वो तो मन, वचन अर काया री त्रितारी नै जोड नै आतम वीणा नै बजावण री कोसिस करो तो जरूर उणमे सूं प्रेम रो सुरीलो झणकार निकलैला। उण रै बल सूं थे जिनावरपणा नै ई काबू मे कर सको।

आज संसार रा कई लोकतंत्री मुल्का मे राजसगती रै बदलै प्रेम

सगती कांम मे आयरी है । उठै कैदियां अर गुनैगारा सागै प्रेम रो वरताव कियौ जावै अर प्रेम सूं इज वानै सुधारवा री कोंसिस की जावै । इण काम मे उण मुल्कां नै खासी सफलता पण मिली है । जेल मे कैदियां रो मनोवैज्ञांनिक अध्ययन कियौ जावै अर वानै प्रेम सूं सुधारवा वास्तै नवा नवा प्रयोग पण किया जावै । इसा प्रयोगां रा नतीजा देखनै राजसगती अर सस्त्र सगती पर सूं दिन दिन विस्वास उठतौ जावै है ।

सिक्षा सूं सरीर माथै असर भलाई पड़ौ पण आत्मा माथै नी पड सकै । अर जठा ताई इण सरीर री मालिक आत्मा माथै कोई असर नी पड़ै, इन्द्रिया रा मालिक मन माथै कोई असर नी पडै उठातां ई सिक्षा रै जोर सूं शरीर माथै कोई असर पड़णौ पण कठण है ।

महापापी परदेसी राजा नै केसी श्रमण प्रेम रा वल सूं इज ठिकाणै लाया हा अर उण री जीवणरूपी नदी प्रेम रो जल वैवतौ कीनौ हो । प्रेम रा पुजारी ईसामसीह प्रेम रा जोर सूं इज मोटा मोटा पापियां नै साचै मारग घाल सक्या हा । यूं घणौ आघौ जावण री जरूरत ई कोयनी । आपणी निजरा सामै गुजरात रा मूक सेवक श्री रविसकर महाराज मौजूद है । जिणा मोटा-मोटा वारोटिया नै प्रेम सूं समझाय नै घरै विठाय दिया ।

जेकस जितरौ धनवान हो उतरौ इज अत्याचारी पण हो, जिण वखत वो टेक्स (कर) वसूल करण नै निकलतौ लोगडा उण रा डर सूं जंगल में जाय नै छिप जावता । उण री मालकी मे कई पीठा चालता जठै अत्याचार री आंधी चालती । एकर उणरै नगर मे फिरता फिरता महात्मा ईसा पूगग्या । नगर रा दुखियां वांरै आवण री खबर सुणी तो पाणी रा रेला री गलाई उठै जावण लाग्या । तमासौ देखण खातर जेकस पण एक झाडका माथै चढनै उणांरी री वाट जोवण लाग्यौ । पण ईसू उठीनै आया तो उणनै वडा प्रेम सू बतलायौ । उणां कह्यौ—"जेकस ! झाडका माथै सूं नीचौ उतर, म्हूं थारौ मेहमांन वणूंला ।" मिनखा ओ खाकौ देख्यौ तो वे ईसू री निंदाकरण लाग्या । पण ईसू नै निंदा-स्तुति री काई परवा । वे तो सीधा जेकस रै घरा पूगा । उणरी पावण सार मंजूर कीवी अर पछै वड़ा प्रेम सूं उणरै सागै बातचीत कीवी । ईसू रा नेह सूं जेकस रो हिरदौ पिघलग्यौ । जिकण जेकस पर कोई असर

नी पडती हो वो पांणी सूं ई पतली ह्वैगी । वो ईसू रा प्रेम जल मे तरबंब होयनै बोल्यौ—"प्रभू ! म्हूं म्हारौ आधौ धन गरीवां री सेवा खातर खरच करणौ चावूं । अर जिण लोगा खना सूं म्हे अनीति सूं धन लियौ है, वानै म्हूं चौगणौ पाछौ देवणौ चावूं ।"

ओ एक इसौ दाखलौ है जिकौ वतावै कै किण भात एक पापी रो हिरदौ बदल नै उण नै पुण्यात्मा वणायौ जाय सकै । प्रेम पोते ज आत्म-श्रद्धालु ह्विया करै । उण नै मिनखपणा पर पूरौ भरोसौ ह्वै । सन् १९५१ रो किस्सौ है के तैलगाना जिला मे जमीदारा रो अत्याचार वधियौडौ हो । उठारी प्रजा वा रै खिलाफ ह्वैगी ही. अर करीव च्यार हजार जमीदारा रो खूंन कर नाख्यौ हो । खूंनिया रै लारै साम्यवादियां रो हाथ हो । कारण के साम्यवाद रो दारमदार इज खूंन खच्चर अर तोफान माथै ह्वै । पण इतरी खरावी ह्विया पछैई कोई नतीजौ नी निकल्यौ । ओ सगली रासौ देखनै संत विनोबा रो मन घणौ दुखी ह्वियौ । उणा विचार कियौ के काई इण खूंनिया रा मन प्रेम सूं बदलिया नी जाय सकै । उण दिना वां रौ मुकाम उण इलाका मे इज पाचमपोली नाम री जगै माथै हो । उठै उणा जमीदारां री एक सभा मे वानै पोतारो कर्त्तव्य वतायौ । प्रजा सागै प्रेम रो वरताव राखण री सलाह दीवी । साम्यवादिया सागै पण बातचीत कीवी अर इण सगली कोसिस सूं उंण घडी उंण सभा मे इज बैठ्यौ एक जमीदार रामचंद्र रेड्डी उभौ ह्वियौ अर उंणै पोतारी जमीन मंसूं अस्सी वीघा जमीन गरीव अर बिना जमीन रा करसा नै देवण रो ऐलान कीनौ । इण भात भूदान री पवित्र गंगा परगट ह्वी । वा गंगा आज वधती वधती भूदान सूं ग्रामदान तांई पूगगी है । उठारा जमीदारां किसानां सागै जुल्म करणा वंद कर दिया अर इण भात उठै प्रेम अर भाईचारा री गगा वैवण लागी ।

आज रा जमाना मे आप नगरा मे पधारौ तो उठै आपनै लक्ष्मी रो रेलौ वैवता मिलैला, मोटा मोटा मेल मालिया, बगला नै मोटरा पण मोकली मिलैला पण प्रेम रो रणकार स्यात इज कठैई सुणण नै मिलै । मोटा घरा मे पावणसार करता मिठाई खावण नै भलाई मिल जावी पण उण मे प्रेम रो मिठास मिलणौ कठण है । इण वास्तै इज विनोवाजी एकर कह्यौ हो के नगरा मे घर तो कन्नै कन्नै ह्वै, पण उणा मे वास करणिया मिनखा रा मन घणा आघा आघा ह्वै । इण भांत

नेहरी धारा दिन-दिन सूखती दीसै। इसा घरां मे पांवणा बणनै जावण वालां नै संतोष कीकर मिल सकै? मोटा मोटा महला मे प्रेमालु मिनख भाग भरोसै इज कठैई मिलै। इण सूं उल्टी गांमडा में झूंपडा खासा आघा आघा ह्वै पण उण मे रैवण वाला मिनखां रा मन घणा नेडा नेडा ह्वै। इण झूपडां मे पांवणौ वणनै जावण वाला मिनख नै खावण नै भलांई सूखौ सोगरौ इज मिलौ, पण वो सोगरौ उण करसां रे नेह सूं चोपडियौड़ी ह्वै। उठै नी तो रेडियौ रो झणकार मिलैला अरनी सिनेमा रो रणकार, पण उठै प्रेम री वीणा जरूर वाजती संभली जैला। आवण वालौ पांवणो झूंपड़ां मे सूं नेह मधुरता लेयनै जावैला। उणरा मन मे निरासा नी, पण संतोष ह्वैला।

प्रेम मे खास वात आहीज है के वो दूजा नै काई लिया—दिया विनाई पोता रो वणाय लेवै। दाखला रै रूप मे आप कोई मिनख नै नोकर राखौ। उणनै पगार भरपूर देवौ, दूजी सगवडां पण मोकली देवौ। पण उणनै प्रेम नी देवौ अर उणनै माडाणी कांम में रगड़ौ तो आप उणनै पोतारौ नी वणाय सको। पण जे उणरै सागै आप प्रेम रो वरताव राखौ उणरौ मन जीत लेवौ तो पछै आप उण सूं जचै जिको ई कांम लेय सकौ हो। वो हंसतौ हंसतौ अवखा सूं अवखौ काम कर ले वैला।

प्रेम री जोत मंदी पड़वा सूं अर स्वारथ री आग वधवा सूं इज आज रा समाज मे मालिकां अर मजूरा मे, वाप अर वेटा मे, सासू अर बहूमे, देरांणी अर जेठांणी मे महाभारत मच्यौडौ है। मालिकां री इच्छा आ रैवै के मजूरा सूं घणा सूं घणौ काम लियौ जावै। मजूरा रे वच्चा मे मादगी ह्वै तो उणरी मालिका नै काई चिता। मजूरा री तवियत साजी नी ह्वै के वे आधा भूखा ह्वै तो इणरी मालिका नै कांई परवा? मालिक तो आहीज समझै के मजूर अर मसीन दोनूं एक समांन इज है। मसीन नै काम मे लेवता वखत कई वाता रो ध्यान राखणौ पडै। उणमे तेल पूरणौ पड़ै, उणनै ठंडी करणी पड़ै अर उणनै साफपण राखणी पडै। पण मजूर के नौकर सूं काम लेवती वखत उणरौ कोई ध्यान नी राख्यौ जावै। नी उणरै सागै प्रेम रो बरताव कियौ जावै नी उण सूं कोई अपणात पणौ राख्यौ जावै अरनी उण रै सुख-दुख रो ध्यांन पण राख्यौ जावै। इण कारणा सूं इज धीरै धीरै आगै जाय नै कई टंटा पैदा ह्वै।

आज समाज रूपी मसीन खल वीकल ह्वँगी है। उणरा कल पुरजा बिखर गया है। जठै देखौ उठै वैर, विरोध अर झगडा निजर आवै। इणरी मूल कारण ओ है के समाजरूप मशीन मे नेहरूपी 'ल्युब्रिकेटिंग' तेल री कमी है।

आज संसार रा मुल्कां बिचै कई तरै रा टंटा चलै, भांत-भांत री मनमुटाव री वाता चलै। अर कठेई कठेई तो इसी वाता बडौ जोर पकड लेवै। इसा मौका पर नेह सिंचन री जरूरत है। संसार रा सगला झगडा नै निवटाबण वास्तै प्रेम एक रामबाण दवा है।

आज तो सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनैतिक कोई पण जगै देखलौ स्वार्थ री हवा चाल री है। स्वार्थ अर घृणा मिल नै प्रेम रो आसण खोसलियौ है। कोई पण काम मे मिनख पोतारौ स्वार्थ, आव-आदर, सुख-साधन अर धन रो लाभ रो पे'ली देखैला। प्रेम नै कर्त्तव्य समझनै काम करण वाला मिनख आज विरला इज लाधैला।

आज रा मिनख नै जे कठैई वाहावाही मिलती ह्वैला उठै वो तुरत आगीवाण बण जावैला। पण जठै इण चीज री कमी देखैला उठै नैडौ ई नी फरुकै।

कोई पण सासू जे पोतारी बहू नै प्रेम दिया विना थोथा दबाण मे राखणी चावै तो बात बैठै कोयनी। हा जे सासू कन्नै पैसा ह्विया अर बहू नै लेवण रो स्वार्थ ह्वियौ तो चाकरी करौ तो भलाई। नी तो पाटियौ बैठणौ कठण है। पण जिकी सासू पोतारी बहू नै पेटरी बेटी रे समान राखै तो बहू पण उणनै सगी मा रै उनमान इज गिणैला। सासू अर बहू रै बिचालै जठै इसा मा-बेटी रा मधुर संबंध ह्वैला, उठै टंटा-झगडा रो सवाल ई पैदा नी ह्वै सकै। पण इण वास्तै उभय पक्षा नै स्वार्थ त्याग करण री जरूरत है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त इण बातनै इण भात समझाई है—

> दोनो ओर प्रेम पलता है।
> सखि पतग भी जलता है, हा ! दीपक भी जलता है।
> सीस हिलाकर दीपक कहता, बधु वृथा ही तू क्यो दहता ?
> पर पतग पड़ कर ही रहता
> कितनी विह्वलता है
> दोनो ओर प्रेम पलता है।

महात्मा टॉलस्टाय रा सब्दा मे—यूं कैवणौ के थें सारी उमर एक मिनख सूं इज प्रेम करौला—इणरौ अर्थ ओके थे चावौ जितरी देर ताई मैंणवत्ती सुलगती रैवैला ।

जे आपनें संसार मे प्रतिष्ठा लेवणी है, लोगा सूं प्रेम लेवणौ है तो थारा हिरदा मे प्रेम रो अखड झरणौ वैवण दो । सद्‌गुणा, उदारता अर स्वार्थ त्याग री सुगधि फैलावौ । फ्रेंकलिन रा सब्दा मे—जे थानें दुनिया रो व्हालौ वणणौ व्है तो दुनिया सूं प्रेम करो । आप जीवण मे कोई पण कांम करौ छतापण सव जगै पारकारा, समाज रा, देसरा अर जगत रा कल्याण रो ध्यान राखौ । खुद रा सोसण नै सहन करता थका पारका रो पोसण करौ । पोता रा अहम् नै स्व मे केन्द्रित नी करनै संसार मे फैलावौ । जठै कठैई जावौ सिरजण रो काम करो, विनास रो नी । नेह रा पवित्र अर सुद्ध जल सूं कुटुंब मे, समाज मे, अथवा राष्ट्र मे फैल्योडी घृणा, स्वार्थ अर वैर-विरोध री कालख नै धोय नाखौ । जिकौ धणी पे'ला पारका रे सुख रो ख्याल राखै अर पछै पोता रो हित देखै, वो इज संसार मे साचौ प्रेमी वण सकै । इसा मिनख इज पारका दुख नै पोतारै माथै लेय लेवै । वे जचै जिसी ई आफता सहन कर सकै । एक कवि कह्यौ है—

> जो हैं प्रेमी वे कुदरत की वलाओ से नहीं डरते ।
> जो हैं आरफ जफाकल वे जफाओ से नहीं डरते ।
> वे मुसीवत के मुकाविल भी सीधे तैर जाते हैं ।
> वे आधी रात भी दरिया की छाती चीर जाते हैं ।

गोस्वामी तुलसीदासजी रे गृहस्थ जीवण रो एक प्रसंग इण भात है । वे पोतारी पत्नि रा मोह मे पागल व्हैं ता छताई वा रै जीवण रो वलांक सुद्ध प्रेम कानी हो । एकर, वा री पत्नि रत्नावली आपरा भाई सागै पीहर गई परी तो गोस्वामीजी घणा उदास व्हैग्या । वे छेवट रैयनी सक्या अर आधी रात रा पत्नि नै मिलण नै रवानै व्हिया । मार्ग में नदी पूरा जोर सूं वैवती ही पण तुलसीदासजी उण मे उतरग्या अर पांणी मे वैवती एक मुडदा लास रे टेकै-टेकै पार पूगग्या । आगै सासरा रो दरवाजौ वद हो । कनै इज एक साप लटकतौ हो । गोस्वामीजी उणनै डोरडी समझ नै उणरी मदद सूं लटकता थका भीत डाक नै माय नै पूगग्या । तुलसीदासजी री पत्नि खुड़कौ सुणनै

जागगी अर उणे औ सगलौ तमासौ देख्यौ तो वा चकडीधम रैयगी। पोतारा पति नै इण भात मोह मे गेलौ बण्यौ देखनैं उण आपरा फरज नै ओलखतां थका एक दूहौ कह्यौ—

जैसौ प्रेम हराम में, वैसौ हर में होय।
चला जाय वैकुंठ मे, पल्लौ न पकड़े कोय।।

हाड मास रा इण हरामी सरीर मे जिसौ आपरौ मोह है विसौज प्रेम जे सगला जगत साथै अर भगवान साथै ह्वै जावै तो थारी मुगती ह्वै जावै।

प्रेम रा सागर महात्मा ईसा क्राइस्ट प्रेम नै इज भगवान रो सरूप मांन्यौ है—

Love is God

कर्मयोगी श्री कृष्ण पण प्रेम री बंसी बजाय नै समाज नै पोता रो बणायौ हो। कृष्ण रो प्रेम अनासक्ति योग रो एक नमूनौ हो। कैवण रो अर्थ ओ के संसार रा सगला धर्मों में, सास्त्रां मे अर साहित मे प्रेम नै बडौ ऊँचो स्थान दीनौ है। भारतीय रिसी मुनिया प्रेम री महत्ता इण भात वताई है—

प्रेम शक्ति समा शक्तिरपरा न जगत्त्रये।
प्रेमाकर्षण योगेन स्वकीय जायते जगत्।।

तीनूं लोकां मे प्रेम रे समान दूजी कोई सगती नी है। प्रेम री पाण इज सगलौ संसार आपणौ वण सकै। जिकौ सुद्ध प्रेमी ह्वै, उण रै मन मे कोई प्रेम रा न्यारा-न्यारा खाना नी ह्विया करै। उणरैवास्तै तो **'स्वदेशो भुवनत्रयम्'** त्रिभुवन ही वारो देस है। इसौ मिनख समै, स्थान, भासा, कुटुंब तथा आत सूं बंधी जियौडी नी रैवै। प्रेम निरंकुस ह्वै। प्रेम रा सीमाडा मे बधण कठैई नी नडै। उणरा नैना नैना टुकडा नी ह्वै सकै। प्रेम तो अखंड है, एक है। प्रेम रा टुकडा किया जावै तो उणरी आत्मा इज नस्ट ह्वै जावै। उठै पछै वैर विरोध अर स्वार्थ रा कीडा कल वलणा माडै। प्रेम तो एक अखड मिनखपणा नै मांनै, प्राणी मात्र मे एकता रो अनुभव करै। महात्मा बुद्ध रा सब्दा मे—

"प्रेम इज सुरग रो मार्ग है। ओ मिनख पणा रो दूजी नाम है। सगला जीवा सागै प्रेम भाव राखणो, इण रो नाम इज साचो मिनख पणों है।"

प्रेम तो बेहती नदी रा निर्मल जल जिसौ है। उण जल मे खाडा खोचरा मे रोकण सूं वो खराब ह्वै जावै। उण मे सूं दुर्गंध आवण लागै अर उणरौ सरूप इज बदल जावै। पछै वो मोह, तिरस्कार के वैर-विरोध रो रूप धारण कर लेवै। आजकाल मिनखां नैं हिन्दुस्तान-पाकिस्तान री गलाई प्रेम रा पण टुकडा करण रो सौक लागो है। कारण के भासा प्रेम, प्रांत प्रेम, गांम प्रेम, नगर प्रेम, संप्रदाय प्रेम, जाति प्रेम अर देस प्रेम ए सगला प्रेम रा टुकड़ा इज तो है। ओ सगलौ खंडित प्रेम है अर खडित प्रेम मुडदा जिसौ है। उण मे प्रेम री संजीवणता नी लाध सकै। उठै वैर-विरोध रा कीडा लाधैला। खंडित प्रेम मे सूं तिरस्कार री दुर्गंध आवै अर वो मिनखपणा रा टुकडा-टुकड़ा कर नाखै। जिण मिनखां रो संप्रदाय रे प्रति प्रेम ह्वैला वे पोता रा संप्रदाय नै इज चोखौ बतावैला। पोता रै संप्रदाय रा खोटा सूं खोटा मिनख नै वे आधौ वांधैला अर पराया संप्रदाय रा चोखा सूं चोखा मिनख नै वे खोटौ बतावैला। इणीज भात एक राजा रो पोता रा देस रे प्रति प्रेम पण ह्वै। वो दूजा देसा नै दुस्मण मांन लेवै अर वां सूं लड़ण नै तैयार ह्वै जावै। चोरा अर डाकुवां रो प्रेम पण पोतारा घर प्रत्ये इज ह्वै, पारका रे वास्तै नी ह्वै। मिनख जे पारका रा घर नै पोता रे घर जितरौ इज प्रेम करणौ सीख जावै तो पछै पूछणौ ई काई। संसार रा सगला दुख इज मिट जावै। सुरग धरती माथै उतर जावै। आ बात अथवा ओ सत्य राष्ट्र, धर्म, संप्रदाय अर जाति रे वास्तै पण एक सरीखौ लागू पडै। पण भारतवासिया रे माथा मे तो ए खराबियां ठूंस र नै भरयौडी है। डणा नै छोडवारी तो बात इज नी है। पण इतरी वात याद राखजौ के इण खंडित प्रेम रा संस्कारा नै नी हटाया तोइण री नतीजौ भोगण वास्तै पण तैयार रहणो पडैला। भारत रे इतिहास रो पानौ पानौ डण संकुचित प्रेम रे कडवास री करुण गाथा वतावै है।

संकुचित प्रेम स्वार्थ प्रधांन है अर विसाल प्रेम परमार्थ प्रधान है। संकुचित प्रेम रे वसीभूत भाई भाई रो लोही चूसण नै तैयार ह्वै जावै। कोई पण समझदार मिनख डण नै प्रेम नी कैवैला।

आप रै जीवण मे प्रेम रो घेरौ ज्यूं ज्यूं मोटौ ह्वै तो जावैला त्यूं

त्यूं आपनैं साचौ आणंद मिलैला। आप रै गांम रो प्रेम सहर कानी, सहर सूं प्रात ताई, प्रात सूं देस ताई अर देस सूं दुनिया ताई पूरा जावैला उण वखत आप रै जीवण मे साची खुसी आवैला।

इण वास्तै प्रेम री अखंड धारा नैं बैवती देवणी चाहिजै। इण सूं धीरै धीरै सगली संसार आपणै अपणात पणा रे घेरा मे आय जावैला अर आपा सगला संसार रा ह्वै सकाला।

卐

जीवन-जोत जगमगै

भारत री संस्कृति त्याग प्रधान है। त्याग इज इणरी प्राण है अर त्याग इज इणरी आत्मा है। जठै त्याग अर वैराग री पूजा व्है ती व्है, उणरी आदर सत्कार होवती व्है, उठै इज भारतीय संस्कृति समझणी चाहिजै। पण जठै भोग अर रोग री प्रधानता व्है, विसय वासना री प्रवलता व्है, ईर्खा री आग लागौड़ी व्है अर वैर-विरोध रो दावानल धवकती व्है, क्रोध री आंधी चालती व्है अर दरप रो सरप फ ंफाडा मारती व्है, माया अर लोभ रो भूतैलौ आंटा घालतौ व्है, उण ठौड भारतीय संस्कृति नी व्है सकै।

भारतीय संस्कृतिरा आगीवाणौ विसय-वासना री निंदा कीवी है। वीनै जीवण रो विकार मान्यौ है। सोनौ चमकतौ व्है तो उणरी पलकौ पड़ै। पण जे वो कादा मे खरड़ियौ ड़ौ व्है तो उणरौ पलकौ नी पडै। पण ज्यूं ज्यूं इंण माथै सूं कादौ आघौ व्है, वो चमकण लागै। आत्मा रूपी सोनौ पण अनंत काल सूं विकारा रा कादा मे खरड़िज्यौड़ौ है। वासना रा मेल सूं कालौ पडियौडौ है। उणनै जे चमकदार बणावणौ है तो विकारा नै धोवणा पडैला। वासनावा नै आघी नाखणी पडैला अर संस्कारा नै जगाडणा पडैला। संस्कारां नै जगावण रो मतलब है ब्रह्मचर्य मे मगन व्है जाणौ। कारण के ब्रह्मचर्य री आग मे तप नै इज आत्मा रूपी सोनौ सुद्ध वण सकै। आत्मा सागै अनंत काल सूं लाग्यौडा कर्म फल बल नै राख व्है जावैला। ओ साधना रो दरवाजौ है। इण सूं मन पवित्र वणै अर कर्म करवा री सगती वधै। इण कारण इज वेदां, आगमा अर त्रिपिटका मे ब्रह्मचर्य री मेहमा बखाणी है। भगवान महावीर पोतारा एक प्रवचन मे कह्यौ हो—"जिण भात ग्रहा, नखतरा

अर तारावा मे चन्द्रमा आगीवाण है, सिरै है, उणीज भांत विनय, सील अर तप वगैरै गुणा में ब्रह्मचर्य खास है ।

विणय सील तवनियम गुण समूहं, त बभं भगवतं
गहगणानक्खत्त तारागणाण, वा जहा उडुपती

—प्रश्न व्याकरण (२-४)

महात्मा बुद्ध पण एकर पोतारा चेलां नै संबोधता कह्यौ हो—थे थारा मन नै कामगुणा मे आसक्त मत करीजौ

'मा ते कामगुणे रमस्सु चित्त'

वैदिक सस्कृति रा मोटा मोटा विद्वाना साफ साफ कह्यौ है—
'ब्रह्मचर्य रूपी तप रा बल सूं इज देवतावा मौत नै जीती है ।"

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत ।

इण भांत भारत रा रिसि मुनिया अर श्रमण विद्वानां एक सुर सूं ब्रह्मचर्य री मेहमा गाई है अर विकारा री निंदा कीवी है । ब्रह्मचर्य री पालणा सूं सरीर मजबूत बणै, आत्मा ताकतवर बणै अर विचार सुद्ध रैवै । पण विकार अर वासनावा सूं सरीर रो ओज-तेज हटै, आत्मा निरबल बणै अर विचार ओछा बणै । ब्रह्मचर्य जीवण नै चमकदार बणावै अर विकार उणनै बरबाद कर नांखै ।

रात अंधारी है अर आभै मे काली काठल चढियौडी है, गाज रो अरडाट उडै अर बीजली पलापल करती झबूकै । इसा वखत मे दो वटाउडा हिमालय परबत री एक घाटी मे होयनै जावै है । वानै कठैई फदाका मारता हिरण्या निजरै आवै तो कठैई रंग रंगीला पंखेरु दीखै, कठैई खरगा री सिसकारी सुणीजै तो कठैई हाथी सिघाडता सुणीजै । कठैई सियालिया री वोली सुणीजै तो कठैई सिंघ री भयकर गर्जना सुणीजै । एक वटाऊ डरनै थर-थर धूजण लागै तो दूजौडौ निडर हुवौडौ आगै वधै । पे'लौ साथी दूजौडा नै पूछण लागौ—"भाई, थारे कनै इसी कांई चीज है के जिणरै कारण थानै डरनी लागै ।" दुजोडै पडुत्तर दियौ—म्हारै हाथरी इण लकडी नै देखौ कितरी तो रूपाली अर कितरी मजबूत । केडौ फूटरौ अर खामचाई सूं इण माथै रंग कीनौडो है । देखे जिणरौ ई मन राजी व्है जाए । इसी फूटरी अर मजबूत लकडी जिकण रै हाथ मे व्है, उणनै डर किण वातरो ?" पे'लौ आदमी बोल्यौ—"भाई थारी वात तो साची है पण देखौ तो सरी, थारी इण लकड़ी

माथै मैल रा तो थर जमियौड़ा है। वा ऊपर सूं चमकौ भलाई, मांयनै इणरै पोलमपोल है। छतापण थांनै इण लकडी माथै गुमेज है आ अचूं भारी बात है। अवार जे कोई जीव जनावर सामनै आय जावै अर इण लकडी रो कांम पड़ै तो इणरी पोल तुरत खुल जावै।" दूजौड़ा साथी नै ए वाता आछी नी लागी। उणनै तो पोतारी लकड़ी माथै पूरौ भरोसौ हो। उणनै पक्कौ विस्वास हो के कांम पडिया लकडी उणनैं दगौनी देवं। आपानै इण दूजौडा बटाऊ री वाता माथै हंसणौ आवैला। आपा सगलाई इण संसार सागर मे बटाऊ रे उनमांन हा। अन्तर अर पाऊडर काम में लेवण वाला मिनख दूजौडा बटाऊ रे जिसा इज है। वा मैं विकार, वासना अर अनाचार रो मैल चैठौडौ है। इसा मिनख मे सूं सार तत्व तो निकलग्यो है अर नकली रूप सूं भवकौ राखनै दुनिया नै धोखा मे राखणी चावै। इसा मिनख कदैई सुरग में नी जाय सकै।

जैन धर्म रे अनुसार मोक्ष मे जावण वास्तै सरीर रो फ़ूटरापौ जरूरी नी है। सरीर तो भलाई फ़ूटरौ व्हौ के कदरूपौ व्हौ। अष्टावक्र रे ज्यूं वाकौ टूंकौ व्हौ के सनतकुमार रे ज्यूं फ़ूटरौ व्हौ, गोल मटोल व्हौ के लांवा लडाक व्हौ—मोक्ष तो गुण व्है तो मिल सकै है। सरीर भलाई किसौई व्हौ, इण सूं मोक्ष वास्तै कोई अड़चण नी पड़ै। पण जिणरौ सरीर कमजोर व्है, उणनै मोक्ष नी मिल सकै। वेद मे कह्यौ है—

'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य'

जिणरो सरीर निर्वल व्है, जिणमे सगती नी व्है, उणनै आत्मा रा दरसण नी व्है सकै। आत्म देव रा दरसण करवा वास्तै विकारा नै जीतणा जरूरी है, इन्द्रिया माथै कावू राखणौ जरूरी है अर राग द्वेस नै ओछा करणा जरूरी है।

ब्रह्मचर्य जीवण री एक मोटी साधना है। अमेरिकन रिसि थोरो कह्यौ है– "ब्रह्मचर्य जीवण रूपी झाड़रो फूल है अर पवित्रता, पुरसारथ वगैरै उणरा फल है।" वेद व्यासजी रा सवदां मे—"ब्रह्मचर्य इमरत है। जिकौ मिनख ब्रह्मचर्य रूपी इमरत नै चाखै वो अमर व्है जावे। उणरौ नाम ससार रा इतिहास मे अमिट व्है जावै। उणरौ जीवण लाखा बरस ताई दुनिया नै परगास देवै अर करोड़ा मिनखा नै मारग घालै।"

इतिहास इण बात रो गवाह है के जिण महातमावां ब्रह्मचर्य रो पल्लौ पकडियौ, वे सगलाई दुनिया मे नाम करनै गया ।

इग्यारै लाख बरस बीत्या पछैई आज दिन ताई लोग हाल तांई सीताजी नै याद करै, इणरौ कारण काई ? असोक वाटिका मे सीताजी बैठ्या है अर तीनूं लोक रो राजा रावण सामनै हाथ जोड्यां उभौ है । वो सीता रो मन जीतवा खातर भात भात री लटापोरियां करै पण सीताजी उणरौ तिरस्कार करै । अपमान करै अर लोभ नै जूती माथै मारै । वे रावण री नागी तरवार देखनै पण नी डरिया । आप बताय सकौ के सीताजी मे इसी किसी सगती ही के जिणरी पाण वे रांवण जिसा महाबली रो सामनौ कर सक्या । सीताजी कन्नै कोई तोप बंदूक के तलवार नी ही । वारै कन्नै तो फगत एक चीज ही अर वा ही ब्रह्मचर्य रो तेज । इणतेज रे आगै दूजा सगला तेज फीका पड जावै अर सगली ताकता हार जावै ।

महाराणी सत्यवती भीस्म पितामह नै कह्यौ—"भीष्म ! थे म्हारै खातर सगली उमर ब्रह्मचर्य व्रत पालवा री प्रतिज्ञा लीवी ही । पण आजम्हूं थानै हुकमदेवूं के कुल नै कायम राखवा वास्तै थानै विवाह करणौ पडैला ।" व्यासजी पण सत्यवती री बात रो टेकौ राख्यौ । सत्यवती फेरूं बोली—"भीस्म, सूरवीरा री संतान पण सूरवीर ह्विया करै, आज मुल्कनै सूरवीरा री पूरी जरूरत है, इण वास्तै मुल्करे खातर थानै विवाह करणौ पडैला ।" भीस्म विचार करनै बोल्या—इन्द्र राजा पोतारी सत्ता नै छोड सकै, जमराज न्याव नै तोड सकै, आग ठंडक देय सकै अर चन्द्रमा आग बरसाय सकै पण भीस्म आपरी प्रतिज्ञा हरगिज नी तोड सकै । म्हूं विवाह करूं तो एक दो वीरा नै जनम देराय सकूं पण म्हारौ ब्रह्मचर्य भारत रा कितरा वीरा नै प्रेरणा देवैला ? ब्रह्मचर्य रे ताकत री पाण सूं इज ओ वीर महाभारत रा जुद्ध मैं अठारै दिनां ताई बाणा री सेज माथै सूतौ रह्यौ । आखौ सरीर बाणा सूं वीधीजग्यौ पण मूंडा माथै सल ई नी पडियौ । वे जीवण री मोटी मोटी समस्यावां रा उकेल काढता हा अर धर्मराज रे सवालां रो पडुत्तर देवता हा । ओ है ब्रह्मचर्य रे तेज रो एक अनोखौ दाखलौ ।

भारतीय सस्कृति री गम्भीर वाणी अलेखू बरसा सूं बताय री है के 'हे मिनख, थनै जो ओ मिनखजमारौ मिलियौ है वो अज्ञान री अंधारी गलिया मे भटकवा वास्तै नी मिलियौ है, भोग विलास री सूगली खाड़ी

मे लोटवा वास्तै नी मिलियौ है, सांसारिक सुखां खातर आथडवा वास्तै नी मिलियौ है अर वासना रो गुलाम वण नै इण जीवण नै वरवाद करण वास्तै पण नी मिलियौ है। जीवण रो खास ध्येय है विकार अर वासनावा नै जीतणी ? त्याग अर वैराग री निरमल जोत जगावणी। जिको आतमा इणभेद नै जाणलेवै वा जोतिसरूप वण नै संसार नै मारग घाल सकै।

जैन साहित रा जगमगता नखतर विजयकुंवर री वात आप सगलाई जाणौ हो। आ कोई इतिहास री कल्पना कोयनी, आ तो साची वात है। इण कुंवर रो जीवण समंदर री गलाई अथाग है। हजारा वरसा सूं उण जीवण री चरचा करी जावै पण दरियारी गलाई उणरौ कोई थाग नी लागी अर नी लागैला।

जिणरै जीवण मे ब्रह्मचर्य रो तेज है, सदाचार रो बल है अर त्याग री जोत है, वो इज जीवणआगोवाणवणसकै। इसौ जीवण इज इतिहास नै कोई नवौ मार्ग वतावै। देवतावां रो राजा इन्द्र पण इसा मिनखां रे आगै पोतारौ माथौ झुकावै। 'नमो वंभयारिस्स' कैयनै उणनै नमस्कार करै। संसार री सगली ताकता ब्रह्मचर्य रा वखाण करै। इण कारण इज भारतीय संस्कृति रा आगीवांणां साधना माथै पूरौ जोर दीनौ है। पण जिकण देसमे आध्यात्मिकता रो अखूट भंडार रह्यौ है, जठै अरिष्टनेमि, भीस्म पितामह, सती सीता अर सावित्री जिसा रतन पैदा ह्विया उठै इज आज चरित्र रो देवाली निकलणौ सरु ह्वैगौ है। आ हालत देखनै मन में वडौ दुख ह्वै। भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध अर कर्मयोगी श्रीकृष्ण रा उपदेसा सूं आ धरती पवित्र ह्वियोडी है। आंपणौ देस धर्म प्रधान गिणीजै अर संसार रा दूजा देसानै मारग वतावै। उण देस मे इज आज सिनेमा देख-देख नै लोगा रा विचार बडा ओछा ह्वैग्या है, भोग विलास री अठै होलिया सुलग री है तो पछै भगवान इज मालिक है। आज अठारा मिनख पोतारी मरजादा नै पण धीरै-धीरै छोड़ता जावै है। नैना-नैना टावरिया नै देखौ तो वे सिनेमा रा सूगला गीत गावता मिलैला। नी तो वे पोतारै मा वापा री परवा करै अर न वूढा वडेरारी। इण भात मुल्क रो नैतिक पतन चालू है रापटरोल दिन दिन तरक्की माथै है। तपेदिक रै ज्यू ए रोग रा कीटाणु मुल्क रा सरीर मे फैलता जावै है। इणा नै रोकणरी, अथवा मिटावण री जिम्मेवारी मोट्या रा ऊपर है। पण इणरै वास्तै पे'लौ पे'ल तो

मोट्यारा नै पोता रै जीवण रो महातम समझणी पडैला अर सागै-सागै नैतिकता री कीमत पण आंकणी पडैला। मोट्यारा नै एक बात आछी तिरिया समझलेवणी चाहिजै के ओ जीवण, आ मानखा जूंण भोगां री आग मे भस्म करवा वास्तै नी है, आ जवानी अर मोट्यार पणारो तोफान समाज अर मुल्क नै बरबाद करण वास्तै नी है। इणरी तो कीमत घणी ऊंची है, इणरौ मोल घणौ मूंघौ है।

आप इंगलैंड रा नामी कवि कीटस् रो नाम सुण्यौ ह्वैला। उणा वारी एक कविता मे भोग विलास रै अनिस्टा रौ चित्राम दीनौ है। वे एक इसा वीर सैनिक सूं बात करै जिकौ कोई जमाना मे भाखर भागण री हिम्मत राखतौ पण आज बूढौ ह्वैग्यौ है अर जिकणरी इंद्रियां सगली निबली पडगी है। वे उणनै पूछै कै ए बहादुर सैनिक! थारै दुख काई है? थारौ मूंडौ पीलौ कीकर पडग्यौ है? इण सरवर री तीर माथै, जठै बरफ घणौ पडवा सूं सगली घास ई बलगी है अर कठैई चिडी रो जायौ ई निजरै नी आवै, थूं एकलौ कीकर फिरै है?

What can all these
Khight at arms,
Alone and paleby hoitering ?
The Sedge is writhered from the lake,
and no birds Sing ,

पडुत्तर मे वो फौजी आदमी बोल्यौ—एकर घणा बरसा पे' ली म्हूं अठै इण घास रा मैदान फिरतौ हो के म्है नै एक रूपाली लुगाई मिली। उणै हाव-भाव सूं अर नेणा रा बाणा सूं म्हनै मोह लियौ। वा म्हनै पोतारै घरै लैयगी। उठै जायनै म्है देख्यौ के उणरै घर में मोटा-मोटा राजा, महाराजा, लिछमी रा लाडका अर कई फौजी अफसर वैठा है। पण वारी सगलारी वडी खराब हालत ही। उणा सब जणा म्हनै घणौ ई समझायौ के थूं अठासूं नाठ जा, नी तो थारी पण म्हारै जिसी हालत होय नै रैवैला। पण म्हूं नी मान्यौ। अर छेवट वारा वोल साचा निकलिया। इण कारण इज आजम्हूं इण भयंकर जगै एकलौ रखडू हूँ।

And this is why I sofourh here
A lohe and paleby loitering,

Though the sedge is withered from the lake and no birds sing. . .. . ..

भोग विलास रा फंदा मे गला तांई फस्योड़ा मोट्यार री कवि जबरौ चित्राम दीनौ है। जिकौ मिनख वासनावां रो गुलांम वण जावै, इंद्रियारो दास वण जावै अर जीवण रो मारग चूक जावै। उणा री सांवरियौ इज मालिक है। इण फौजी आदमी री पण इसीज हालत हुई ही।

आ जाणो के इण भारत री धरती माथै दो नगर वडा नामी गिणीजै। पे' लौ द्वारका अर दूजौ लंका। कोई जमानौ इसौ हो संसार री सगली माया द्वारका मे भेली व्हैगी ही। जादवा री रिध सिध रो कोई पार नी हो। पूरी द्वारका नगरी सोना री वण्योडी ही। सगला संसार मे द्वारका री आंण-दुहाई फिरती ही। जादव कुल रा मोट्यारा मे जठा सूधी कुरवानी अर निस्वारथ पणा री भावना रही, अन्याय, अत्याचार, अनाचार अर भ्रस्टाचार सूं नफरत रही, उठा तांई वारौ वैभव कायम रह्यौ। उठा तांई द्वारका नगरी री सोभा पण कायम रही। पण दिन लाग्या जादव कुल रा मोट्यार भोगी वणग्या, पोतारी जात नै भूलग्या, नैंना मोटारी मरजादा तूटगी, सोनैरी मै' ला री छिया मे मिनखपणौ ढकीजग्यौ, उण वखत वारौ वैभव पण खूटता जेज नी लागी। सोनैरी नगरी एक छिन मे घूड मे रूलती निजरा आई।

आपनै इण वातरी पण आछी तिरियां जांण है कै जण सूंधी रागस पोतारी मरजादा मे रह्या। लोक-कल्यांण री भावना राखता थका त्याग री मैमा नै जाणी, उठा सूंधी सोनैरी लंका वधतीजगी। सगली दुनियारौ वैभव रागसां रा चरणा मे आलैरवा लाग्यौ। पण जरै वे सोना रा अभिमांन मे पोतारी औकात नै भूलग्या, अन्याय अर अत्याचार माथै उतरग्या तो वारै वैभव अर टणकाई खूटतां जेज नी लागो। देखतां-देखतां सोनारी लंका राख वणगी।

दुनिया तो कैवै के जादवा नै द्वैपायन रिसी खलास कीना अर रागसा रो खेंगाल राम काढ्यौ। पण म्हूँ तो कैवूं कै नी तौ द्वैपायन रिसी वांनै खलास कीना कै नी रांम वांरौ खेंगाल काढ्यौ। वारौ तो गालियौ भरियौ वांरी अनीति अर वांरै अन्याया सूं। मिनख पोतारी हिम्मत सूं इज जीवै अर पोतारै कवाड़ा सूं इज मरै। कह्यौ है कै—

राम किसी को मारै नीं अर नीं हत्यारौ रांम।
ए तो आपौ आप मर जाएला करकर खोटा काम ।।

कारण कै अन्याय नास रो मूल है—

अन्याय से जात है, राज तेज अर वस।
तीनू घर ताला लग्या, रावण, कौरव कंस ।।

इणीज भात कोई पण मुल्क जे आगै वधै तो पोतारी ताकत पर वधै अर नीति माथै चालनै वधै। अर वो वाधैपौ उठा लग इज कायम रैवै कै जठा लगा वो नीति नी छोडै। एकर रोम रा प्रसिद्ध इतिहास कार गीबन नै किणैई पूछयौ कै रोम इतरौ आगै कीकर वध्यौ? गीबन जवाब दियौ—"नीति अर सादगी सूं।" उणै थोडौ अटकता अटकता फेर पूछयौ कै रोम रो पतन कीकर हुयौ? गीबन पडुत्तर दियौ—"भोग विलास में पडनै।" गीबन रा ए आखर सोळूं आना सही है। जिण मुल्क री प्रजा सदाचारी व्है, उठारौ समाज जरूर आगै वधै अर वो मुल्क पण ऊंचौ चढै। पण जिण बखत कोई प्रजा, समाज कै मुल्क भोग विलास मे पड जावै तो पछै उणरौ नास व्है ताई जेज नी लागै। थोडा दिना में इज दुनिया उणनै भूल जावै। फगत भूल इज नी जावै पण उणरौ नाम ई नी लेवणौ चावै। हजारा-लाखा बरस बीतग्या पण आज दिन ताई कोई बाप पोतारै बेटा रौ नाम रावण नी दीनौ। यू रावण कोई कम नी हो। वो एक मोटौ राजा हो। जंगी मै'ल-मालिया मे रैवण वालौ अर विमाणा मे मुसाफरी करण वालौ हो। सागर उणरा पग पखालतौ अर मिनख तो काई, देवता तक उणरै आगै लटका करता। इसौ लांठौ राजा व्हैता थकाई कोई पण बाप पोतारै बेटारौ नाम रांवण नी दियौ। इणरौ कारण काई? विचार कियां आपनै पतौ लागैला कै रावण खनै यूं तो सम्पदा अखूट ही, पण जीवण रूपी सम्पदा रो दैवालौ निकलग्यौ हो' सोना रा मै'ल-मालिया तो मोकला ई हा, पण सदाचार रूपी मै'ल-मालिया धूड भैला व्है चुक्या हा। समुन्दर ऊपर तो उणरौ राज चालतौ हो पण मन रा विकारा पर बिल्कुल काबू नी हो। इण कारणा सूं इज कोई पण बाप पोतारी संतान रो नाम रावण नी राखणो चावै। फगत रावण इज नी, पण उणरै कुटुम्ब रै मिनखा रौ कोई पण नाम लोगा नैं चोखौ नी लागै। इण वास्तै इज कोई पण पोतारै बेटा रौ नांम कुम्भकर्ण कै विभिसण नी राखै, कोई पण आपरै बेटी रो नाम मंदोदरी कै सूर्पणखा नी राखै।

वात रो सार ओ कै कोई पण मिनख नै भलाई चावै जितरी ई इज्जत मिल जावौ, उणरै वैभव रो दरियाव भलाई छोला लेवण लाग जावौ, वुद्धि रो परगास भलांई पलापल करण लाग जावौ, पण जे मन में पवित्रता नी ह्वै, विचारां मे उच्चता नी ह्वै अर इंद्रियां ऊपर संयम नी ह्वै तो सुख अर सांतिरा तो दरसण दुरलभ इज है।

जिण मिनख रो मन भोग विलास मे लाग्यौ रैवै, वासना री गलियां मे रखड़तौ रैवै अर विकारा रै ह्वाला मे वैवतो रैवै, वो मिनख आत्मिक तो कांई पण सासारिक वातां मे ई आगैनी वध सकै। वैवारिकता मे ई उणरी कोई पूछ नी ह्वै। महाभारत रा जुद्ध मे अभिमन्यु किण भात मरियौ वा आपनै जाण है ? कैवै है कै अभिमन्यु रो उत्तरा सागै विवाह हुयां नै मोकला दिन ह्विया हा, पण घांरौ मिलाप नी हुयौ हो। जिकण दिन अभिमन्यु नै जुद्ध मे जावणौ हो उण सागै दिन इज वो उत्तरा नै मिल्यौ हो। अभिमन्यु री हार रो खास कारण ओइज हो।

स्वांमी रांमतीरथ वांरा एक प्रवचन में कह्यौ हो कै मोहम्मद गौरी नै पृथ्वीराज चह्वाण वारै वेला हरायौ। इणरौ कारण ओ हो कै जिण वखत उणनै जुद्ध मे जावणौ होवतौ वो पूरी सजम पालतौ। पण तेरमी वेला वो वासना रा जाल मे फंसग्यौ। उणै गेला रै ज्यूं सयोगिता नै कह्यौ—"संयोगिता ! आज म्हनै काठी कमरां वाधणी है।" पण वापड़ा वासना रा गुलाम काठी कमरा किया वाघ सकै ? पृथ्वीराज नै छेवट हारणौ पड्यौ अर इण भात भारत गुलांम वणग्यो। वाटरलू रा जुद्ध मे नेपौलियन री हार हुई, इणरौ कारण पण ओइज हो। पोतारी इंद्रियां माथै पूरो संजम राखवा सूं अर वासना वा पर कावू राखण सूं इज वो मुल्क रो माभी सेनापति वण्यौ हो। पण छेवट उणनै नीचौ गिरणौ पड्यौ। इणरो कारण ओ कै एक गांमडा मे वो एक नाई रै घरै रैवतो। नावण की चंचल ही। नेपौलियन रो सरूप देखनै वा उंण पर फिदा ह्वैगी। उणै नखरा करनै नेपोलियन नै रीझावणौ चाह्यौ। पण नेपौलियन नै पोतारी पढाई सूं जरापण नवरास नी मिलतौ हो। नावण की देखती जरैई नेपौलियन पढाई मे मगन लाधतौ।

मुल्क रौ माभी सेनापति वण्या पछै नेपौलियन एकर फेरूं उण गांमडा मे पूगौ। नावण की दुकांन रा ओटला माथै वैठी ही। घोडी थांव नै नेपौलियन उणनै पूछ्यौ—थारै सागै नेपौलियन वोनापार्ट नाम

रो एक मोट्यार कोई वखत रैवती हो, थनै याद है ? लुगावड़ी रीसां बलती बोली इसा नीरस ठूंठ नै म्हूं याद ई नी करणी चावूं । उणं कोई दिन म्हारै सागै हंसनै वात ई नी कीवी । वो कोई मिनख हो ? वो तो गूंगौ बोली ढोर हो ढोर ।

नेपोलियन हा हा .! कर नै हसण लाग्यौ । वो बोल्यौ—"थारौ कवैणौ सोल्ं आना सही है । नेपोलियन जे थारा जाल में फंसग्यौ ह्वैतो तो आज मुल्क रौ माफी सेनापति नी वण सकतौ । सजम अर नियम रा जोर सूं इज वो आगै वध सक्यौ है ।" पण वो इज नेपोलियन पोतारी छेली उमर मे वासनावा री गुलाम वणग्यौ अर इण कारण इज छेवट उणरी हार हुई ।

तुलसीकृत रामायण रो एक प्रसंग याद आवै । वीर मेघनाद नै मैदान मे उतरियौ देखनै राम सेना मे खलवलाट माचगी । उंणरौ सामनौ करणरी कोई री हिम्मत नी पड़ी । राम बोल्या—"जिण धणी बारै वरस ताई पूरा संजम सूं ब्रह्मचर्य री पालणा करी ह्वै वोइज धणी इणरौ सामनौ कर सकै ।" आ वात सुणता पाण लक्षमण मैदान मे उतरियौ । उणरै ब्रह्मचर्य रा तेज सामा मेघनाद री ताकत झाखी पड़गी। वो वलि रा वकरा री गलाई एकर जोर सूं वर कियौ अर खतम ह्वैग्यौ । इणीज भात रो एक प्रसंग महाभारत मे पण आवै । जिण वखत अर्जुण चित्ररथ गंधर्व नै हरायौ । उण वखत चित्ररथ बोल्यौ—

ब्रह्मचर्यं परोधर्मः स चापि नियतस्त्वयि ।
यस्मात्तस्मादह पार्थ ! रणेऽस्मिन् विजितस्त्वया ।

हे अर्जुण ! ब्रह्मचर्य इज साचौ धर्म है । इण साचा धर्म री संजम सूं थै पालणा कीवी है अर इण कारण इज म्हारी हार हुई है ।

इण भात आपा निसंक होय नै कैय सका कै सगली तपस्यावा मे ब्रह्मचर्य सबसूं मोटी तपस्या है । जिकौ नसीबवांन इण तप री पालणा करै, उणरौ तो बेडौ पार लाग जावै' मानखा जूंण रौ असली तेज कठै, ओज कठै । उणानै रंग, पाउडर, लवडर पोत नै मूंडौ रातौ करणौ पड़ै । ओ तो थाप देयनै रातौ मूंडौ राखणौ है । वानै आपरा मूंडा माथै असली चमक लावणी है, ललाट माथै असली तेज लावणौ है तो वानै ब्रह्मचर्य री पालणा करणी पडैला । इण व्रत री पालणा सूं इज जीवण रो हीर प्रगट ह्वैला ।

४

कर्त्तव्यनिस्ठा

संसार में कर्त्तव्य अथवा फर्ज एक मोटी चीज है। समाज, धर्म अर मुल्क सगला कर्त्तव्य रा थांबा माथै ऊभा है। जे धर्म गुरु, समाज रा आगीवांण कै मुल्क रा नेता पोत पोता रै फर्ज री पालणा नी करै तो संसार मे हाहाकार फ़ट जावै। सगलां रा ई पोता-पोता रा फर्ज है अर वारी ठीक तरै सूं पालणा करवा सूं इज ससार मे साति कायम रैवै। साधु संता, रिसि मुनिया अर समाज रा आगीवांणा नै पोता रै फर्ज री पालणा करणी तो घणीज जरूरी है। धर्म, मुल्क अर समाज रै प्रति साधु संता रा पण कई फर्ज होवै। इण री पालणा मे जरा पण आलस नी-ह्वैणी चाहिजै। समझलो कै साधु संत समाज सूं न्यारा है। यूं ह्वैतां छता। पण वारो समाज रै प्रति अर मुल्क रै प्रति कर्त्तव्य तो है इज कमल रो फूल कादा वाला पाणी मे जनम लेवै। इसा सूगला पाणी मे पण सुगध आवै, इणरो कारण कमल है। संसार मे रैवता थका ई संसार सूं आघो रैवणो आ सिक्षा आपां नै कमल सूं मिलै। इण जगत में कई मोटा मोटा महात्मा ह्विया है। उंणां आपां नै ओइज बोध पाठ दीनो है। अर उंण महात्मा वां पण पोता रै फर्ज री पूरी पालणा कीवी है, जरै इज वे मोटा गिणीज्या है। जिको जितरो मोटो बाजै उणै उतरो इज पोतारै फर्ज नै ओलखियो है। पोता रा फर्ज नै भूल नै उण सूं बेपरवाही राखनै कोई पण मिनख संसार मे आगै नी वध सकै। इण कारण मानखा वास्तै फर्ज अथवा कर्त्तव्य सगला सूं जरूरी चीज है। सगला संसार री सुव्यवस्था रो आधार कर्त्तव्यनिष्ठा ऊपर है। आ स्रिस्टी आपा नै रात दिन ओ इज उपदेस देवै। दुनिया मे जितरी ई कुदरती चीजा है, वे सगली पोत-पोता रो फर्ज पूरी तरै सूं

निभावै अर पलक-पलक माथै आंपानै पण इणरी सिक्षा देवै। सूरज, चद्रमा, ग्रह, नखतर, फल, फूल, झाडपांन, पवन अर पाणी सगलाई आप आपरा फर्ज मे लाग्यौडा है। माता टाबर नै जनम देवै अर टाबर रै वास्तै इज सगला सुखा नै छोडनै पोतारै कर्त्तव्य री पालणा करै। इण काम मे उणनै सुरग ई फीकौ लागै। भाखर रा भाठा मे गुलाब रो फूल खिलै। च्यारूं मेर उणरी सुगध फैल जावै। उठी हीयनै जावण वाला वटाऊडा उणरौ अणछक आणंद लूटै। छेवट वो फूल कुलमीज नै धरती माथै खिर जावै। उणै पोतारौ फरज वजाय दियौ। इण नै फर्ज री मूक पालणा कैवणी चाहिजै। विचार करां तो इण सूं आपांनैं कितरी प्रेरणा मिलै। आखी रांमायण कर्त्तव्य पालणा रै दाखला सूं भरचौडी है। बाप रौ बेटा रै प्रति अर बेटा रौ बाप रै प्रति, भाई रो भाई रै प्रति, धणीरी लुगाई रै प्रति अर लुगाई रो धणी रै प्रति, सासु री बहू रै प्रति अर वहू री सास रै प्रति, राजा रौ प्रजारै प्रति अर प्रजा रौ राजा रै प्रति, रिसि मुनियां री समाज रै प्रति अर समाज रौ रिसि मुनियां रै प्रति. मित्रा रौ मित्रा रै प्रति, संतान रो मा वाप रै प्रति अर मा वाप रौ संतान रै प्रति काई फर्ज होवणौ चाहिजै, रामायण मे आ वात पग पग माथै वतायौडी है। रांमायण रौ पांनौ-पानौ कर्त्तव्य रा रंग सूं भर्यौडौ है। ओ ग्रथ कर्त्तव्य पालणा रो जीवतौ जागतौ चित्राम है। इण मे जीवण री सगली गूंसलियां नै कर्त्तव्य रा हाथा सूं खोलण री तरकीव बताई है। जिकण मुल्क, समाज, जाति अथवा कुटुंव मैं फर्ज वजावण री भावना ह्वै उण जगै आठ सिधिया अर नवनिधियां रौ वासौ ह्वै। जिण कुटुंब रा मिनख पोत-पोतारौ फर्ज आछी तरिया निभावता ह्वै, उठै अवस करनै लिछमी रौ वासौ ह्वै। कर्त्तव्य री मरियादा नै नी लोपी जावै उठै सरस्वती री पण किरपा रैवै। उण घर मे साति रौ वासौ ह्वै अर जोगवाई पण हाजर रैवै। जिकण मुल्क मे कर्त्तव्य पालण री भावना ह्वै वो मुल्क अवस करनै आगै वधै। सगला संसार मे उण मुल्क री जै-जैकार ह्वै।

हरेक घर कर्त्तव्य पालण सीखावण वाली पे'ली पोसाल है। अठा सूं इज कर्त्तव्य पालण री सिक्षा रो श्री गणेस ह्वै। कुटुंव पछै जात, गाम, समाज, धर्म अर राष्ट्र रै प्रति कांई कर्त्तव्य है इणरी शिक्षा देवणी चाहिजै। इण सूं इज मानखा रौ जीवण सुखी बण सकै। कर्त्तव्य रा ताणा सूं इज मानखा रौ जीवण रूपी कपडौ आछी तरियां विणीज

सकै । ओ सगली संसार कर्त्तव्य री डोर सूं बांधोडी है। जिको मिनख इण डोर नै तोड नै नाठ जावै वो जिनावर वाजै । जिनावर जिण वखत डोर तोडण लागै, उणरै सोट उडै अर छेवट हार नै खूंटा माथै आवणो पडै। ठीक इणीज भांत जिको मिनख कर्त्तव्य री डोर तोड नै नाठण रा सरंजाम करै, उणरी कमर माथै कुदरत री लकडी पडिया विना हरगिज नी रैवै। समाज अर रास्ट्र दोन्यूं उणनै सिक्षा देवै। सरकार उंगनै उठाय नै जेल मे नाख देवै। खरी वात आ है कै कर्त्तव्य पालण मे कमी राखणी, मिनखपणा मे कमी राखणी है।

कर्त्तव्य है वो जीवणरूप मांनसरोवर रो हंस है। उंणरै रैवण री ठिकांणो मानसरोवर इज है । इसो मिनख इज विवेक रा रूपाला मोती चुग नै पोतारो जीवण आणंद सूं विताय सकै। जे एक वखत ई कर्त्तव्य रूपी हंस मान सरोवर सूं उड जावै तो उठै वैर विरोध रो अखाड़ो वण जावै। इण वास्तै हंस नै मांनसरोवर सूं उडवा इज नी देवणो चाहिजै।

टावर रै दात आवण लागै उंण वखत मा उंणनै दवाई पावै, जिणा सूं दात सोरा निकलै । इणीज भात मानखा नै कर्त्तव्य री गुटकी पण कुदरत सूं इज मिलै । पण गुटकी लेवतां वखत कोई टावर उल्टी कर नाखै अर कोई कोई कडवी देखनै थूक नाखै । उंण हालत मे ओ समभ लेवणो चाहिजै कै उणरो विकास ठीक ढग सूं नी ह्वै सकै। इसो मिनख समाज अर मुल्क रै वास्तै दुखदाई निवडै ।

कर्त्तव्य मानखा जीवण रो इमरत है। जिको मिनख इणरी पालणा करै वो उण मिनख नै अमर वणाय नाखै। रिसि मुनिया कह्यो है—

उत्तिष्ठत अमृत पुत्रा. !

हे इमरत पुत्रो ! हे कर्त्तव्य वीरो ! जागो ।

जिको कर्त्तव्य रूपी इमरत रो पान करैला वो तो जागै लाइज । वो आगै तरक्की करैला इज । मरिया पछैई वो अमर ह्वै जाएला। दुनिया उंणनै महापुरुष गिणैला। मिनख नै साचा मिनख अर साचा मिनख नै महापुरुस वणावण वालो कर्त्तव्य इज है। नी रामायण मे राम है अर नी गीता मे श्री कृष्ण है । नी वाईवल मे ईसामसीह है अर नी भगवती सूत्र मे भगवांन महावीर है। ए सगलाई महापुरुष पोता पोतारा कर्त्तव्य मंदिर मे है। आज आपा देखा के मानखो मदिरा, मस्जिदा, चर्चो, उपासरां, गुरुद्वारां, रामद्वारां अर धर्मस्थाना मे जावै अर उठै पोता रै

इस्ट नै पूजै । उणा रै आगै नमै अर वारा गुणगान करै । इणरौ कारण काई ? साची बात तो आ है कै इण महापुरुसा पोता रा फर्ज नै आछी तरिया वजायौ अर संसार नै फर्ज बजावण रो उपदेस दीनौ इण कारण इज वारी इतरी कीमत है । पण सोचणौ ओ है कै इणारी पूजा करण वाला मिनख, कोरी पूजा इज करै कै इणा रै ज्यूं पोतारा फर्ज नै पालै पण है ? म्हारा ख्याल सूं कोई विरलौ इज इसौ ह्वैला जो इण बात माथै ध्यान देवतौ ह्वैला । वाकी तो सगला माथौ नमावणिया है, असली भेद नै जाणणिया कम इज है । कारण कै कर्त्तव्य री तप्यौडी सडक माथै चालवानै कोई पण तैयार नी है । आज मांनखौ सस्तौ अर सरल मारग खोजै । विना तकलीफ जीवणौ चावै । कर्त्तव्य री पालणा कियां विना इज जीवण मे सफलता मेलवणी चावै । पण सस्तौ सोचवा री आ विरती मानखा नै भुलावा मे नाखै । एक कैवत है कै सस्तौ रोवै वार-वार अर मूघौ रोवै एकवार । वैपार मे जिकौ वेपारी सस्ता पण रा लोभ मे पडनै खरीददारी मोकली कर नाखै उणनै छेवट पछतावणौ पडै । पण मूंघी चीजा खरीदण वाला नै पछतावणौ नी पडै । मूंघी चीज टिकाऊ अर मजबूत ह्वै । फगत खरीदता वखत इतरौ जरूर लागै दांम घणा लागा । इणीज भात जिकौ मिनख कर्त्तव्य रूपी मूघी चीज नै छोड़नै अकर्त्तव्यरूपी मौज सौक री अर स्वार्थ री चीज कानी मूंडौ करै, उण नै छेवट पछतावणौ पडै । कारण कै वो एकलौ पड जावै अर दुखी ह्वै जावै । पण जिकौ मिनख कर्त्तव्य रा राजमारग माथै चालै, उणनै कोई दुख नी उठावणौ पडै । उणनै निराई सगी साथी पण मिल जावै अर वो आप रा ध्येय कानी आगै वधतौ रैवै ।

आज रो मानखौ दरिया नै लाघ सकै, धरती माथै झपाटा सूं दौड सकै अर आकास मे पखेरू री गलाई उड सकै । धरती, आकाश अर समदर तीनूं माथै उणरौ पूरौ कब्जौ है । इतरौ ह्वैतां छतापण विज्ञान उणनै ढंग सू जीवणौ नी सिखायौ । मिनख वणनै किण रूप सूं धरती माथै रैवणौ चाहिजै ओ नी बतायौ । इण कारण इज वो आज दुखी है । आज उणनै डूगर वलती तो साफ दीसै पण पगा बलती कोय दीसै नी । भूगोल रा विद्यार्थी नै पूछ्यौ जावै कै राजस्थान कठै है । तो वो तुरत नकसा माथै आंगली दैयनै वताय दैवैला । पण जे उणनै आ वात पूछी जावै कै थारै गाम मे गरीवा रा घर कठै है तो फाफा मारण लागैला ।

इतिहास रो विद्यार्थी आ वात तो वताय देला कै महाराणा प्रताप री मौत किसा वरस मे हुई पण आ स्यात् इज वताय सकै कै उणरै दादा अथवा पड़दादा री मौत किसा वरस मे हुई। कैवण रो मतलव ओ कै वो दूर री वाता तो जाणणी चावै पण नजदीक री वातां कानी ध्यान ई नी देवै। नजदीक री वाता जाणण सूं काई परीक्षा मे नवर तो मिलण सूं रह्या। नंवर तो छेवट पाठ्य पुस्तका घोखण सूं मिलैला। पछै नजदीक री वाता याद राखण सूं काई मतलव ? पण याद राखौ, कै मिनख री काम मिनख सूं पड़ै। इण वास्तै दूजां सागै आपणौ संवंध मीठौ किण भात रैय सकै, इण वातरौ पूरो ध्यांन-राखणौ चाहिजै। वस, आ वात जाणवा वास्तै इज कर्त्तव्य रौ ज्ञान जरूरी है। कर्त्तव्य ज्ञान विना कै कर्त्तव्य आचरण विनां मिनख समाज मे रैवतां थकाई जिनावर जिसौ है। जिनावर जूंण मे जनम लैयनै पण जो जिनावर पोतारौ फर्ज पालै तो वो मिनख करतांई वत्तौ। अर मानखा जूंण मे रैवनै ई कर्त्तव्य रो ध्यान नी राखै तो जिनावर करतांई खोटौ। महाराणा प्रताप रौ घोडौ चेतक पोता रै फर्ज री पालणा करनै मरियौ तो वो संसार मे अमर ह्वै ग्यौ। जटायु पंखेरू ह्वैता थकाई वो महासती सीतारी रक्षा में रावण रै हाथ सूं कटियौ, तो उणरौ नाम पण संसार मे अमर ह्वै ग्यौ।

ए सगला धर्मसास्त्र, धर्मग्रंथ अर पोथी पानडा काई कैवै ? ए सगला मदिर मस्जिद अर गिरजाघर काई सिखावै ? ए सगला महापुरसा रा जीवण चरित काई वतावै ? इण सगली पाठ सालावा, कॉलजा अर विस्वविद्यालया मे काई सिखायौ जावै ? आ देवतावा री अर रिसि मुनियां री भगती क्यूं करी जावै? इण सगली वाता रौ एक इज जवाव है कै ए सव काम आपानै कर्त्तव्य पालण री सीख दैवै।

एक मिनख जिकौ भणियौ-पढियौ है, पूजा-पाठ करण वालौ है, धर्म सास्त्रा री वातां सूं उणरौ मगज भरियौडौ है, पण जे उंणनै कर्त्तव्य रो ज्ञांन नी है तो वो जागतौ थकौ ई ऊंधाण जिसौ है। मिनख ह्वैता थकाई जिनावर जिसौ है अर आख्या ह्वैता थकाई आंधा जिसौ है। इसा मिनख नै जीवण मे सफलता किया मिल सकै ? जिकण मिनख पोतारै कर्त्तव्य री पालणा नी कीवी उणनै दुनिया मांन कीकर दैय सकै। किरिया करम कीधा सूं कै भगती रौ थोथौ पाखंड कीधा सूं कोई कारज नी सरै। पोतारै कर्त्तव्य रौ ज्ञांन नी होवै तो वारली आडम्वर सव फालतू है।

'न चित्ता तायए भासा कुओ विज्जाणुसासणं'

जिकौ मिनख पोता रा जीवण मे कर्त्तव्यनिस्ट नी होवै उणरी विद्या काई काम री, उणरौ ज्ञान काई काम रौ ? मानखा नै पौतारै कर्त्तव्य रौ ज्ञान सगला सूं पे'ली ह्वैणौ चाहिजै । इणरै विना दूजा सव ज्ञान नकामा है । कर्त्तव्यनिस्ठा नै आपा मा री ओपमा दैय सका । मारौ प्रेम कदैई ओछौ नी पडै । मा वेटा रै वीच मे जचै जितरी खटपट ह्वै, भलाई कपूत वेटौ मा नै मारण नै तैयार ह्वै जाओ, पण मा रै हिवडा मे ममता रौ जिकौ अखूट झरणौ वंवै है, उणमे कोई कमी नी आय सकै । मानखा जूंण रै सागै कर्त्तव्यनिस्ठा रौ सगपण ई मा जिसौ इज पवित्र, अखंड अर अटूट है । कर्त्तव्य हीणा मानखा जूंण री तो कल्पना करणी पण विरथा है । विसौ जीवण मुडदा जिसौ अर खोलियौ मात्र है ।

आपनै यूं लागतौ ह्वैला कै जिण कर्त्तव्य रै वखांणा रा इत्तरा धोरा बाध्या जावै है, वो कर्त्तव्य है काई चीज ? इणरौ अर्थ काई है ? विद्वाना इणरी औलखाण काई वताई है ? खरोखर ओ एक अवखौ सवाल है । घबदेताणीरौ इणरौ जवाव दिरिज जावै, इसी से ली वातनी है । गीता मे श्री कृष्ण अर्जुन नै कह्यौ है—

कि कर्म कि कर्मेति, कवयोऽप्यत्र मोहिता.'

काई कर्त्तव्य है अर काई अकर्त्तव्य है, इणरौ फैसलौ मोटा-मोटा विद्वान पण नी कर सक्या है ।

सागण काम पड्या पोतारा कर्त्तव्य नै ओलखणौ घणौ अबखौ कांम है । मोटा-मोटा समझदार मिनख पण इण मे गलती कर जावै अर दूजौ मारग पकड लेवै । इण भात जे कर्त्तव्यां री गिणती करण बैठा अथवा जुदा जुदा मिनखा रा कर्त्तव्य तै करण बैठा तो निराई पोथा भरीज जावै । अर पोथा भऱ्या पछैई सही फैसलौ नी ह्वै सकै । एक मिनख रै वास्तै कोई वखत जिकौ काम कर्त्तव्य है वो इज कांम कोई वखत उणरै वास्तै अकर्त्तव्य ह्वै सकै । कोई मुल्क मे कोई वखत जिकौ कर्त्तव्य गिणीजै, समय बीत्या वो अकर्त्तव्य पण गिणीज सकै । एक मिनख रै वास्तै जिकौ कर्त्तव्य है वो दूजारै वास्तै अकर्त्तव्य पण होय सकै । एकला मिनख रै वास्तै ई कर्त्तव्य अर अकर्त्तव्य री फैसलौ ह्वैणौ कठण है तो पछै सगला संसार रै वास्तै कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य रौ फैसलौ तो किया होय सकै ? दाखला रूप मे एक बात है कै एक आदमी पोतारा

कुटुम्ब वास्तै रसोई करै। रसोई करणी उणरी कर्त्तव्य है। वो सिरधा सूं उंणरी पालणा करै। उणीज वखत जे पाडौस मे लाय लाग जावै अर बुझावण-री हाकौ होवै तो उण वखत रसोडा रौ काम छोडनै आग बुझावण नै जावणौ उंणरौ पे'लौ फर्ज है। इणीज भात कोई कोई वखत मांनखा रै सन्मुख दो-फर्ज एक साथौ का आयनै उभा ह्वै जावै। उण वखत इण वातरौ फैसलौ करणौ कठण ह्वै जावै कै किसौ फर्ज पे'ली वजावणौ आछौ है। साधारण मिनख उण वखत डाफा चूक ह्वै जावै पण हिम्मतवान मिनख तुरत फैसलौ कर लेवै।

कोई सात आठ वरसां पे'लारी बात है फरूखाबाद मे एक धनवान आदमी रौ मोट्यार बेटौ मोटर नीचै दबनै मरग्यौ। मोटर मे बैठ्या मुसाफिरां नै इतरी रीस आई कै उणां ड्राईवर नै मार-मार नै अचेत कर नाख्यौ। समाचार मिलतां पाण छोकरा रौ बाप उठै आयौ। उणै आय नै देख्यौ तो एक कांनी उणरौ बेटौ मरियौडौ पडियौ है अर दूजी कानी ड्राईवर अचेत पडियौ है। उणनै अवै दो फर्ज बजावणा हा। पोतारा बेटा नै दाग देवणौ हो अर ड्राईवर री पाटा पीड पण करावणी ही। पण किसौ काम पे'ली करणौ अर किसौ काम पछै करणौ, आ एक विचारणा जोग बात ही। उंण आदमी मे जे मिनख पणौ नी ह्वैतौ तो वो पे'ली पोतारे बेटा नै दाग देवणरी वात विचारतौ अर पछै ड्राईवर कानी ध्यान देवतौ। पण उणरा अंतरमन सूं एक आवाज आई के—'इण अचेत पडिया ड्राईवर नै बचावणौ थारौ पे'लौ फर्ज है, सो वो उणनै मोटर मे घाल'र अस्पताल लेग्यौ अर उणरै पाटापीड रौ इतजाम कीनौ। इणरै पछै पोतारा बेटा नै दाग दीनौ। चार दिन आडा पडिया लोगा उणनै पूछ्यौ—'आ थानै काई जची? वेटा री लास पडी राखनै ड्राईवर नै अस्पताल ले जावणौ म्हानै तो कोनी जची।' वो बोल्यौ—म्हे जो कियौ म्हारा मत सूं ठीक इज कियौ। उण वखत म्हारौ जो फर्ज हो म्हैं उणनै पूरो कियौ। म्हारौ बेटौ तो मरग्यौ हो, पण ड्राईवर हाल जीवतौ हो। इण वास्तै मूओडा री साल-संभाल नी करनै जीवता री साल संभाल करणी जरूरी ही। ओइज म्हारौ फर्ज हो। म्हूं जाणूं म्हारा इण कांम सूं भगवान राजी होवेला।

एकर भरत चक्रवर्ती रे आगै एकण सागै तीन फर्ज आयनै उभा ह्विया। राजा नै कुंवर जनमिया री वधामणी मिलै। उणरी उजमणी

करणी ही। दूजी बात उणरी आयुधसाला मे चक्ररत्न प्रगट ह्वियौ, उणरी पूजा करणी ही। अर तीजी बात भगवान रिषबदेव नै केवल ज्ञान उपनियौ, इण वास्तै एक धर्मनिस्ठ बेटा रै रूप मे उणा रौ उपदेस सुणवानै पण जावणौ हो। भरत विचार कियौ—बाप बेटा रो सम्बन्ध तो दुनियादारी रो है अर अनादि काल सूं है। उणरी उजमणी मोड़ी वेगी ह्वै तो कोई फरक नी पडै। चक्ररत्न री पूजा नी ह्वै तो वो बे राजी होय नै जावैला परो। पण जावैला कठै? बेटौ अर चक्ररत्न दोन्यूं धर्म रा पुन्न प्रताप सू इज म्हनै मिलियां है तो जावैला क्यूं। इण वास्तै धर्म री बात पे'ली ध्यान मे राखणी चाहिजै। ओ विचार करनै भरत सीधौ भगवान रिखबदेव रे खनै पूगौ।

केवण रो मतलब ओ के जिण वखत मिनख रे सामनै एकण सागै कई फर्ज आयनै उभा ह्वै जावै, उण वखत उण मिनख री परीक्षा री घडी आवै। पण अकलवान मिनख पोतारा पे'ला फर्ज नै तुरत पिछाण लेवै।

अवै विचारणा जोग बात आ है के फर्ज सेवट है काई? मोटा रूप सूं विचार करा तो हरेक मिनख रो वाजब काम फर्ज री गिणती मे आय सकै। पण इण परिभासावा रे घटाटोप मे सूं फर्ज रो साचौ अरथ सोध नै काढणौ घणौ दोरौ है। छता पण विचार करा तो म्हारै मत सूं मानखा रे अतर आत्मा री पे'ली आवाज जिकी बुद्धि रा पडपच सू न्यारी ह्वै, साचौ फर्ज है। जिकौ मिनख पोतारै अंतर-आत्मा री आवाज माथै चालै अर बुद्धि रा पडपच मे नी पडै उणनै फर्ज रो साचौ मारग लाध सकै। अंतर आत्मा री आवाज कदैई खोटी नी ह्वै। इण वास्तै उणरै माफक चालणौ इज मानखा रौ असली फर्ज है। दूजा मिनखा सागै आपा नै एडौ बेवार राखणौ चाहिजै के जेडा बेवार री आपां पोतारे वास्तै दूजा सूं उम्मेद राखा।

एक अंग्रेज विद्वांन कह्यौ है—

'As you want for your self, do unto others'

आपा दूजा सूं जेडा वेवार री उम्मेद राखा, आपानै पण दूजा सागै वेडौ वेवार इज राखणौ चाहिजै। जे पोता ने सरल अर निस्कपट वेवार चोखौ लागतौ ह्वै तो दूजां सागै पण सरल अर निस्कपट वेवार राखणौ चाहिजै। जिकी वात आपा नै चोखी नी लागै वा दूजां नै चोखी कीकर

लागैला। कांटा रो तवीडौ जेड़ौ पोतानै खारौ लागै वेडौ रो वेड़ौ दूजानै पण लागै। वस, फर्ज नै मापण रो असली गज ओईज है, फर्ज नै तोलण रो असली ताकड़ियौ ओईज है। आत्मा री कसोटी सूं वधारै दूजी कोई कसौटी नी। इण वास्तै इज भगवांन महावीर कह्यौ है—

'अप्पणा सच्चमेसेज्जा'

थांरी अंतर आत्मा सूं सत्य नै ओलखौ, फर्ज नै सोधौ अर आत्मा रा गज सूं सत्य नै नापौ।

जिण मिनखा पोतारा फर्ज नै नी ओलखियौ अर उण सूं उल्टौ काम कियौ, उणा रो उतंग इज उठग्यौ। इतिहासकार अर कथाकार उणारा नाम माथै थूकै। कंस अर रावण पोता रा फर्ज नै ठोकर मारी तो जमांनै उणानै ठोकर मार दी। जुग-जुग बीतग्या पण उणा माथै लोगा रो कोप कम नी ह्वियौ।

मिनख नै कई वखत पोतारा फर्ज नै निभावण वास्तै भारी कीमत चुकावणी पडै। पण फर्ज पालणिया उणरी कोई परवा नी करै। कारण के वे फर्ज री कीमत घणी ऊंची मांनै।

भारतीय इतिहास रो जगमगाट करतोडौ तारौ राजा हरिचंद फर्ज री जीवंत मूरत हो। पोतारो फर्ज पालण वास्तै उणै आपरौ राजपाट, सुख, वैभव, तारामती जिसी सुलक्खणी राणी अर रोहित जिसा राजकुंवर नै छोड दियौ। पण इणरै उपरात ई एक दिन एडौ आयौ के उणरै फर्ज री अग्नि परीक्षा हुई।

भलौभल आधी रात ही। आभै मे विजलिया पलाका मारती ही। गाज रो घरड़ाट उडती हो। उण वखत मसाणा मे एक लुगाई रे कूकण री आवाज आई। वा कुरलावती थकी वोली—महाराज, अठी पधारौ अर आपरै फरजंद नै एकर देख लौ। वा अवला छिबरा-छिबरा रोई पण उठै कुण सुणै। उणीज वखत एक कालौ भरंग मिनख आयनै उभौ ह्वियौ। उणरै हाथ मे लावौ वासडौ हो। वो वोल्यौ—अरे गेली! रोवै क्यूं है? अठै किसौ गज मे'ल है सो कोई थारी खोज खबर करण नै आवैला।' तारामती करुण सुर सूं वोली—थारी छाती मे मारो कालजौ कोनी। इण वास्तै थानै ठा कोयनी पडै के वेटा रे विजोग रो दुख किसौक ह्वै? म्हारै हिवडा रौ टुकड़ौ उधराणौ जमी माथै पडियौ है अर उणरी लास नै ढाकण नै आज म्हारै खनै खापण रौ लीरौ ई

कोयनी। धिन्न रे राज मे'लां में सोना रा पालणा मे झूलणवाला सूरजवंस रा राजकुंवर थारा भाग! पीडा सूं आज म्हारो कालजो फाटै है अर म्हूं इण रा बाप राजा हरिचंद नै आवात कंवूं हूं।' मन्मुख उभौ वो आदमी बोल्यौ—कुण? थारो नाम तारा है?' 'अर आप सूरजवंसी राजा हरिचंद?' तारा पाछो पूछ्यो। वादलां मे विजली खीवी अर उणा एक दूजा नै ओलखिया। वरसां सूं विखो भोगवता जीव पाछा मिलिया। प्रसंग खरोखर करुण हो। हरिचन्द रो हियो भरीजग्यो। उणरी निजर वेटा री लास माथै पडी। पण वो अजेज चेत नै बोल्यौ—"गेली! म्हूं अवै सूरजवंसी राजा हरीचंद कोय नी। म्हूं तो कालिया चंडाल रो दास हूं। थूं तारामती है, आवात खरी पण थूं महाराणी कोयनी। वामण रे हाथ विकयोडी एक दासी है। अवै उण जूंनी वाता नै भूल जा।" तारा आख्या रा आसूडा पूंछती बोली—"नाथ, ओ आपरो लाड कुंवर धरती सूतो है, थोडो इण कानी तो देखो।" हरिचन्द पूछ्यौ—इणरै कांई ह्वियो? प्राणनाथ ओ दिनूंगै ई वगीचा मे फूल वीणवा गयौ हो, उठै उणनै पान हूंग्यो। रूं-रूं मे जेर रमणा सूं इणरी पंड लीलो छम पडग्यौ है।' तारा लास देखावण नै थोडी आगै आई तो हरिचन्द दो पांवडा लारै सरकग्यौ। वोल्यौ—थारी कैवणी सही है, पण म्हूं अवार म्हारै मालिक रा कांम माथै हूं। मसाण मे मुड़दा नै दाग दियां पे'ली भूंड भाड़ो रो एक रुपियो देवणो पडै़ला। म्हूं इणमे कोई छूट नी कर सकूं। रुपियो दियां पे'ली दाग नी पड़ सकै।' तारा वोली—नाथ रोहित आपरो वेटो पण है, एकली म्हारो इज तो कोयनी। इणरै दाग वास्तै म्हारै खनै काठ कोयनी। सांमला दिगला मे सूं थोडौ घणो काठ देय देवो तो किणनै ठा पड़ै? राजा एकदम रीसावलतो वोल्यौ—तारा, अबार म्हूं थारो पति कोयनी अर नी रोहित म्हारो वेटो है। म्हनै म्हारै फर्ज री पालणा करणी है।' राजा आगै वोल्यौ—

> गर बात तुम्हारी मानूंगा, अपने प्रण से गिर जाऊंगा।
> मालिक से बात छिपा लूंगा, ईश्वर से कहां छिपाऊंगा॥

तारा थूं म्हारै खन्नै रुपिया मांगै है गेली! अठै रुपिया पड़िया है? थू थारा मालिक खनै क्यूं नी मांगै।' तारा रोवती थकी बोली—नाथ, विचार करो! जिणरो हाथ सदा ऊंचो रह्यौ, वा कोई रे हेटै हाथ कीकर माड सकै? मिनख पोतारी इज्जत सागै जीवणो चावै।

जिण लुगाई रे धणी सत्य खातर पोतारो राजपाट छोड दियौ उणरी धण चांदी रा ठीकरा खातर मिनखा रे धकै हाथ लावौ करै तो पछै उणनै धिक्कार है।

राजा बोल्यौ—थारी सगली वाता खरी है पण अठै मोटौ सवाल फर्ज रो है। म्हारौ पोतारौ हक व्है तो म्हूं उणनै फोतका बरौबर ई नी गिणूं, पण ओ तो म्हारै मालिक रो हक है। इण रौ कांई करणौ। मसाण रौ भूंई भाडौ चुकाया विना तो लास नै दाग नी दिरीजै ला।' राणी बोली—म्हारै खन्नै एक साडलौ हो, उण मे सूं आधौ फाडनै म्हे खापण बणाय दियौ अर आधौ म्हारै पंडरी लाज ढाकै है। इण उपरात म्हारै खन्नै कांई कोयनी। अबै आप फरमावौ ज्यूं करूं।' हरिचंद पडुत्तर दियौ—तारा थारै जचै ज्यूं कर पण भूंई भाडौ तो देणौ इज पडैला।' तारा एक झाड रो ओठौ लेयनै पोतारी साडी उतारी अर राजा नै देवती थकी बोली—नाथ, लो आधी साडी इणरी कीमत एक रुपिया जितरी तो होवेला इज।''

इण भात राजा हरिचंद फर्ज री कसौटी माथै खरौ उतरियौ। अबखा बिखा मे ई उणरौ मन चलायमान नी व्हियो। कवि रो ओ कथण सोलूं आंना सही है के फर्ज पालणिया मिनख रो हिरदौ फ़ूल सूं ई कोमल अर वज्र पात ई करडौ व्है—

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि।

एडौ मिनख पोतारे जीव री ई परवा नी करै तो दूजी बातां री तो कांई गिनरत राखैला।

एकर पेरिस नगर मे हुल्लड़ व्हियौ। मेथ्यु डेंजलर नाम रो एक पत्रकार उण हुल्लड री खबरो भेली करणनै उठै पूगौ। हुल्लड़ करणिया भाठ फैंकणा सरु किया। मिलट्रीवालां वानै रोकण री मोकली मैंणत कीवी पण हुल्लड काबू मे नी आयो। सेवट वानै गोलीबार करणौ पडियौ। इण मे डेंजलर रे ई गौली लागगी। पाटा पीड करण नै डाक्टर आयौ। उणै पूछियौ आप पण घायल व्हैगा? वो बोल्यौ—म्हूं इतरौ घायल व्हैगौ हूं के म्हारै लिखणौ ई हाथ कोयनी। डाक्टर बोल्यौ—लिखणौ पडियौ घेड मे, अबै तो आपनै आराम करणौ चाहिजै। पत्रकार बोल्यौ—म्हारै वास्तै सगला सूं सिरै चीज म्हारौ फर्ज है, आराम नी है। म्हूं पत्रकार हूं, अर इण बणाव रो सही-सही हवाल भेजणौ म्हारौ

पे'लौ फर्ज है। इण वास्तै आ कलम लिरावी अर पाना माथै लिखौ—सांझ रा तीन वजनै वीस मिनट माथै मिलट्री गोलीवार कियौ जिण मे तीन जणा घायल ह्विया। अर एक जणा रो मरण ह्वियौ। डाक्टर पूछ्यौ—

मौत कुणरी ह्वी ? जवाव मिळ्यौ—म्हारी ' !
अर इतरौ वोलता पाण हंसौ चालतौ हुवौ।

ओ है फर्ज ! पोतारा फर्ज नै पाळवा रौ आणंद ! जिकौ धणी इणरी पालणा करै, उणनै इज इणरौ आणंद मिळै।

तरवार री धार माथै चालणौ सहल, पण फर्ज रा मारग माथै चालणौ दोरौ। इण अवखा मारग माथै चालणवाळा नै पूरौ सावचेत रेवणौ चाहिजै। 'दसवैकालिक सूत्र' री चूलिका मे कह्यौ है—साधक थूं पूरौ ध्यान राख के थारौ काई काई फर्ज है अर उण मे सूं थें किसा-किसा पूरा किया है अर किसा-किसा अधूरा पडिया है ?

किं मे कड़ किच्च मे किच्च सेस।
किं सक्कणिज्जं न समायरामि।

संसार मे सगळां सूं चोखौ राज किसौ ? इणरी व्याख्या करता चीन देस रा मोटै विद्वान कन्फ्यूसस कह्यौ है के जिण राज मे राजा, प्रजा, पिता-पुत्र, गुरु-चेला अर अधिकारी पोत-पोतारो फर्ज पाळै, वो राज सगळा सूं आछौ है।

सेवट मे छेली वात आ है के जे थे थारा जीवण महान् वणावणौ चावौ, पोतारी आत्मा नै संस्कारी वणा वणी चावौ, मन नै कावू राखणौ चावौ अर बुद्धि नै निरमल राखणी चावौ तो पोत-पोतारा फर्ज नै ओळखौ अर उणरी पालणा तन मन सूं करौ।

卐

५

जीवण रौ परभात

आपणै भारत मे प्राचीन काल सूं ईज जीवण नै सुसंस्कारी वणावण रो रिवाज चाल्यौ आवै है। अठै जिकौ-जिकौ रिसी, मुनि, साधु-संत अर समाज रा आगीवाणी हुवा, उणा सगला संस्कारा माथै खूब जोर दियौ है अर टावरपण सूं इज जीवण मे संस्कार रो पायौ नाखवारी कोसिस कीवी है। अठा तक के मानव जूंण रै सरूपात सूं लगाय नै छेली घड़ी ताई उणा संस्काराी एक हार माला चलाई है। स्मृतिया अर ब्राह्मण ग्रथा मे ए सोलै संस्कारा रै नाम सूं ओलखीजै। भारत मे वीचलौ वखत काईक इसौ आयौ के संस्कारा रो चलण थोड़ौ भाखौ पडग्यौ, छतापण हालताई उणरी छिया मौजूद है। वालक रा गर्भाधान, जन्म, नांम करण, चूडाकर्म, उपनयन अर लग्न विगैरै सूं लगाय नै दूजा उपसस्कार पण वांरै सागै जोडीज गिया है। सस्कारां री इण सगली हार माला रे लारै काई तथ्य हो अर इण संस्कारा रो काई महत्व हो, इण वावत म्हूँ थोडी चर्चा करूंला। इण सस्कारा मे किण वखत अर काई परिवर्तन करणौ चाहिजै, उणरी पण म्हूँ चर्चा करूंला।

मिनख रा जीवण नै जे एक तरैसू न्यारौ करनै देख्यौ जावै तो जाण पडैला के वो सस्कारा रो पिंड मात्र है। मिनख रा जीवण मे सस्कार तांणा-पेटा री गलाई गूंथीजियौड़ा है। संस्कारा रा वावेतर मे जात-पात, देस-वेस के धर्म रा वाडोटिया कठैई नी अडै। पण आ वात सोल आना खरी के सस्कारा रा वीज वालपणा मे इज पड़ै। इण अवस्था सूं इज जीवण री सरुआत व्है। आ जीवण री उगाली आगै जायनै पूरा जीवण नै प्रकास देवै।

ज्ञानी-पंडता रो मत है के जिकौ संस्कार टाबर नैं बाळपणा सूं मिलै वे उमर भर तक कायम रैवै। उणा री छाप मिटै नी। उण वास्तै जे वालपणा सूं इज चोखा सस्कार जम जावै तो बाळक मोटा आदमी गलाई पागरतौ इज जावै। पण उणांरी ठौड जे कदाच खराब संस्कार जम जावै तो पूरी जमारोई ऐहळ परो जावै। जिकौ दुर्गण उण वखत भरीज जावै वे कांई कीधा बारै नी निकळै। उण वास्तै इज नीतिकारां कह्यौ है—

यन्नवे भाजने लग्न सस्कारो नान्यथा भवेत्।
कथाच्छलेन वालाना नीतिस्तदिह कथ्यते॥

नवी ठाम घडती वखत प्रजापत उण ठाम नैं चावै जिसौ रूप रंग के आकार देय सकै है। पण सूक्या पछै के नीवा मे पाक्या पछै उणमे कोई फरक फार नी व्है सकै। इणीज प्रमाणै गर्भाधान पछै अथवा जन्मया पछै बालक नै जिसौ रूप देवणौ चावा देय सकां हां। इण कारण इज पंडता री आ वात साव साची है के इण औस्था मे पटियोड़ा संस्कार कायम रैवै। इण कारण टाबरा नै नैतिक कथावा सुणाय नै वारी मदद सू उणा मे चोखा सस्कार नाख्या जावै।

टाबर रो दिमाग फूल री गलाई कवलौ अर टाबर रो मन सफेद कागद री पाण निरमल व्है। उण ऊपर आपा चावा जिसा सोनेरी चितरांम कोर सका। आपा चावा तो उणा नै मिनख वणाय सका अर आपा चावा तो जिनावर वणाय सकां हा। कारण के कोमल हिरदा मे संस्कार जमता जेज नी लागै। अर ए संस्कार कायम खाता रा व्है। माली कवला डाला नै मरजी माफक वाल सकै। एक अणघड़ भाठा नै सिलावटी चावै जिसौ रूप देय सकै। करसौ पोतारा खेतर मे जिसौ वावै विसौ इज लणै। चोखौ वावै तो चोखौ लणै अर खराब वावै तो खराब लणै। सतान रूपी खेतर मे पण करसा रूपी मा वाप संस्कार रूपी जिसा बीज वावैला, विसाइज फल पावैला। मकान बांधतां वखत आपा पूरौ विचार करां के आपणा केड़ा डिजाइन रो अर कितरौ मोटौ मकान बाधणौ है। आपा उणरौ नकसौ पण पेलाथीज तैयार करनै राखा। पछै ई सौ वरसरो सिलावटौ नै वारै वरसा रो घर धणी। इणीज भात बालक रो जीवण रूपी मेहल तैयार किया पे'ली आपा नै पूरौ विचार कर लेणौ चाहिजै। टाबर नै पाप प्रेमी वणावणौ है के धर्म

प्रेमी ? टावर रे जीवण रो आडांण पेला थीज सोच लेणौ चाहिजै। कोई पण बाप पोतारी संतान नै पापी तो नी'ज बणावणी चावै। पण जे सावचेती राख्या उपरांत अर मैणत करता करता ई जे टाबर पापात्मा जन्मै तो मान लेवणौ के आंपणै विचार, वांणी अथवा आचरण मे कोई खांमी है। जे खामी नी ह्वै तो कपूत पाकै इज नी। श्रुति मे पण कह्यौ है **आत्मा वै जायतै पुत्र.** बेटौ मा बाप रा आत्मरूप सूं इज जन्मै है। कैवत है के "कोठा जिसौ कीटौ अर बाप जिसौ बेटौ।" झाड ह्वै जिसाइज पाटिया ह्वै। अंग्रेजी मे पण एक कैवत है—Such a father, Sueh a Son,

जिण भात रो तांतण लैयनै झीणौ के जाडौ, काचौ के पाकौ, रंगीन के सफेद चावा जिसौ कपडौ वणीज सकै है, उणीज भात जिणतरै रा मा बाप रा आचार विचार अर प्रकृति ह्वै उणीज भात रा टावर पण जन्मै। न्यायशास्त्र मे एक सिद्धान्त है—**कारण गुणपूर्वकोहि कार्य गुणौ दृष्टः**— काम रो गुण कारण रा गुण सूं इज ओल खीजै। जिसौ कारण ह्वैला विसौइज कांम पण ह्वैला। कारण नै काम न्यारा कदैई नी ह्वै सकै। संतान रूपी क्रिया मे पण मा वाप रूपी कारण रा गुण-अवगुण उतर जावै। इण वास्तै इज भला मिनखा रे घर मे पण कपूत पाक जावै। उण वखत प्रकृति रो ओ इज नियम लागू ह्वै। जरै आ बात मांन लेवणी चाहिजै के मा वाप रै आचार विचारा मे काईक खांमी है।

आज रा मानससास्त्री पण आइज बात कैवै के जिकौ रोग मा वाप रे ह्वै, वो इज रोग टाबर रे पण ह्वै। मा वाप री जिसी भावना ह्वै विसाइज वालक पण जन्मै। जिकौ दुर्गुण माईता मे ह्वै वे इज दुर्गुण टावरा मे उतरै।

इण वास्तै टावरा रा जन्म पे'ली माईता नै घणौ ध्यान राखणौ चाहिजै। इण वास्तै इज जीवण रा सोलै संस्कारा मे सूं गर्भाधान संस्कार रो स्थान पे'लौ है। गर्भाधान ह्वै ताई मानै ओ विचार राखणौ चाहिजै के म्हारौ बालक वीर, धार्मिक, तेजस्वी, चरित्रवान अर नीति-वान जन्मै। गर्भ मे पडियौड़ा बालक ऊपर मारै विचारा रो असर जरूर पड़ै।

विज्ञान रा एक प्रोफेसर एलमर ग्रेट से यूनाइटेड स्टेट री राजधानी

वासिंग्टन री एक प्रयोगसाला मे न्यारा-न्यारा सुभाव वाला मिनखा रा स्वास एक काच माथै लीधा । इण मिनखा मे कोई रोगी हो, कोई रीसाळू हो, कोई ईखी करणियौ हो तो कोई दुराचारी हो । काच माथला स्वासा री जांच पडताल सूं ठा पडी के वे सास तरै तरै रा हा । सेवट उण प्रोफेसर नैं कै वणौ पडियौ के गर्भ माय ला बालक पर माता रा जिसा विचार पडै, विसाइज स्वास पण वणै अर इण स्वासा री छिया पण इसीज पडै ।

आयुर्वेद मे पण गर्भ सास्त्र माथै मोकलौ लिखियोडौ है । गर्भवती लुगाई री खुराक अर आचार विचार माथै सागोपाग विचार कियौडौ है । कारण के मा री खुराक अर आचार विचार रो सीधौ असर बालक माथै पडै । ज्ञाता सूत्र मे जूंना जमाना सूं इज गर्भवती लुगाया री दिनचर्या तै कीनौडी है—**तस्स गब्भस्स अणुकंपट्ठयाए** मा पोतारा गर्भ रा पोसण अर रक्षण खातर आहार अर विचारा रे जोगा नियमा रो पालण करती ही । भगवती सूत्र मे पण गर्भ बाबत लिख्यौडी है— केईक बालक इसा ह्वै के वे मारे सद्विचारा अथवा कुविचारा रे कारण जन्मतां पे'लीज मर जावै । वे का तो सुरग मे जावै अर का नरक मे । मारा विचार चोखा ह्वै तो टाबर पण चोखौ जन्मै । जिण भात प्रयोग साला मे वैज्ञानिक रा विचारा माफक इज प्रयोग करीजै अर पाठ साला मे अध्यापक रा विचारा प्रमाणै इज टाबर उछरै, उणीज भात इण गर्भरूपी प्रयोग साला के पाठ साला मे टाबर री घड़ामणी ह्वै ।

गर्भरूपी आ पाठसाला के प्रयोगसाला नव महीना सुधी चालै । नव महीना री इण पढाई मे जिसा संस्कार नाखणा ह्वै, उणीज भात रो आहार अर विचार राखणा चाहिजै । भगवती सूत्र मे आ वात आछी तरिया समझाय नैं लिखी है—गर्भ मांयला बालक सागै मारा सम्बन्ध अटूट है । मारा आहार सू इज टाबर रो पोसण ह्वै अर उणरा अंग वधै । मा हरे फरै आइज टाबर री पण हर फर है । मा स्वासा लेवै वाइज बालकरी पण स्वासा है । इण वास्तै गर्भाधान सूं इज बालक रो पूरौ ध्यान राखणौ चाहिजै । जैन सास्त्रा रा उद्भट विद्वान सताव-धानी पडित मुनि श्री रतन चदजी महाराज 'कर्त्तव्य-कौमुदी' नामरी पोथी मे इण वावत इणभात लिखियौ है -

वाले गर्भगते तदीय जननी चेत्सेवते दीनताम् ।
वालो दीनतरो भविष्यति तदा शूरश्च शौर्य तथा ।

य द्येषा कलह करोति नितरां सा क्लेशकारी तदा ।
तुष्टा स्याद्यदि सा भविष्यति तदा पुत्र प्रसादान्वित. ॥१॥
धर्मं वांच्छति गर्भिणी यदि तदा पुत्रो भवेद् धार्मिक ।
भोगान् वांच्छति चेत्तदेन्द्रिय सुखासक्तो विलासी भवेत् ।
विद्या वांच्छति चेतदा प्रतिदिन विद्याभिलाषी भवेत् ।
सच्छास्त्रश्रवणं करोति यदि सा पुत्रोऽपि तादृग्भवेत् ॥

टाबर गर्भ मे व्है, उण वखत जे मा रे मन मे कायरता के डरपोक पणा री भावना व्है तो टाबर पण विसौ इज जन्मै । मारे मन मे सूर वीरता रा भाव व्है तो बालक सूर वीर जन्मै । मा कजियाखोर व्है तो टाबर पण कजिया खोर व्है । मा हसमुखी रैवै तो टावर ई हसमुखौ जन्मै । मा धर्माचरण वाली (अहिंसा, सत्य, सिरधा, सील, अपरिग्रह नै मानवावाली) व्है तो टाबर पण विसौइज पैदा व्है । मा भोग री भूखी व्है तो वालक ई कांमी जन्मै । अरजे मा रौ मन पढाई लिखाई मे लाग्यौडौ व्है तो टाबर पण विद्वांन बणै । कैवण रो अर्थ ओ इज के जिसी मा व्है, जिसा उणरा आचार विचार व्है, विसौइज टाबर पण जन्मै । गर्भ अवस्था मे जिकौ संस्कार पडै, वे मिटाया नी मिटै ।

महाभारत में अभिमन्यु री सूरवीरता रो हवाल आवै । अभिमन्यु जिण वखत उणरी माता सोधरा रे गर्भ मे हो उण वखत अर्जुण सोधरा नै चक्रव्यूह तोडवा रो भेद बतायौ । वो भेद सोधरां कान लगाय नै सुणियौ अर गर्भ मे बैठै अभिमन्यु पण सुण्यौ । ओइज कारण हो के सोलै वरस रो अभिमन्यु कौरवा रो चक्रव्यूह तोड सक्यौ अर भीस्म अर द्रोणाचार्य जिस्सा वीरां रा पग धूजाय नै छोडिया । इसौ जबरदस्त है गर्भ रूपी पाठसाला रो असर ।

सिवाजी महाराज जिण वखत गर्भ मे हा उण वखत उणां री मा जीजा बाई महाभारत अर रामायण माय नै सूं जुद्ध रो हाल वाचती अर दूजा नै पण सभलावती । इण कारण सूं इज सिवाजी जिसौ नर रत्न उपनियौ । सोलै वरस री उमर मे तो सिंघगढ रो किलौ फतेह करनै मुगल वादसावा रा चक्का जाम कर दिया हा ।

नेपोलियन बोनापार्ट जिण वखत गर्भ मे हो उण वखत उणरी माता पोतारा पति सागै रण खेत मे ही । वा घोड़ा माथै वैठनै

परेड पण करती। नेपोलियन माथै गर्भ सूं इज ए संस्कार पडिया, जिण कारण वो कई लडाइया मे फतेह् कर सकियौ।

हिरणाकस रो बेटौ प्रह्लाद जिण वखत गर्भ मे हो उणरी मा नारद मुनि सूं प्रभुभगती रा उपदेस सुण्या हा। इण कारण सूं इज उणा रे घर मे प्रह्लाद जिसौ भगत अवतरियौ।

मिस्टर जे० सी० बेयर वारी पोथी—'मातृ भावना' मे लिख्यौ है—एक लुगाई रे बालपणा मे इज गर्भ ठैरग्यौ। उणरी साथणिया उणनै आगली आगी करनै चिडा़वण लागी। उणनै घणी सरम आवती सो वा धर मे जायनै रोय बौ करती। उण रा सस्कार टाबर माथै इसा पडिया कै आगली बतावता इज रोवण लाग जावतौ।

एक गर्भवती लुगाई नै मास खावण री अर दूजी नै दारू पीवण री मन मे आयगी। पण वे दोन्यूं पोतारी मसा पूरी नी कर सकी। इण वास्तै उणारा जो टाबर जनमिया वे मासखाऊ अर दारूडिया वणिया।

इण सगला हवाला सूं आ बात उजागर हुई के गर्भावस्था रे वखत मा माथै कितरी मोटी जबावदारी है। उणनै पोतारो आहार-विहार सादो संयम पूर्ण राखणौ चाहिजै। उणनै आपरा विचार चोखा राखणा चाहिजै।

आंपणा मुल्क री आ कम नसीबी है के अठै मावा नै गर्भावस्था वावत कोई सीखामण मिलै इज नी। आपणै अठारी मावा ठोठ है। उणारा घर धणिया नै पण पोतारा धधा-वाडी आगै वखत मिलै कोयनी। इण वास्तै लुगाया नै इण बाबत कोई प्रकार री सीख भलामण आगी नेडीई नी मिलै। वस्ती वधारौ तो कुदरत रो नियम है। इण वास्तै टाबर तो अरडाट करता जन्मै, पण है फगत धरती माथै भारा मावा ठोठ अर अज्ञानी इण वास्तै टाबर जन्मै आलसी, नकामा, ऐदी, चोरटा, कामचोर, परावलंबी अर कायर। जिकी पोतारो पेट ई दोरौ भर सकै उणा सूं दूजारी तो काई आसा करणी। उणा नै हाथ मैणत करता सरम आवै। इसा टाबर मोटा होयनै नौकरिया खातर रखडता फिरै अर सेवट कुर्सी रा राछ वणनै वैठ जावै। नौकरी मे रैवैतो उणारी नीत कामचोरी, रिस्वतखोरी अर हरामखोरी मे इज रैवै। अर जे वैपार मे आवै तो भेल सेल, ओछौतोल, ओछौमाप, चालाकी, दगाखोरी, कालो

वजार अर वेईमानी नै लाग्या रैवै। रिस्वतखोरी अर काली वजार तो आज साधारण वात ह्वेगी है। विस्वासघात अर ठगाई आज मामूली चीजा गिणीजै। इणभात मुल्क रो नैतिकपतन मोकलौ ह्वैग्यौ है।

इण भांत जीवण री सरुआत मे संस्कारा री कितरी जरूरत है, वा आपनै ठा पड़गी ह्वैला। गर्भाधान संस्कार रो मतलब इज ओ है के गर्भ मे रह्योडा वालक नै नीतिवान, धर्मनिस्ठ, चरित्रवांन कर्त्तव्य निस्ठ अर सूरवीर वणावणौ। इण वावत मानै सजाग रै वणौ चाहिजै। पोता रे गर्भ मांयला वालक नै सज्जन के दुर्जन वणावणौ मा रे डावा हाथ रो खेल है। संतान रा लक्खण पे'ली गर्भ मे अर पछै उछरता वखत निगै आवै। माटीरा कोरा ठांम मे जे पे'ली वखत इज घी घाल दियौ जावै तो उणरी चीगट फूटै जितरै ई नी जावै। इणीज भात गर्भ मांयला वालक माथै जिकौ संस्कार पड़ै वे मरै जितरै ई कायम रैवै।

गर्भाधान संस्कार पछै वालक री जनम संस्कार अर पछै दूजा संस्कार होवै। इण सगला संस्कारा पर पूरौ ध्यान देवणौ चाहिजै। आज रो जुग ।विज्ञान रो जुग है। इण जमांना मे जूंना रीति-रिवाज नी चालै। इण जुग मे तो हरेक वात बुद्धिरी कसौटी माथै कसीजै। इण वास्तै संस्कारा री मूल भावना नै निजर मे राखनै कंवला टाबरां नै मारग घालणा चाहिजै। इण मे खास फर्ज मा रो है। इण वास्तै इज आ कैवत है के एक मा सौ गुरुवारी गरज साजै।

पे'लडा जमाना ,मे आर्यावर्त री मातावा इण वात री पूरी सोजी राखती के उणारा टावरां मे चोखा संस्कार पडै। अर वे खोटा संस्कारा सूं आघा रैवै। कारण के चोखा के फोरा संस्कार घर सूं इज मिलै। इण वावत म्हनै एक ऐतिहासिक कथा याद आवै।

जयसिखर रो वेटौ वनराज चावडौ महान जोधारथ राजा हुवौ। उणरा पराक्रम सूं आखा राजपूताना मे हाहाकार मच्योडौ हो। मारवाड रा राजावा विचार कियौ के आपणै अठै पण वनराज जिसौ राजा जनमै तो मुल्क निहाल ह्वै जाए। ओ विचार करनै उणां एक हुँसियार वारठ नै वुलायौ अर कह्यौ के वारठजी जचै ज्यूं करौ पण किया ई करनै जयसिखर नै अठै लेयनै आवौ। उणनै कोई जोगी कन्या परणाय दांला। जिण सूं वनराज जिसाईज सूरवीर पैदा ह्वैला।

बारठ मारवाड सूं रवानै होय नै धर मजलां धर कुचला करतौ पाटण री प्रोला पूगौ। जयसिखर नै खम्मा घणी अरज करनै विडदावली वखाणण लाग्यौ। विडदावली सुणताइज जयसिखर रो मन रीझग्यौ। वो बोल्यो– मागौ बारठ जी, थारी मंसा व्है जिकीई मागौ।" बारठ बोल्यौ—अंदाता, म्हारी मंसा इज पूरी करणी व्है तो आप राज पाट थोडा दिना खातर अधिकारिया नै सूंप नै म्हारै सागै मारवाड पधारौ। जयसिखर दुविधा मे पडग्यौ। वो बोल्यौ—बारठजी काई दूजौ मागौ- धन, दौलत जागीर। पण बारठ तो नटियौ सो नटियौ ई। सेवट जयसिखर नै बारठ रे सागै मारवाड कानी रवानै होवणौ पडियौ। उणै मारग मे चारण नै पूछियौ—बारठजी महाराज! भेद री बात तो बतावौ आप म्हनै मारवाड ले जावौ क्यूं हो? चारण वोल्यौ—जी, म्हानै वनराज जिसा सूरवीर मारवाड मे पैदा करणा है, इण कारण आपनै तकलीफ दीवी है।'

बारठ री बात सुण नै जयसिखर हस्यौ अर बोल्यौ केडीक भोली बात कीवी है। वनराज जिसा सूरवीर पैदा करणा कांई म्हारै एकला रे हाथरी बात है? वनराज री सूरवीरता रो पूरौ जस उणरी सुसंस्कारी मा नै है। बारठ हाथ जोड नै बोल्यौ—महाराज, मारवाड मे आप जोग कन्यावा रो काल कोयनी। एक-एक सूं आगली बैठी है। जयसिखर वोल्यौ—बारठजी कन्यावा तो मोकली व्हैला आ बात म्हूं मानूं, पण हरेक कन्या सूं ओ काम भरै पडै सकैला म्हनै विस्वास कोयनी। म्हैं थानै मूंडा सू माग्यौ दान देवण रा वचन दियौडा है, इण वास्तै थारै सागै चालूं हूं, पण मारवाड मे वनराज री मा जिसी कन्यावा नी मिल सकै। इण वास्तै चाल्या सूं थारौ काम भरै पडणौ मुस्कल है। बारठ थोडौ ठैरनै बोल्यौ ऐडी पछै वनराज री मा केडीक ही। जयसिखर बोल्यौ - वनराज री मा केडी ही, म्हैं थानै अबै काई बतावू। म्हैं आपनै उणरै जीवण रो फगत एक प्रसंग सुणावू। उणसू आपनै ठा पड जावैला के वा केडीक ही। वनराज जिण वखत छ महीना रो हो, एकर म्हूं राणी रा मेहल मे गियौ। उठै म्हैं आपरोल मे राणी सूं मसखरी करण लागौ। राणी रीसां बलती तुरत वोली—थानै पार का पुरख रे सांम्ही यूं गेलाया करता सरम नी आवै? इण सूं उणरै जीवण माथै केड़ा खराब संस्कार पड़ैला अर आगै जावता इणरौ जीवण नस्ट व्है जाएला। म्हैं हसनै कह्यौ—हाल तो ओ फगत छ महीना रो

वाल है, ओ काई समझै ? अवोध वालक ए संस्कार कीकर धारण कर सकैला ? राणी वोली—आप इण वालक नै अज्ञानी मत समझौ । ओ वोल नी सकै, पण दूजी सगली वातां समझ सकै । इण उपरांत ई थे इणनै पारकौ पुरख नी गिणौ ।' पण उपगत ई म्है कोई गिनरत नी करी । उण वखत वनराज आपरौ मूंडौ फेरनै सूयग्यौ । राणी वोली—देखलो, आप जिणनै वालक केवता हा उणै पोतारौ मूंडौ फेर लियौ है । म्हारी एक आखडी ही के म्हूं पारका पुरख सामा उघाडी नी होवूं । पण आप आज म्हारी उण आखडी नै तोड नाखी । म्हूं संसार मे मूंडा वतावा लायक नी रही ।' इतरौ तो केयनै राणी तो जे'र खाय लियौ अर पोतारो जीव दे दियौ । इसी ही वा वीरांगना ! थारै मारवाड मे है कोई इसी कन्या ! चारण आवात सुण'र गतागम में पजग्यौ । वो वोल्यौ—महाराज, म्हारै देस मे इसी कन्या मिलणी दोरी है । आप जो फरमावौ के इसी कन्या मिलया सूं इज वनराज चावडा जिसौ वेटौ जन्मै तो आप पाछा पधार सकौ हो । म्हनै माफ कराइजौ । जयसिखर पाछौ पाटण रवानै ह्वैग्यौ ।

संस्कारवान मा रो जीवन इसौ ह्वै । आज काल रा मा वाप चावै के म्हारै हडुमांन जिसा वीर वालक जन्मै । पण वे सती अजना अर पवनकुमार री गलाई संजम अर ब्रह्मचर्य पालसकै काई ? आज रा नवला, कायर, विलासी अर ना जोगा मा वाप तो खूटौड़ा वालक पैदा करनै भारत माता माथै भार जरूर वधारै । इण उपरात काई नी करै ।

संस्कारा रे नाम माथै वे टावरा नै काई नी देय सकै । उल्टा कायरता अर विलासिता रा कुसस्कार वानै जनम गुटकी साथै का इज मिलै । जिण वखत वालक आडौ झेलै, काम री वखत फोडा घालै अर नी ऊंघीजै, उण वखत घणखरी मावा केवै के वो देख वावौ आयौ, वो देखा हाऊ आयौ, कान काप नाखैला, खाय जाएला । छांना माना पडियौ रै, नी तो पकड नै ले जाएला । इण भांत वे टावरां मे डरपोकपणा रा संस्कार वां मे सरुपात सू इज नाख देवै । ए सस्कार मोटा ह्वियां पछैई नी मिटै । इण उपरात कई मावा टावरा नै गाला काठै अर वांरा उत्साह नै तोड नांखै । यूं टावर, टावर है पण पोतारा मान-अपमान मे वो ई आछी तरिया समझै । आगै जायनै उणरी घणी खराव असर पडै । कईक टावर मोटा होयनै मा वाप नै मारकूट करै । उणरै मूल मे मा वापा वायौडा वीज इज ह्वै, जो

धीरे धीरे जे'री भाड वणै । कई मा-बाप टावरा में सरुपात सूं इज वासनावा रा खराव संस्कार नाखै । वे टाबर नै पूछै—बेटा, थारै बिनणी कीसी क लावा । काली के गोरी ? मा बापा नै ओ ध्यान कोयनी रैवै के वे किसाक संस्कार नाखैरिया है । कई टावर मा-बापा रे देखा देखी गाला-राला बोलणी सीख जावै । कई मावा टाबरा नै कूतरा-मिनका नै मारणा सिखावै अर वा मे हिंसक संस्कार नाखै । कई मावा टाबरा मे देवी-देवता, भूत-प्रेत, अर मंत्र तत्र माथै अधश्रद्धा पैदा करे । कई मा बाप इसा खूटौडा व्है के वे टाबरा रे निजरा आगै इज सूगली हरकता करै । हिसाब सू तो गर्भाधान सूं लगाय नै टाबर वो बौ चूं'घै जित रै मा बाप नै सजम सूं रैवणौ चाहिजै । पण वे संजम पालै नी, इण कारण टाबरा माथै इणरौ घणो खराव असर पडै । कई मा बाप पोतैई नसाबाज, रुलियार अर कूडचा व्है, वे टाबरां नै कांई सिखावै ? कई मा बाप टाबरां नै कूडा, सफा कूड़ा थथोबा देवै । टावर रोवण लागै जरै उणनै शात राखण खातर कैवै के म्हारा बेटा रे लाडू लावाला, म्हारी टीपूडी नै पईसा देवाला म्हारा गटगूडा रे मोटर लावाला । पण लेवण देवण नै हर रा नाम । इसा कूडा थथाबा रो टाबरिया रा कंवला मन माथै घणो खराब असर पडै । टाबर इण सूं तूंड मिजाजी बण जावै । इण वास्तै या तो टाबर नै कोई चीज देवण रौ कैवणौ नी अर जे कैवणौ तो जबान नै पार पाडणी चाहिजै । कूडा थथोबा सूं टाबर माथै चोखौ असर नी पडै ।

इसा मा बाप पण मोकला ई है, जिकौ पोते तो अहिंसा, सत्य, सजम के सदाचार रे सँ ढै ई नी वैवै । इण बाता सूं ओलखाण ई नी राखै । पण पोतारा टाबरा नै धार्मिक क्रियावा रा पाठ गोखावै नीरस वखाण सुणावै अर इण भात वानै सस्कारी बणावण री मैंणत करै । पण संस्कार इतरा सेज अर सस्ता कोयनी । पण अफसोस री बात आ है के इण जमांना मे सस्कारां खातर सस्ता उपाव सोचीजै । मा बाप टावरां नै वाल मदिर पाठमाला के महाविद्यालय मे भर्ती कराय नै निरांत सूं वैठ जावै । वे जाणै के आपणी तो जवावदारी पूरी व्हैगी । पण ओ उणारो थोथो भरम है । आजरी पाठसालावा टाबरा नै चोखा संस्कार देवैला ! राम-राम भजी । आ वात जरूर है के उठै जायनै टाबर कई नवा-नवा कुलखण, कुलंगाया अर कुटेवा जरूर सीख जावैला । इण जमाना मे विद्यालया सूं चौखा सस्कारा री आसा राखणी, ग्वार मे

सूं तेल काढणौ है। आज रा घणखरा मा बाप तो फगत आ चावै के दीकरौ विद्यालय सूं डीग्री लेय नै पैसा कमावण लायक ह्वै जावै। मा बापा नै दीकरा रे चरित्र, सच्चाई के इमानदारी सूं कोई लेणौ देणौ नी है। बस फगत वो तो कमाऊ ह्वैणौ चाहिजै। कमावौ भलाई कोई तरीका सूं। उणारी तो फगत मंसा एक इज रैवै के उणारौ बेटौ वेगा सूं वेगौ पैसौ भेलौ करण लागै। इण वास्तै छोकरौ थोडौ सीक मोटौ ह्वै के उणरी सगाई कर देवणी, जिण मे टीकौ के डोरौ लेयनै उणनै वेच देवणौ। आ नीत वारी रैवै। ओ एक नवौ धंधो सरू ह्वियौ है। इण मे नीं तो रकम रोकवारी जरूरत है अर नी कोई मैंणत करवारी जरूरत है। छोकरी रे बापरी गरज अर उतावल देखनै उण सूं मोकलौ धन लेवणौ, सगलां सूं सेज धंधौ है। इण भांत मा बाप वजार मे पोतारा बेटा नै ऊंचा सूं ऊंची कीमत मे बैचण री कोसिस राखै। पण इण वातां रो बेटा रै मनमाथै घणौ खराब असर पडै। इण सूं लडका मे हराम रो खावण री नीत वध जावै। जूना जमाना मे तो पोतारो टाबर कठैई वारै जाव तौ जरे मा बाप उणनें आ सीख देवता के दीकरा कोई चीज धांमै तो ई लेवणी नी। पण आज वात सफा उल्टी ह्वैगी है। ओ मूंधीवाड़ा रो जमानौ अर आ टाबरा री फौज ! आज समाज रो पूरो ढांचौ ई धन दौलत माथै मंडियोड़ौ है। समाज मे मिनख री कीमत नी है। धन री कीमत है। धन रे लारै मिनख री कीमत आकीजै। कोई मिनख मे सच्चाई, इमानदारी, हुंसियारी बिगैरै मोकलाई गुण ह्वौ पण धन बिना सगलाई थोथा है, वेकार है। इण वास्तै जे विचार कियो जावै तो इण सगला वखेडा री जड ओ समाज है। मा बापा रो इतरो कसूर नी है जितरौ समाज रो हैं। समाज मे सूं जठा ताई थोथी मान तावा, खोटौ मूल्याकन अर वेढगी रीत-भात नी मिटै उठा तक खराव संस्कार पण नी मिटै। अर चोखा सस्कारां रो प्रचार नी वधै।

इण भात आज सगला समाज मे खराव संस्कार फैल्यौडा है। जठा सुधी उणा मे सुधारौ करवा में नी आवै उठा तक कोई कुटुंब उणा मे सुधारौ कीकर कर सके।

आज समाज मे च्यारूं मेर अन्याय, अनीति, असत्य, लाच रिस्वत अर हरांम खोरी रा वारा वरतारा है। कोई मा वाप जे पोतारा टावर मे चोखा संस्कार जमावण री कोसिस करै तो समाज वानै उखेलनाखै।

विवाह वाजन मे मिनख अणूंतौ खरचौ करै अर गामडा मे तो ओ रोग वधतौ इज जावै है।

धर्म रा क्षेत्र मे पण मोकला इसा खराब रिवाज है के जिकौ टाबरा माथै खराब असर नाखै। इण रिवाजा मे फेर फार करणौ जरूरी है। नी तो नवी पीढी मे धार्मिक संस्कार मिट जावैला। एकर की सिरधा खतम ह्विया पछै वा मे पाछा संस्कार नाखणा घणा दोरा है।

राजनैतिक क्षेत्र मे तो जाणै आछा संस्कारा रो काल इज पडग्यौ है। आगलिया माथै गिणै जितरा छटवा छंटवा नेतावा नै छोड नै जे निजर फेरा तो रामजी राजी अर झालर वाजी। सगलाई भाईडा पोतारा खीसा गरम करनै रोटै राग करण मे लागौडा है। जांणै हेर बूडौ पाछी कुरसी आवैला के नी आवैला, काई ठा, सो लूटा जितरौ ई आपणौ अर आपणै बापरौ है। मुल्क जावै खाडा मे। उगरी वानै कोई परवा नी है। अबै जिकौ अंगा ई ईमांनदार नेता है, वाने घणी चिंता है, पण कागला चाफेर काला इज दीसै जरै कांई करै। कूआ मे भाग पड जावै उणरौ काई इलाज ह्वै। आतो डेमोक्रेसी (जनतंत्र) कांई जोणै डेमनक्रेसी (दानवतंत्र) आयगी। कोर्ट कचेडिया, अर दूजा सगला सरकारी महकमा भ्रस्टाचार अर बेईमानी मे गरक ह्वियौडा है।

वेपारी खातारी तो बात ई नी करणी। काली बजार, दगाबाजी, भेलसेल, व्याजखोरी अर हरामखोरी तो उठै मामूली बातां है।

वकीलात, डाक्टरी अर वैद्यगी जिसा धंधा मे तो सस्कारा अर सद्गुणा नै जाणै देवटौ मिलग्यौ है। आज सेवाभाव रा संस्कार तो कोई वेपार, धधा, कला के नौकरी मे तो रह्याइज कोयनी। समाज रा कोई खूंणा मे सेवारी थोडी घणी भावना लाधै तो उठै पण नामवारी अर प्रतिस्ठा री भूख लारै लाग्यौड़ी रैवै। सेवा पण प्रतिस्ठा मेलववा रो एक साधन वणतौ जावै है।

लारै रह्यौ आध्यात्मिक क्षेत्र, सो वो पण संस्कारा रो केन्द्र रह्यौ नी। उठै पण साप्रदायिकता, जातीयता, अधभगती, पडपूजा अर पथवाद जिसा अलेखू अवगुण मौजूद है। अखंड मिनखपणा रा सस्कारा रो तो जाणै लोप इज ह्वैग्यौ है। मिनखपणा रा सस्कारा मे जातिवाद, संप्रदायवाद, प्रातवाद, भासावाद, रगवाद के अध रास्ट्रवाद रो कठैई नांम ई नी होवै।

जूंना जमाना रा समाज रो घडतर करण वाला तत्व आज झांखा पडग्या है। उण जमाना मे जिण वर्ण रा मिनख त्याग, सेवा, सच्चाई अर ईमांनदारी सूं पोतारी जमारी वीतावता, उणीज वर्णवाला आज लोभ असत्य, आडंवर, अज्ञांन अर विलास री मूरता वण्यौडा है। उठै तो अवै चोखा मस्कारा रो तल्लौ-मल्लौ ई कोयनी। उण जमाना मे वर्णव्यवस्था जुगा-जुगां तांई चाली उणरो कारण ओ के व्यवस्था मुसंस्कारा रा पाया माथै जन्यौडी ही। वे पाया अवै हिलग्या है। आज वर्ण व्यवस्था संस्कारा पर नी चाल नै जनम माथै चालै है। पे'ली वर्ण व्यवस्था रे सागै जो त्याग अर सेवारी भावना ही उणरी लोप व्हैग्यौ है। पे'ली 'सस्कारात् द्विज उच्यते' कैवीजतौ उठै आज 'जन्मत द्विज उच्यते' मानीजै। उण जमांना मे संस्कारां रो इतरौ महत्व हो के जठा तक कोई आदमी गुरुकुल मे रैयनै विद्या नी पढतौ अर पोतारी योग्यता नी वतावतौ, उठा तक वो सस्कारी नी वाजतौ। जनम सूं तो हरेक मिनख नै सूद्र मानता। पछै रुचि देखनै गुरु कुल मे उणनै उणीज भात री सिक्षा दिरीजती अर गुरु उणरौ वर्ण मुकर करतौ। उणरै पछै द्विज गिणीजतौ। द्विज सवद रो मतलव इज दूजौ जनम है। पण आज वा सगली व्यवस्था गडवड व्हैगी है। पण इतरी व्हैता छतापण हालताई संस्कारा री कीमत तो वारी वा इज है। उणमे कोई कमी नी आई है।

ओ कायदौ है के जिण चीज की जितरी कमी व्है वा चीज उतरीज मूंघी व्है। आज रा जमांना मे चोखा संस्कारा री घणी कमी है, इण वास्तै इज वारी कीमत घणी ऊंची है। आज रा जुग नै संस्कारी रूप वन रो कसौटी जुग कैय सका।

इतरी व्हैता छताई आपा नै हीणौ दाव नी देवणौ चाहिजै। इणरै वास्तै कोसिस करणी चाहिजै। घर मे वालका नै चोखा सस्कार मिलणा चाहिजै। मा वापा सूं आपा नै इतरी उम्मीद तो करणीज चाहिजै। चोखा संस्कारां री राग जे टावर पणा सूं इज नाखदी जावै तो आगै जाय नै वा पुख्ता वणै।

महाराणी मदालसा रो नाम तो आप सुण्यौ इज व्हैला। महाभारत मे वा एक जोगी मा रे रूप मे ओलखीजै। मदालसा पोतारा सात दीकरा नै पालणा हिडावतां वखत इज वैरागी वणाय दीना हा। वा टावरा नै हालरियौ गावती जरै उण वखत इण भात गावती—

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरजनोऽसि
ससारमाया परिवर्जितोऽसि ।
संसार स्वप्नं त्यज मोहनिद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम् ।।

हे बेटा, थूं सुद्ध है, थूं बुद्ध है थूं निरंजन है, थूं परमात्मा रो पवित्र अंस है। थैं संसार री मोहमाया छोडियोडी है। ओ संसार एक सपनौ है। इण संसार मे थूं परमात्मा रा अंस रा रूप में आयौ है। इण वास्तै थूं इण ससार रूपी सपना नै छोडनै इण मोह रूपी निद्रा नै त्याग दे।

सरूपात सूं इज इसा संस्कार मिलण सूं मदालसा रा सातूं बेटा मोटा होय नै लूंठा त्यागी अर वैरागी बण्या। टाबरां रा बाप राजा नै घणी चिंता हुई। उणै पोतारी राणी नै कह्यौ—राणी थैं सातूंई बेटा नै त्यागी अर वैरागी बणाय दीना। अबै म्हारा इण राज रो वारिसदार कुण बणैला। राजा बिना राज मे रुलियारौ फैल जाएला। इण वास्तै म्हनै चिंता व्है है के सेवट ओ राज संभालैला कुण ?' राणी हंसती थकी जवाब दियौ—'नाथ! आपनै इण खातर चिंता नी करणी चाहिजै। अबकालै म्हारी कूख सूं जिको बेटो जनमैला, उण मे म्हूं इसा सागैडा संस्कार नाखूला के वो न्याव अर नीति सूं प्रजारी पालणा करैला।' आपनै या सुणनै अचभौ व्हैला के मदालसा रो आठमौ बेटौ एक नीतिवान अर प्रजापालक राजा बण्यौ। मदालसा पालणा मे सूतौड़ा बेटा मे ए संस्कार नाख दिया हा।

ओ है असली मारो पे'लौ फर्ज। जनम देवण मात्र सू मारो फर्ज पूरौ नी व्है। टाबरा नै ढंग सर सिक्षा देवणी अर वा मे चोखा संस्कार भरणा ओ मा रो इज फर्ज है। मानै इण फरज रो पालण करणौ इज चाहिजै। मारवाड री वीरागनावा टाबरा नै किण भांत हालरियो गावती थकी वीरता रा संस्कार नाखती, उणरौ नमूनौ इण भात है—

वालो पाळ्या वाहर आयो, माता वैण सुणावै यूं
म्हारी कूंख सिराहिजै रे वाला, म्हूं थनै सखरी घूंटी दू ।
गोदी सूतो वालो चूंघै, माता वैण सुणावै यूं
धोला दूध मे कायरता रो, कालो दाग लगाइजै ना ।
सोवन पालणै वालो झूलै, झोलत-झोलत वोली यू
उतरी वार हिलाइजै रे धरती, जितरा म्हू थनै झोला दू ।

आजरा जुग मे इण भांत संस्कारा री चिंता करण वाली मातावां कितरीक है। मा वां जे गेहणा-कपड़ा रो मोह ओछौ करनैं, वालका रे संस्कारा कानी ध्यांन देवती व्है तो ओ कांम कोई अवखौ नी है। हालरिया अर भजनो रे सागै टावरा मे आछा संस्कार नाखणा मा रे हाथ री वात है। मावां कांई नी कर सकै ? महासती मदनरेखा पोतारा टावरां मे आछा संस्कार नाखवा खातर कितरौ त्याग कीधौ, कितरौ विखौ भोगवियौ। मदनरेखा रो नाम आंपणा मुलक रा इतिहास मे अमर है। महासती सीताजी पोतारा वेटां लव-कुस नै आश्रम मे उछैर नै मोटा किया। पण उणा मे जो संस्कार नांख्यौ वांनै देख'र संसार अचूंभै रैयग्यौ।

इण कांम मे मावां रे आगै पण कई अडचणा आवै। पण वानै पोतारे मन मे त्याग री भावना राखणी चाहिजै। दुखा ने सैन करण वास्तै थोड़ी हिम्मत चाहिजै। कारण के आ पोतारे धर्म री पालणा है। इण वास्तै अड़चणां नै आवकारिया सिवाय दूजौ कोई मारग इज नी है। टावरा मे संस्कार नाखतां वखत मा वापा मे साम्हां पे'ली अड़चण जिकौ आवै वा आ है के मिनख मे तीन तरैरा संस्कार प्रवल व्है। एक पेला भव रा, दूजा मा वापा अर कुटुम्व रा अर तीजा समाज रा। पेला भव रा अर समाज रा संस्कारा नै मिटावणा घणा दोरा है। पण घर रो वातावरण जे चोखौ व्है तो ओ कांम इतरौ दोरौ नी है। पण मा वापां नै त्याग, सेवा अर सयम री मूरत वणनै टावरा सामी एक दाखलौ उभौ करणौ पड़ैला। इण काम मे जे गफलत राखी तो मामलौ गडवड़ व्है जाएला। इण वास्तै पूरी सावचेती राखणी चाहिजै। धीरप सूं कांम लेवणौ पडैला। समाज मे जिकां कुसंस्कार वलियौडा है वागै लारै पडणौ पडैला। इण भात चालवा सूं इज— देवगुरु जणणी संकासा—देवतावा अर गुरुवानी मा जिसी वण सकै। एक कवि मां नै चेतामणी देवता कह्यौ है—

जणणी जणै तो भगत जण, के दाता के सूर।
नीं तो रेहीजै वांझणी, मती गुमावौ नूर॥

मावा खातर कितरी मोटी वात वताई है। मा वाप जे इण भात आछा सस्कारां रो 'दानयज्ञ' करण नै तैयार व्है तो कुदरत पण जरूर वांरी मदद करै। धर्म गुरु पण वारा त्याग अर तपस्या नै टेकौ देवै। पण इण वात री सरुआत घर सूं व्हैला।

आछा संस्कारा री पालणा इण भात सरु ह्वैणी चाहिजै—(१) संकलप, (२) टेव (३) सुभाव अर (४) संस्कार। सवसूं पे'ली तो मा बापा नै पोतारै मन मे ओ डिढ संकलप करणौ पडैला के आपानै टावरा मे आछा संस्कार नाखणा है। इण वास्तै त्याग, तपस्या, धीरज अर संजम सूं काम लेवणौ पडैला। डिढ संकलप विना कोई पण काम पार नी पडै। इण वास्तै सवसूं पे'ली तो आ प्रतिज्ञा लेवणी पडैला के म्हे संकलप सूं डिगाला नी। इणरै पछै मा बापा नै पोतारी इसी टेवा पाडणी पडैला के जिणा नै देखनै टाबरा माथै चोखौ असर पडै। मा बापा री कोई टेव सूं जे टावरा ऊपर खराब असर पडती दीसै तो उणा नै वा टेव छोड देवणी पडैला। टावर मतैई चोखी टेवा सीखै इण बात री पण पूरी तौर सूं निगेदस्ती राखणी पडैला। जे आजु-बाजु रा वातावरण सू टाबरा माथै खराब असर पडतौ ह्वै तो वातावरण बदलवा वास्तै कोई दूजी ठौड जावणौ पडैला। धार्मिक स्थानां के सभावा मे टावर नै लेजावणौ पडैला।

इण भात चोखी टेवा पडिया पछै बालका रो सुभाव मतैई आछा सस्कारा कानी वलवा लाग जावैला। पछै तो मा बापा री आधो दैण ओछी ह्वै जावैला। टाबरा रे सुभाव रो घडतर एक वार ठीक ह्वै जाए तो वा मे चोखा सस्कार मतैई आय जावैला। मा बापा रो जीवण पण त्याग अर तपस्या सूं पूरण ह्वै जाएला पण सजाग तो रैवणौ पडैला इज।

इण भात जे टाबर पणा सूं इज आछा संस्कार पडै तो वे आखी उमर कायम रैवै। आछा सस्कार पाडणा कोई टावरा वाला राम किया कोयनी। उण वास्तै भोग देवणौ पडै। त्याग, संजम अर धीरज विना सगली वाता थोथी है।

यूं देखा तो संस्कार पलटवा वास्तै काई घणौ जोर नी घडै। फगत द्रिस्टीकोण वदलणौ पडै। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान न्यारा नी हुवा जित रै इण धरती माथै सरीखी मालकी ही। उण जमीन मे आज ई कोई फेरफार नी हुवौ। जमीन तो ही जिसी री जिसी इज है अर ही जठै री जठै इज है। फगत मिनख री भावना मे फरक पडियौ है।

पाकिस्तान वाला कैवै के पाकिस्तान म्हारो मुल्क है अर हिन्दुस्थान वाला कैवै के हिन्दुस्थान म्हांरी वापीकी है। इणरौ कारण ओ के

मांनखा रे जीवण मे फेरफार हुऔ है। इण भात संस्कारा मे फेरफार लावण सारू जीवण मे फेरफार लावणौ पड़ै। पण जो जीवण मे फेर-फार नी आवै अर फगत धरती, धर्म, जात-पात के देस मे फेरफार कियौ जावै तो उणा रो एक लगार ई असर नी पडै। मानखा री जो अंदरूणी विरती है, उण में जो फेरफार नी आवै उठा तक जीवण मे ई कोई भांत रो फरकनी पडै। अर जीवण मे फेरफार नी ह्वै जितरै संस्कारा मे ई कोई फरक नी पडै।

कोई मिनख नै जे कह्यौ ह्वै के खेतर मे सूं कपास वीण नै पेरले तो आ वात किया वण सकै? इण कपास सूं सूतर कातीजै, सूतर रो कपडौ बणीजै अर कपडा रो पेरण के कोट सीवीजै, जरै इज वो पेरवा मे कामै आवै। इण कपडा रे ज्यूं जीवण मे पण आछा सस्कार पडिया पछै इज जीवण उपयोगी वण सकै। संस्कारा बिना री मानखा जूंण सफा नकामी है। इसी जीवा जूंण सूं नी पोता रो कल्याण ह्वै अर नी संसार रो। मानख जीवण रा मोटा आगी वाण भगवान महावीर कह्यौ है—

'असखय जीविय मा पमायए'

हे हुंसियार मिनखां, जठा तांई थारौ जीवण विना संस्कारा रो ह्वै, उठा ताई आलस मत करजौ। संस्कारी जीवण री चोटी लग तो कोई वीतरागीज पूग सकै, पण कोई वैरागी के सद्गृहस्थी रो जीवण पण आछा संस्कारा सूं भरपूर ह्वै।

मिनख रो जीवण संस्कारी वणै जरै त्याग, वैराग, धर्मपालण अर आध्यात्मिकता पण जीवण मे आवै। इण सूं जीवण इसौ वणै के वो पोतारौ अर दूजा रो पण भलौ कर सकै।

एक चित्रांम वणावणियौ चित्राम वणावै जरै पे'लौ पे'ल फगत लकीरा इज खांचै। इण लकीरा कानी कोई ध्यान नी देवै। कारण के खाली लकीरा कोई नै प्रेरणा नी दे सकै। पण वो इज चित्राम जद रंग अर रेखावा सूं पूरण होयनै मिनखां रै निजरा आगै आवै तो लोग उणनै देखण खातर-टूटा पडै।

इणीज भांत खेतर मे उभौडौ धान मिनख रे खावण लायक नी ह्वै। उणनै वाढणौ पड़ै, लाटा मे लेजाय नै गा'णौ करणौ पड़ै, उपणणौ पडै, आछा धान नै पीसणौ पडै अर इणरै पछै उणरी रोटी

बणावणी पडै । जरै वो धान मिनख रे खावा लायक वणै । कैवण रो मतलब ओ के इतरा सस्कारा पछै धान खावा लायक ह्वै ।

इणीज भात कोई मकांन रा फगत भीतडा उभा किया जावै । नी तो उण मे चूनौ सिमेट हुओ ह्वै, नी वारिया दरवाजा लागा ह्वै अग्नी दादरौ– अंगासी वणिया ह्वै । तो इसी मकान काई कांम रो ? मकांन तो सगला सस्कार पूरा हुवा पछै इज काम रो ह्वै सकै ।

इणीज भात फगत साढा तीन हाथ री मांनखा देही धारण कीना सूं काई नी ह्वै । उण मानखा देही मे जठा ताई चोखी टेवां, आछौ सुभाव अर चोखा सस्कार नी ह्वैला उठाताई वा कोई कामरी नी ।

मोटौ हुवा पछै पण कोई मिनख चावै के म्हैं आछी टेवा अर चोखा सुभाव सूं संस्कारी वणूं तो वो लाग राख्यां सूं वण सकै है ।

इतरौ विचार किया पछै अवै आप आछी तरिया समझग्या ह्वैला के मानखा रे वास्तै आछा संस्कार कितरा जरूरी है । जीवण मे आछा सस्कार नी होवण सूं कितरा गोटाला ह्वै, कितरौ रुलियारी माचै, आ वात पण आप भली भात समझग्या ह्वौला । आछा संस्कारा विना मिनख जमारौ इज रेल है । यारे विना नी तो जीवण मे साचौ झणकार पैदा ह्वै अर नी जीवण मे साचौ प्रकास आवै । भाग फाटै, पछै इज तो दिन री उगाली ह्वै । आछा सस्कारा रो जीवण मे झाझरकौ हुया विना उण मे धर्म, रास्ट्र, सस्कृति अर सभ्यता रो सूरज उगै आ बात असक्य नी तो अबखी जरूर है ।

इण वास्तै आंपा नै पोतारे जीवण रो पूरौ ध्यांन राखणौ चाहिजै । उण मे आछा सस्कार नाखणा चाहिजै । जिण भांत एक धोबी पे'ली कपडा धोवै, पछै उणा मे कडप दे अर सेवट उस्तरी करै । उणीज भात पे'ली आपा नै आपणा जीवण नै सुद्ध करणौ चाहिजै, पछै आछी टेवारी पाण देवणी चाहिजै अर सेवट उण माथै आछा सस्कारा री उस्तरी करणी चाहिजै । पछै देखौ आपणौ जोवण कितरौ प्रकासमान, कितरौ परोपकारी अर कितरौ कल्याणकारी बण जावै ।

卐

६

मन रौ मरम

भारत री भोम अनादि काल सूं आध्यात्मिक विद्या री लीला स्थली रही है। आपणा रिसी मुनिया रो अध्यात्म प्रेम संसार मे सावो है। अध्यात्म विद्या रा जितरा गुण अठारा मिनखा गाया है, उतरा दूजा कोई देस रा मिनखा नी गाया। ओइज कारण है के इण भौतिक जुग में जनमियौडौ अठारौ मिनख पण संजम, तप अर आराधना रा अबखा मारग माथै चालण रो मन करै। जरै मन रूपी मतंग, विसय रूपी वन मे निसंक मालवा रो मन करै उण वखत उणरै माथा माथै ज्ञान रूपी अंकुस मेल नै उणनै रोकै। जद कान फूटरी-फूटरी अपसरावा रा मीठा गीत सुणवा खातर उतावला व्है तो विवेक वांनै रोकै। जद आख्या नाच जोवा अर सिनेमा देखवा फाफा मारै तो विचार उणनै कन्ट्रोल मे राखै। जद नाक फूला अर अंत्तर री सुगंध वास्तै वरडका वावै तो विवेक सूं उणनै दूजै मारग घालै। जद सरीर कवली कवली चीजां नै परस करण सारू उतावल करै तो ज्ञान सूं उणनै वस मे राखै। इन्द्रिया जिण वखत विकार कांनी दौडै तो वानै रोकनै राखणौ सेहज काम नी है। इण वागा नै जठा ताई दूजा कानी नी वाली जै जीवन मे आगै नी वधीजै। आछौ संकलप आगै वधवा रो पे'ली पगोथियौ है अर सुद्ध अध्यवसाय मोक्ष रो कारण है।

इण संसार मे मानखा रो मन एक अजब कोइडौ है। इणनै भारत रा रिसी मुनिया खूब आछी तरियां ओलखियौ है।

मन है काई ? वो है किसोक स्थूल के सूक्ष्म ? सरीर मे किण ठौड है ? इण सगली बाता माथै उणै घणौ ऊंडौ विचार कियौ है।

मन अणु है छतापण उण मे विद्युत सक्ति है। मन सूक्ष्म तत्व है, वा आख सूं निजरै नी आय सकै।

भगवती सूत्र मे एक महत्व री सवाल आवै। गणधर गौतम भगवान महावीर नै पूछै के—भते! आत्मा अर मन ए दोनूं एक चीज इज है न्यारी न्यारी चीजा है?

भगवान पडुत्तर देवै—गौतम! आत्मा न्यारी है अर मन न्यारो है। आत्मा अर मन दोनूं एक कोयनी। मन ई वे भांतरो है - एक द्रव्य अर वीजौ भाव। द्रव्य मन अंत करण वाजै अर संसार रा हरेक जीव मे ह्वै। भाव मन पौद्गलिक ह्वै, वो हरेक जीव मे नी ह्वै। स्वेतावर मत रे हिसाव सूं ओ मन पूरा सरीर मे ह्वै। अर दिगंवर मत रे हिसाव सूं हिरदा मे ह्वै।

एक आचारज मन री व्याख्या करतां कह्यौ है—**सकल्प विकल्पात्मक मन**'—जिण मे सकलप-विकलप री अतपत ह्वै वो मन है।

मन आत्मा रूपी राजा रो मंत्री है। मन मलीन ह्वै जद आत्मा पण मलीन ह्वै जावै। मन री चलवल सूं कर्म रूपी सत्रु अंतरात्मा मे पूगै अर आत्मा नै संसृति रा जाडा वन मे फेरै। जिण वखत मन-मंत्री मे पवित्र प्रेरणा, सद्भावना, अर चोखौ अध्यवसाय ह्वै उण वखत आत्मा कालख नै छोडै अर सुद्ध वणै।

कोई मिनख पूरा संसार नै जीत लेवै पण पोतारा मन नै नी जीत सकै तो उणरी आ जीत खोटी जीत है। खरी वात तो आ है के वा जीत नी ह्वै नै फगत जीत रो भरम है। मिरग जल री गलाई वो साचौ लागै पण भरमना है।

जिकण धणी पोतारा मन मे जीत लियौ उणै सगला संसार नै इ जीत लियौ। एक आचारज कह्यौ है—

'मनोविजेता जगतो विजेता'

जैन सस्कृति तो वारली जीत नै गिणै इज कोयनी। जैन सस्कृति तो जोर देय नै वारंवार कैवे के संसार नै जीतणौ सेहज है पण पोतारा पंड नै जीतणौ घणौ दोरो है। सिकदर, नेपोलियन अर हिटलर ससार नै जीत्यौ आ वात खरी पण वे पोतारा मन नै नी जीत सक्या। पोतारी निवलाइया अर खोटी विरतिया नै नी पडप सकिया इण कारण वे साचा

विजेता नी गिणी जै। वे मन रा दास हा। पांवडै पावडै ठोकरां खावणी वारे करम मे लिख्यौड़ी ही। इण वास्तै इज भगवान महावीर कह्यौ है—'साधकां, सवसूं पे'ली यांरी खोटी विरतियां नै जीतो' ठीक आइज वात भगवान श्रीक्रिसण अर महात्मा बुद्ध पण कही है। भगवांन महावीर रा सवदा में—

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थए।

मिनख नै पोतारो दमन करणो चाहिजै। आ वात खरोखर दोरी है। पोतारो दमन करणार मिनख इणलोक अर परलोक दोनूं मे सुखी रैवै।

रिसी मुनिया मन नै वगर पाखा रो पंखेरू कह्यौ है। विना पांखै ई वो कितरौ अलगौ उड सकै। आपा अठै वैठा हा, पण मन कठैई रो कठैई भमतौ फिरै। आपा हाथ सूं माला फेरवा पण मन तो कठैई रो कठैई भटका मारतौ फिरै।

मन पूरौ चंचल है। मन री चंचलता देख नै मोटा मोटा सूरवीर घवरीज जावै। इणां रे पगा मे आटिया आवणी माडै अर वे थग थग करण लागै।

एकर संत संस्कृति रा प्रतिनिधि केसीस्रमण गौतम गणधर नै पूछ्यौ हो—हे गौतम, ओ मन रूपी घोडो धणौ अचपलो अर डरावणौ है। थे इणरै माथै वैठा हो पण थे पड़ौ कोयनी क्यू ? थे इण नै कब्जै किण भांत राखौ हो, इणरौ उपाय तो वतावौ।

वनुर्धारी वीर अर्जुन रो नाम सुणता इज भला भला टणक चंदां रा कालजा कापण लागता। पण वो इज अर्जुन मन री चंचलता रे कारण महाभारत रा जुद्ध मे हारग्यौ। वो पोतारा मन नै कावू मे नी राख सक्यौ। उणै भगवान क्रिस्ण नै मन नै कावू मे राखवारो उपाय पूछ्यौ—हे क्रिस्ण, ओ मन अणूंतौ अचपलो है, पवन रे माफक वेगवांन है। इण नै कावू मे किण भात राखणौ ?

चचल हि मन कृष्ण, प्रमाथि वलवद् दृढम्।
तस्याह निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।

माया रा मोह पास मे वंध्योडौ मन पाप रा मारग माथै चालै। ज्यूं भाखर रा टूंक सूं नदी रो झरणौ धरती कांनी अरड़ाट करतौ

आवै उण भात मन री गति है। उण नै रोकण रा भगवांन स्रीक्रिस्ण दो तरीका बताया—एक वैराग रो अर दूजो अभ्यास रो। गणधर गौतम केसी स्रमण नै कह्यौ—प्रमाद कांनी ढळता मन रूपी घोड़ा नै ज्ञान री लगाम सूं रोको।

मन मे ताकत है पण आत्मा में उण सूं ई वेसी बळ है। आत्मा चावै तो अभ्यास, वैराग अर ज्ञान सूं मन नै कुमारग कांनी सूं खांच नै सुमारग कानी लेजा सकै है। खोटा विचार छोड नै चोखा विचारा रो चिंतन करणौ ओ इज कल्याण रो साचौ मारग है। ओ इज मन रो उर्ध्वीकरण बाजै। ज्ञानी मन प्रगति रे पथ माथै आगै वधै अर अज्ञानी मन पतन कानी मुहार राखै।

卐

७

ईमांनदारी री जोत

आपणौ भारत आध्यात्मिक मुल्क गिणी जै। अठै हजारां—लाखां मिनखा आध्यात्मिकता री धूणी धूकाई है, आध्यात्मिकता रा उपदेस दिया है अर आध्यात्मिकता रा गीत गाया है दरसण सास्त्र, धर्म सास्त्र अर न्यायसास्त्र, ए सगलाई सास्त्र इण वास्ते इज वण्योडा है के वे मिनख नै पोतरा धै कांनी ले जावै। सगला सास्त्रा मे मांनखा री चरित्र उण रे जीवण री पायौ गिणी जै। जो मिनख रे जीवण मे चरित्र रूपी पायौ इज नी ह्वै तो पछै धार्मिक क्रियावा, लावा-लावा पूजा-पाठ, धार्मिक ग्रंथां री अध्ययन, लच्छादार भासण अर प्रवचन सव बेकार है। विना रांग रा मकांन जिसा है।

कोई पण मिनख मकान वाधै जरै सव सूं पे'ली उणरी राग भरै। मोटी-मोटी हवेलियां री रागां पण घणी ऊडी खोदी जै। जे राग पक्की नी ह्वै तो उण मकांन नै खतरौ इज रैवै। इण वास्तै जे मिनख पणा रो मकान मजवूत वणावणी ह्वै तो इमानदारी री रांग ऊंडी नांखणी चाहिजै। नी तर वादा रा भूतैला, लोभ अर मोहरी वावल, तिरसणा री तोफान, अर धरती कंप रूपी भय उण नै धुडा नाखैला, माटी मे मिलाय देला।

यूरोप मे माइकल ऐंजिलो नांम रो एक प्रख्यात कलावंत ह्वियौ है। ऐंजिलो री ख्याति यूरोप रा खूंणा खूंणा मे फैल्योडी ही। इण कारण एक वीजौ कलावंत उण सूं ईसकी करण लागौ। उणै कह्यो—म्हूं कितराई वरसां सूं चितराम वणा वूं हूं, पण मिनख ऐंजिलो नै क्यूं चावै। उणरा वखाण क्यूं करै? इण वास्तै म्हूं एक इसौ

चितराम बणावूंला के ऐंजिलो री कीरत झांखी पड जा वैला। ओ विचार करनै उणै एक लुगाई रो चितराम कोरणो मांडियौ। इण वास्ते वो मुलक, मुलका मे फिरती फिरियो। उणै भात भाती लुगाया रा उणियारा, हलण-चलण, ओढ पेर अर वारो अंग-अंग खरी मीट सूं जोयौ अर पछै एक सागोपाग चितराम पूरी मैणत सू बणायौ। चितराम नै ऊंची भीत माथै लटकाय दियौ, जिण सूं वो बैठक मे बैठ्यौ ई देख सके। इण भांत चितराम नै ऊंची टेरनै वो देखण लाग्यौ के उण मे कोई कमी तो नी रैयगी ? ध्यान सू देख्यां पछै उणनै लखायौ के चितराम मे थोडी कमी रैयगी है। पण मोकली माथा फोडी किया पछै ई ओ पतो नी लाग सक्यौ के कमी काई है ? एक वार माइकेल ऐंजिलो उठी ह्वै नै निकलियौ। उणरी निजर उण चितराम माथै पडी। उणै देख्यौ के चितराम खरेखर फूटरो वण्योडो है पण थोडी सीक खामी है। वा खामी पण उणनै निजर आयगी। उणै मिनखां नै पूछ नै उण चितराम नै वणावण रो पतो ठिकाणो जांण लियौ अर उणरै घरा जाय पूगौ। उणै कह्यौ—'भाई! थारौ वणायोडो चितराम खरोखर सरावण जोग है, पण उणमे थोडी सीक खामी रैयगी है।' पे'लौ कलावंत वोल्यौ—हा भाई, थारी वात साची हे। खामी तो म्हनै पोता नै ई लागै है, पण वा खामी है काई ? आ समझ मे नही आवै है।' माइकेल बोल्यौ थारी ब्रुस म्हनै दे। जिकी खामी है वा म्हूं पूरी कर नाखूला।' पे'लौ कलाकार सावचेत करतौ थकौ वोल्यौ—भाईड़ा, ओ चितराम वणावण मे म्हनै पूरी मैणत पड़ी है, इसी नी ह्वै के थूं चितराम नै खराब कर नाखै।' माइकेल वोल्यौ थारौ चितराम म्हूं हरगिज नी विगाडूं, थूं ओ भरोसो राखजै।' पे'ले कलावत माईकेल नै ब्रुस सू पियौ। अर माईकेल ब्रुस लेयनै चितराम मे आख्या रे मायनै दो काला टीबका दिया। ओ काम अधूरो रह्योडो हो अर आइज उणमे खामी ही। इण कारण इज चितराम काइक झाखौ लागतो हो। टीवका लागता इज चितराम जाणै अबै मूंडै बोले'क अवै मूंडै वोलै, इसौ ह्वैग्यौ। चितराम रो रूप इज बदलग्यौ। पे'लडै कलाकार उणरौ नाम पूछ्यौ जवाब मिलियौ– 'माइकेल!' उणै माइकेल सूं माफी मागी।

इणीज भात जिको जीवण रा साचा कलाकार ह्वै, वे पोता रा जीवण मे काई खामी है, इण वात नै तुरत जाण लेवै। अर जठा ताई

वा खामी मिटै नी वे नेहचा सूं नी वैठै। उण चितरांम मे फगत दो काली टिबकिया री खामी ही। इण खामी सू चितराम भाखा लागतो हो। इणीज भात जीवण रो चितराम बणावती वखत उणमे जे प्रामाणिकता अर सच्चाई नी आवै तो पूरा जीवण चितराम रो रंग फीक पड जावैं।

भारत रो साचौ धन माल चरित्रनिर्माण है। भारत रा नामचीन संसा, मुनिया, तीर्थंकरा, तत्ववेत्ताआ, अर सास्त्रकारा सवसूं घणौ जोर चरित्रनिर्मांण मार्थं दीनों है। पण जे आपा चरित्रनिर्मांण कानी ध्यान नी देवा अर अनीति, अन्याय, वेईमानी अर दगाखोरी कानी वलण राखा तो इणरौ मतलव ओह्वियौ के आपा उण महापुरखा रे पर पूठी घाव घाला हा। वारा कल्याणकारी उपदेसा नै ठोकर मारा अर वांरे प्रति वनावटी सिरधा राखा। इण भात आपा पोते आंपणीज आत्मा नै धोखो देवां। अर उण महा मानवा री बदनामी करा, वा वधारे।

एक विद्यार्थी पाठसाला मे भणीजवा जावै। पण उठै जाय नै ठालौ वैठौ रैवै अर मन लगाय नै नी भणीजै। आखौ दिन अठी उठी रोवतौ अर रखडतौ फिरै। सेवट परीक्षा रो वखत आवै जरै नापास ह्वै।

इसो विद्यार्थी पोता रो नुकसाण तो करै इज है पण उणरा मा वापा नै ई धोखौ पूगावै। उणरा गुरुवा नै पण बदनाम करै। कारण के मिनख तो इण मे दोस गुरुवां रो इज गिणै।

खरोखर इणीज भात आज भारत री प्रजा रिसिया, मुनिया अर तत्ववेत्ताआं री भगत तो गिणी जै, पण वारा उपदेसा रे सेडै ई नी वैवै। जीवण सूं वारो तल्लौ मल्लौ ई नी राखै। पछै वदनामी रा भागीदार वां महापुरखां नै वणाया जावै तो ओ कठारौ न्याव है। भारत री प्रजा परदेसां री नकल करनै वखत नै वरबाद करै। इण सूं परदेसियां री निजरा मे पण हलकी गिणी जै।

आज इण वीसवी सदी मे मानखा मे से सच्चाई री जोत प्रगटावण री पूरी जरूरत है। कारण के सच्चाई रो दीवौ तो जाणे भारत भोम मे राज इज ह्वैग्यौ है। भारत रो तत्व ज्ञांन अर भारत री संस्कृति भलांई ऊँचा आसण माथै वैठी ह्वै पण सच्चाई री दौड मे वो आथमणा मुल्का री वरौवरी नी कर सकै। अठै ठौड़-ठौड धर्म रा वजार मंडियौडा

है। बात-बात मे धार्मिक क्रियाकांडा रा दरसण ह्वै ला। खावण पीवण के बावत पण मोकला भेदभाव मिलै ला। पण जिको साचो धर्म ईमांन है, मिनखपणो है उण रो इण धरती ऊपर सूं लोप ह्वियोड़ो है। आज जीवण रा हरेक क्षेत्र मे ईमानदारी रो काल पडियोडो है। कांई समाज, राजकाज, धर्म, कला अर कांई ज्ञान विज्ञान सगली ठौड़ सूं ईमानदारी जाणै प्रलोप इज ह्वै री है। इसो लागै जाणै उणै पोतारो आसण भारत मे सूं उठाय नै दूजा मुल्का मे लगाय दियो है।

फाहियान अर मेगस्थनीज जिसा जात्रुवा वांरी जात्रा मे रो हाल लिखता लिख्यो है—के भारत भोम रा मिनख इतरा सरल अर ईमानदार है के वे पोतारा घरा रे अर दुकानां रै ताला ई कोय देवै नी। हीरा, मोती अर जवेराता री दुकाना पण उघाडी पडी रैवै। पण कठैई चोरी—सकारी नी ह्वै। वैपार मे पण पूरी प्रामाणिकता वरती जावै।' उण परदेसी जात्रुवा री ए वाता साचीज ह्वै ला पण आज भारत भोम माथै निजर नाखो तो अंधारो इज निगै आवै। कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर चीन अर जापान जात्रा करणनै गया, जणा उठारा लोकां वानै कह्यो— आपरो देस भारत कितरो पवित्र है! उठै चोरी तो ह्वै इज नीं। कोई पेला रो हक्क मारै नी। थारो देस खरोखर नसीब वालो है।' ए वातां सुणनै कविवर रो माथो सरमसूं लुलग्यो। उणा आंसूभीनी आख्यां सू कह्यो—'भारत रै प्रति थारी जिकी धारणा है, वा पुरांणी है। आज रो भारत विसो नी रह्यो। आज तो सगलाई दुर्गुण भारत भोम मे मौजूद है।'

इण सू वेरो पडै के भारत रा मिनखा री परमात्मा पर सूं सिरधा उठती जावै। जे वानै परमातमा पर ढिढ सिरधा ह्वै तो वे बेईमानी रो आचरण नी राखै। भारतवासिया नै इतरोई भरोसो नी रह्यो के जे दानत सफा राखा तो भगवान भूखा कदेई नी राखै। नीत सफा रैवै तो चांच दीनी जिको चूगो पण देवेला। ईमानदारी मानव जीवण री रक्षण करवा वाली है। फगत सरीर रा रक्षण नै इज आंपां नै रक्षण नी मांनणी चाहिजै। अंग्रेजा भारत मे मिनखा रा सरीर रक्षण खातर कितरा सुख-साधन जोडिया, नौकरिया मे छुट्टियां री वधारो कीनो। पण उण सू अठारा मिनखा रो आतम पतन अर आतरिक सोसण कितरो ह्वियो, उणरी कोई कीमत है? इणरो विचार कोईक करै? भारत रा मिनखा तो भगवांन नै भूलनै गौराग प्रभु अंग्रेजा माथै इज सिरधा

राखण लागग्या। जिण सूं उणां मे बेईमांनी, अनीति, कामचोरी, आलस अर लाच रिस्वत जिसा दुर्गुण भरीजग्या। आज भारत मे अंग्रेज कोय नी है पण वारै रोपियोड़ौ वेईमांनी रूपी भाडको खूब ऊंडी जडां घालनै घेर घुमेर उभौ है। पण मानखा नै आ बात याद राखणी चाहिजै के—

'जिसके जीवन मे ईमान, उसका रक्षक है भगवान।' जीवण मे ईमांनदारी आवै जद भगवांन रै प्रति प्रेम पण वधवा लागै। इण सूं उणरी तबियत पण चोखी रैवै। उणरी आतमा पण निर्मल बणै। इण बाबत एक ताजौ दाखलौ इण भात है—

अेमदावाद रा एक लत्ता मे एक साग भाजी रो वैपारी रैवतौ। जात रौ काछियौ। उणरौ साग भाजी री वेपार अटौरिया मे चालतौ हो। उणरा गिराका सागै उणरौ वैवार वडौ प्रेम री हो। वो रोज पूजा पाठ करतौ। वो तीरथ-जात्रा पण करतौ। पण उणमे फगत एक इज ओगण हो के वो वैपार मे हर दम कूड बोलतौ। धूड सिवाय घडौ नी अर कूड़ सिवाय वैपार नी। आ उणरी धारणा ही। वो हरदम कूड बोलतौ अर वेईमानी वरततौ। उणरै हिरदा मे आ वात आछी तरियां बैठगी ही के वैपार मे विना कूड काम चालै इज नी। कई वरसा तांई तो इण भांत उणरी गाड़ी गुडकतीग्यौ। साग भाजी बेचता वखत वो ताकडिया मे काणम राखतौ। गिराक देखता केवानै माल नमतौ मिलै है अर भाव पण वाजब है। पण सही बात आ ही के माल ओछौ अर भाव मे पण मूंघौ गिराका रै पल्ले घलीजतौ। इण भांत काछियौ कूड रै पाण कसब कमावतौ।

उण काछिया रै पाड़ोस मे एक डॉक्टर रैवतौ। ओ डॉक्टर काछिया रौ साथी हो। ऐलोपेथी री पदवी ह्वैता छताई इण डॉक्टर नै आयुर्वेद अर प्राकृतिक चिकित्सा माथै पूरी सिरधा ही। दवारी सीसी अर इंजेक्सन रो तबीडौ मारनै पैसा पटकावा री उणरी कदैई नीत नी रही। रोगी नै निरोग बणावण रै सागै वो उणनै नीतिवान, ईमानदार अर सदाचारी बणावण री पण पूरी कोसिस करतौ। इण डॉक्टर री पक्की धारणा ही के वेईमांनी, अनीति अर अनाचार रै कारण इज मादगी आवै।

एक दिन वात सूं वात निकली जद उणै काछिया नै पूछियौ—थे

हरदम मादा कीकर रैवौ ? इणरी कारण काई है ? काछियौ आठू पो'र बेचैन अर उदास रैवतौ। पण उणनै कोई कारण ध्यांन मे नी आवतौ। आज डॉक्टर उणरै मरमरी बात कही तो वो वोल्यौ के डॉक्टर सा'ब आप इज बतावौ के म्हूं हर दम मादौ क्यू रैवू ?' डॉक्टर मुलकतौ थकौ बोल्यौ—'भाई, म्हूं तो आइज मानू के मिनख रै जीवण मे जितरी सुद्धता ह्वै, जीवण मे वो उतरीई निरोग रैवै।'' गाधी जी रामनाम री रटण सूं रोग मेटण री बात कैवता, वा बात खरी है। पण मिनख रै जीवण मे पवित्रता अर ईमानदारी ह्वै तो इज रामनाम पण कार आवै। नी तो नी। म्हूं तो आ जाणू के थारै जीवण मे कठैई न कठैई असुद्धाई ह्वैणीज चाहिजै। इण कारण सूं इज थे हरदम मादा रैवौ।' डॉक्टर री बात सांभल नै काछिया मे राम वापरियौ। उणै डॉक्टर रै आगै पोतारौ गुन्हौ कबूल करता कह्यौ म्हारै जीवण मे फगत इतरीज असुद्धाई है के म्हूं माप तोल मे गडवड करू। इतरा दिन म्हारी आ धारणा ही के कूड बोलिया बिना अर ओछौ माप तोल राखिया बिना वैपार मे पार नी पड़ै। पण आज म्हारी आख्यां ऊघडी के इणखोट रै कारण इज मांदगी म्हारै लारै लागौड़ी है। म्हूं आज सूं इज इण खोट रै लारै काटा वाल दूंला।

उण दिन सूं काछियौ ईमानदारी सू धधौ करण लागौ। वो बाजबी भाव सूं वैपार करतौ अर गिराक नै पूरौ तोल नै देवतौ। सरुपात मे गिराक उणरा ढग नै समझिया कोयनी सो गिराक टूटण लागा। पण काछियौ गाढ राख नै रामजी माथै पूरौ भरोसौ राखियौ। सेवट छऐक महीना पूठी उणरै वैपार मे एकदम तेजी आई। दुकान रै आगै गिराका री भीड मचवा लागी। काछिया रौ मन हलकौ ह्वियौ अर उणरी तवियत पण ठीक रैवण लागी। उणै नसा पता छोड़ दीना अर एक दम सादौ जीवण अपणाय लियौ। उणै आपरौ खरचौ खातौई ओछौ कर लियौ अर एक दिन उणरै मन मे मर्यादित नफारी बात पण वैठगी। उणै नक्की कर लियौ के म्हारै वास्तै रोज रौ तीन रुपियां रो नफौ ठेलमौ। रोज तीन रुपिया मिल जावै तो मोकला। इण सू वधारै नफौ आपणै नी चाहिजै। धीरै धीरै वो आडोस पाडोस मे मिनखा री सेवा चाकरी पण करवा लागौ। इण भात काछियौ भाई नकली भगत सूं असली भगत वणग्यौ। उणरौ सरीर पण सफा निरोगौ ह्वैगौ अर वो पोतारौ काम आणद सू करण लागौ।

इमांनदारी रौ नैनौ मोटौ प्रसंग ई मानखा रा जीवण नै जगमगाय देवै। जिण वखत मिनख रा मन मे ईमानदारी रा आकोर फूटै जद नकामी वातां ठेका देय जावै। पछै तो कुदरत पण उणरौ साथ देवै।

वैवारिक जीवण मे ईमानदारी री कितरी कीमत है, आ वात सगलाई जाणै। जिको आदमी ईमानदार व्है, उणरी आत्मा हर वखत सजाग रैवै। उणनै हरदम ओ भौ रैवै के कठैई म्हारा हाथ सूं वेईमानी नी व्है जावै। इण सूं उणरौ जीवण सजाग वणै अर मिनख उणनै सिरधारी निजर सूं देखण लागै।

आध्यात्मिक क्षेत्र मे पण ईमानदारी री महत्व कमती नी है। जिण मिनख मे ईमांनदारी व्है वो इज मिनख आत्मवत् सर्वभूतेषु' री सिद्धात पोतारा जीवण मे उतार सकै। इण सूं उणरी आत्मा अर परमात्मा रै कानी वफादारी लागणी उघाड मे आवै। ईमानदारी सूं वो पोतारा जीवण नै पवित्र वणावै। दूजा माथै पण उणरौ असर पडै। इण भात वो आड़लौ पाडलौ सगलौ वातावरण ई पवित्र कर नांखै। मिनख पणारौ वो लूंठौ पुजारी वण जावै। जिण भात एक दीवारी जोत सूं सौ दीवा चासीज सकै, उणीज भात एक मिनख री ईमानदारी रूपी जोत सूं कई मिनखा रै हिवडारी जोत मे परगास पुगाइज सकै है। इण वास्तै आज सव सूं जरूरी चीज है ईमानदारी री जोत नै पलजलती राखणी। जिण सू मांनवता रो परगास फैले अर दानवता री अन्धकार मिटै।

इण वास्तै इण जमांना मे आज सगली जगा काई धार्मिक, काई राजनैतिक, काई सास्कृतिक काई वैवारिक अर काई कौटुंविक सव ठौड़ ईमानदारी री पूरी जरूरत है। जे ईमानदारी री जोत जगती रेवै तो इज साति कायम रैय सकै, सुख रौ सूरज तप सकै अर मानव जीवण ढंग सर वण सकै।

ईमानदारी रौ अर्थ ओ है के पोतारा सिद्धात माथै कायम रैवणौ, पोतारी जात, समाज अर भगवान रै प्रति वफादार रैवणौ। जितरौ पोतारौ हक व्है, उण सूं वधारै लेवणरी इच्छा नी राखणी। पराया हक री चीज नै हराम वरौवर लेखवणी। हक वाली वात, समै, मैणत पैसौ, अर साधन, सगली ठौड लागू पडै। दाखला तरीके आपा कोई नै नौकर राखा। उणरी नौकरी रौ समै तय कीनौडौ व्है। पण आपा

नौकर नै समै उपरांत ई रोकां अर उण सूं कामला अर उणनै पगार पण पूरौ नी देवा । मजूरा नै मजूरी वेला माथै नी देवां । उणां सूं कांम वधारै करावा अर पैसा ओछा देवा । विना हक रौ पैसौ भेलौ करां । ओछौ तोल, ओछौ नाप राखा अर चीजा मे भेल सेल करा । एक चीज बताय नै उणरी ठौड कोई दूजीज चीज देवा । सरकार नै टेक्स ओछौ भरा के मुलगौ भरा इज नी । खोटा चोपड़ा राखा अर खोटौ नांणौ चलावा । लाधौडी चीज पाछी नी देवा । कोई री अमानत हजम करला । कौई संस्था रौ चदौ के फड डकार जावौ के कोई विधवा गरीब ड़ी रौ धन अरोग जावा । आध्यात्मिकता रै नाम माथै कूड़ा चमत्कार बताय नै मिनखा नै ठगा । लाच रिस्वत लेवा । सरकार री तरफ सूं ठेरायौडा व्याज सूं वत्तो व्याज लेवा । कालौबजार करां । कूडा प्रमाण पत्र, कूड़ा दस्तावेज अर खोटा बिल बणावा । काम पूरौ नी करां । अधूरौ कांम करनै पैसा पूरा ला । दुकान के मकांन री पाघडी लेवां के बखसीस मागा । ए सगली बाता बेईमानी गिणी जै ।

यू बेईमानी री माला इत री लाबी चवडी है के उणरा मण का गिणता गिणताई काया ह्वै जावा । आज रा जुग मे मिनखा बेईमानी रा नवा नवा धंधा मोकलाई सोध लिया है । आथमणी संस्कृति रा असर मे आय नै आज रौ मानखौ बेईमानी नै पण कला अर सस्कृति रौ अंग गिणै । बेईमानी सू धन कमाय नै जिकौ दान करै वो पापी नी बाजै । चालाकी सूं बेईमानी करण वाला घणा खरा लोग पोतारा पाप माथै पडदौ नाखण वास्तै एकाध संस्था मे थोडौ घणौ दान देय दै के कोई फंड फाला मे थोडी घणी मदद कर देवै । कईक जणा धार्मिक जलसा गोठवै अर क्रिया काड करावै । ए लोग आ सोचै के इण भात वारै वेईमानी रौ दाग मिट जावैला । पण आ फगत वारी भरमना है । उल्टौ वां नै कुदरत रा दरबार मे बमणा पाप रौ फल भोगवणौ पडै । वेईमानी करण वालौ बेवडौ पाप करै—एक तो वो आगला मिनख नै छेतरै अर दूजौ कुदरत नै पण छेतरवा री कोसिस करै । अर पछै अन्याव सूं भेला की घौड़ा धन री धूड समाज री आख्या मे नाखनै भलौ मिनख बणणौ चावै ।

इण भात वेईमानी रो पाप घणौ खराब है । बेईमानी सूं पैसौ भेलौ करण वाला नै मिनख भलौ आदमी कैवौ भलाई, है वो पापात्मा । पछै

वो पोतारा पापां नै ढाकण वास्तै भलाई धार्मिक अफंडा करै, पण पाप सूं छुटकारो नी मिल सकै। छुटकारो मिलण रो रस्तो है जरूर, पण वो दूजो है। उण पापात्मा जिण मिनखां रो हक भाग नै पैसो भेलो कीधो है, जिणा नै छेतरिया है, जिणां रै सागै बेईमानी कीवी है, वां नै जे व्याज समेत पैसा पाछा देय दे तो भर पाई व्है सकै। नुकसांण कोई रो कीधो व्है अर पैसा कोई दूजा नै के कोई संस्था मे देय नै वाह-वाह वाजणो चावै तो उणसूं भर पाई हरगिज नी व्है। इण भात पाप नी धोवी जै। खरोखर पाप नै धोवा रो रस्तो ईमानदारी रो है। वैवार सुद्धि पण ईमानदारी रो एक अंग है। जिण मिनख रो वैवार सुद्ध नी व्है उण मे नैतिकता पण नी व्है। उणरी आत्मरक्षण करवारी ताकत कोई पण धार्मिक क्रिया काड मै नी व्है सकै।

卐

धर्म रौ मूल-मंत्र

आपणौ भारत एक धर्म प्रधान देस है । अठै धर्म जिंदगी रौ आधार भूत तत्व गिणी जै । आज ससार मे जिको भारत रौ अंतर्राष्ट्रीय महत्व है वो धर्म रै कारण है, संस्कृति अर सभ्यता रै कारण है । पण फगत इतिहास अर संस्कृति रा गीत गाया सूं इज काई दिन नी वलै । जे आपा आपणा इतिहास अर आपणी सस्कृति मे सूं काई सार लेय नै आपणा जीवण मे उतारा तो इज बातडी वणै । आज भारत भोम रौ मानखो धर्म-सास्त्रा, त्याग-वैराग अर आत्मा-परमात्मा री बातां करै । बात बात मे वेद, उपनिसद, गीता रा दाखला देवै । पण वारै जीवण मे धर्म नै कितरीक जायगा मिलियौडी है ? प्रमाणिकता कितरीक है ? अर ईमानदारी कितरीक है ? सही बात आ है के आज भारतवासिया रा विचार तो धार्मिक है, पण वारौ आचार अधार्मिक है । अंग्रेजी रा मानीता कवि विलियम सेक्सपियर कह्यौ है—

Religion without moralitiy is a tree without pruit and moralitiy without religion is a tree without root. (नैतिकता विना रो धरम फल हीणा झाड जिसौ है अर धर्म बिना री नैतिकता मूल बिना रा झाड जिसी है)

आज नूं वा सिरजण री पुण्य घडी मे लोकतंत्री भारत ई दूजा देसा री गलाई आग वधै है । भाखरा नागल, हीराकुंड अर दामोदर घाटी जिसा मोटा मोटा बधा बंधी जै है । मोटा-मोटा उद्योग सरू ह्विया है । लावी-लाबी सडका वणै है अर नहरा खोदी जै है । इण भात घडतर खातर समय, पैसा अर सगती रौ उपयोग ह्वै है । पण आध्यात्मिकता

विना रौ ओ भोजन लूंण विहूणौ है। इण मे नी तो धर्म है अर नी नीति है। आज सै सूं पे'ली नीति री जरूरत है। नीति विना देस आगै नी वध सकै। देस रा छोकरौ-छोकरी नीतिवान वणणौ जरूरी है।

सर्वेन्टिस रा सबदा मे प्रमाणिकता इज सब सूं सिरै नीति है। प्रमाणिकता जीवण रौ मूल अंग है। उणरै विना मांनव जीवण सोभायमांन नी वणै। कोई मिनख रै सरीर मे दूजा तो सगलाई अंग ह्वै पण फगत आंख्या नी ह्वै तो सरीर फूटरौ नी गिणीजै। सरीर मे विना आंख्या घणखरा काम दूजा रै आसरै रेवै। इण भात जीवण रौ साचौ आनंद नी मिलै। पंड सूं परोपकार रौ कोई पण काम नी ह्वै सकै। इणीज तरै सूं मानखा रा जीवण मे विद्या ह्वै, कला ह्वै, फूटरापौ ह्वै, अहिंसा ह्वै, ब्रह्मचर्य ह्वै, अपरिग्रह विरती ह्वै, क्षमा, नम्रता अर सत्य ह्वै, पण जे ईमांनदारी रूपी आंख्या नी ह्वै तो जीवण रौ फूटरापौ झाखौ पड जावै। विद्या, कला अर दूजी वाता ह्वै ता छताई ईमानदारी विना जीवण सूनौ ह्वै जावै। इसौ जीवण समाज मे कोई काम करनै नी वतां सकै। नी उण सूं कोई नै प्रेरणा मिलै।

ईमांनदारी नीति रौ प्रचार मिनख रा नीति प्रधान कामा सूं इज ह्वै सकै। फगत भासणा सूं के धर्म री वागा मारिया सू ईमानदारी नी आय सकै। आध्यात्मिकतारी डींगा हांकण सूं के लावी-लावी धार्मिक क्रियावां करवा सूं के टीला टवका करवा सूं के सरीर माथै चदण केसर लगावण सूं के मैला-कुचैला रेवण सूं के वार-वार सपाडौ कीधा सूं के आवडछेट पालवा सूं ईमांनदारी नी वध सकै। पोथिया वांचियां सूं ई ईमानदारी नी सीखीजै। कोई माथै दवांण देयनै पण उणनै नीतिवांन नी वणाइजै। ईमानदारी तो आत्मा रौ गुण है। आत्मा माथै आयौड़ा पड़दा नै, आछा करण सारूं ड़िढता सूं सत्य निस्ठा रौ अभ्यास करण सूं, निडर पणा सूं सत्य आचरण राखवा सूं, अंतरात्मा नै विस्वात्मा सूं जोडवा सूं अर विस्ववंधुत्वरी भावना राखण सूं मानव जीवण मे ईमांनदारी आय सकै है। अर इण भात आयौडी ईमांनदारी कायम पण रैवै।

ईमानदारी रौ प्रचार-प्रसार करण खातर सै सूं पे'ली तो मोटा-मोटा पुरखा नै पोतै इज ईमांनदार ह्वणौ चाहिजै। आबात नी बणै तो उणारै उपदेसा रौ दुनिया माथै कोई असर नी पड़ै। भगवद् गीता मे कर्मयोगी स्री कृस्ण आइज वात कही है—

यद्यदाचरति श्रेष्ठ तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।

(अध्याय ३ २१)

मोटा मिनख जिसौ आचरण राखै, वारै देखा देखी साधारण मिनख पण विसौ इज आचरण राखै। जिण चीजा नै मोटौडा स्वीकार करै वानै सगलाई धारण करै।

जे मोटा मिनख अर नेता लोग पोतै इज ईमानदारी छोडण लागै तो वारा चेला-चाटी पण खुल्लम-खुल्ला बेईमानी करैला इज।

गुलिस्ताँ मे एक बात आवै ईरान रौ जाणीतौ अर अदलन्याव. करणवालौ बादसा नौसेरवा एकर जगल मे सिकार खेलण नै गयौ। उठै रसोडौ करती वखत रसोड दार कह्यौ – लू ण तो हैई कोयनी हजूर! नौसेरवा पोतारा नौकर नै हुकमदियौ के पाडला गाम मे जाय नै लू ण लैयनै आवै। पण इणरै सागै उणनै भलामण घाली के पैसा देयनै लू ण लावजै, नी तो आखौ गाम उजाड ह्वै जाएला। नौकर नै इण बात मे काई नवाई लागी—उणै पूछयौ—'एक चपटी लूंण सू आखौ गाम उजाड कीकर ह्वैला!' नौसेरवा पडुत्तर दियौ - आज जो राजा पोतै आपरी रैयत कना सू एक चपटी लूंण मुफ्त मे लेवै तो कालै राज रा वेली गाम नै लूट नाखैला। जे कोई राजा रैयत रा बगीचा मे सू मुफ्त मे फल खावण लागै तो उणरा नौकर तो जडा समेत झाडका ई खाजावैला अर खोद नाखैला।

ईमानदारी रौ आचरण पोतारा पड सूं इज सरु ह्वैणौ चाहिजै। कोरी वाता करवा सू के फगत फिलोसोफी छाटवा सू ईमानदारी नी आवै। नीति पोतारा आचरण वास्तै कठैई ऊद नी पाडै। ईणीज भात ईमानदारी री सुगंध आप सू आप फैलै। ईमानदारी रौ आचरण फगत आत्मारी सुद्धि वास्तै इज ह्वैणौ चाहिजै। उणमे कोई फल प्राप्तिरी के, स्वार्थ सिद्धि री के, वाहवाह लेवारी के, लोभ लालच री आमना नी ह्वैणी चाहिजै। इण भात इज ह्वै तो मानव जीवण रूपी दीवा मे ईमानदारी री जोत परजल सकै। नी तो फल री आसा अर फल री आसक्ति झपटौ पडता पांण ईमानदारी रौ दीवौ राज ह्वै जाएला। लोभ अर ईमानदारी रै आपसरी मे वरगै वैर है। जठै लोभ ह्वै उठै ईमानदारी उभीज नी रैवै। ईमानदारी नै

कायम राखवा वास्तै स्वारथ त्याग री नैतिक वातावरण बणावणी पड़ैला। एमर्सन कह्यौ है—सच्चाई अर ईमानदारी सगी बेहना है।

आज भारत रा मिनख आगोतर रा सुख वास्तै इज दान-पुन्न, पूजा-पाठ, के वरत-उपवास करै अर सरीर री नै धन री भोग देवै। इण पात तो वे जे इण भव मे पोतारा कुटुंब, समाज अर देस रै वास्तै ईमांनदारी वरतता ह्वै तो घणौ आछौ रैवै। पेट भरीजै जितरी कमाण ह्वै जाए तो मिनख नै संतोख राखणौ चाहिजै। प्रमांणिकता अर ईमांनदारी नै साचा धर्म री पालणा करणी चाहिजै। इण भात चालण सूं जीवण सुद्ध वणै अर सुख साति मिलै। ईमानदारी पर चलतां मारग मे जिकौ तकलीफा आवै उणानै सहन कियां सूं समाज में सुख सांति री वधापौ ह्वै। ईमानदारी पालता जिकौ तपसा करणी पड़ै उण सूं समाज मे उत्साह वधै। ईमानदार मिनख नै साचौ आत्म संतोष मिलै। जिण वखत आपणै देस रा मिनख पोतारा जीवण नै नीतिवान, सत्यनिस्ठ अर प्रेमालु वणावैला जद इज आगौतर मे पण सुख मिलैला। इण भव री परवा नी करणी अर अगौतर खातर चिंता राखणी समझदारी नी गिणीजै। उपनिसद मे एक रिसि इण भात कह्यौ है—

'इतो विनष्टिर्महती विनिष्टि'

थारै जीवण री इमरत रस अठैइज सूकीजग्यौ ह्वैला तो वो थारै नासरौ सै सूं मोटौ कारण है। अठारौ जीवण जे ठीक वीतै तो धकै पण ठीक मिलै। पण इण भव मे पोतारा जीवण नै नरक वणाय नाखै तो आगै किसौ सुरग तैयार पडियौ है। इण वास्तै ईमानदारी री नगद धर्म पालण सूं जिकौ आणंद मिलै वो सुरग री रगीन कल्पनावा सूं घणौ चोखौ है।

पण ईमानदारी अर सत्य वास्तै आपानै हर वखत तैयार रैवणौ पडैला। इणरै वास्तै जचै जितरी मोटी चीज री भोग देवणौ पडै पण ईमानदारी कायम राखणी चाहिजै। यूं कीधा सूं इज साचौ सुख मिल सकै।

दूजा देसां रा रैवासी आपणी गलाई आध्यात्मिकता रा ढोल नी वजावै, संस्कृति अर धर्म री डीगा नी हाकै पण वैवार अर धंधा मे पूरै

पूरी ईमानदारी वरतै । ईमानदारी री कसौटी पण मानखा रै वैवार अर धधा री सुद्धता माथै इज आकीजै ।

आपा नै इण बात मे नवाई लाग सकै के परदेसां मे कई दुकाना इसी ह्वै के जिणा माथै कोई दुकानदारई नी बैठै । चूकती चीजा चौडै मेल दी जावै अर वारै माथै वारी कीमत लिखदी जावै । जिण गिराक रै जिकी चीज लेवणी ह्वै वा लेय लै अर पैसा गल्ला मे नाखनै रवानै ह्वै । लिख्यौडी कीमत सू कोई एक पाई ई कमती नी नाखै । आपा इतरी ईमानदारी वरत सका आ बात ह्वै नी सकै ।

१३ अगस्त १९५८ रै दिन पटियाला (पजाब) मे एक इसीज दुकान खोली ही । आ दुकान फगत एक दिन वास्तै इज खुली ही । उण दुकान मे पाच सौ रुपिया रौ सामान भरियौडौ हो ! सामान तो थोडाक घंटा मे सगलौ ई बिक बिकायग्यौ । पण बिक्या पछै अधिकारिया जद गल्ला री रकम गिणी तो पाच सौ री ठौड फगत पैंतालीस रुपिया निकलिया । बाकी चार सौ नै पंचावन रुपिया रो माल लोगडा मुफत मे इज लेग्या ।

इण भात रा बीजा प्रयोग पण कई पाठसालावा मे किया । वाराणसी मे तीनेक बरस पे'ली एक 'सर्वोदयी स्टाल' खोलियौ हो । इण प्रयोग मे थोडी धणी सफलता जरूर मली ही । थोड दिना पे'ली इणीज भात रौ एक प्रयोग सौरास्ट्र रा एक महुवा नाम रा गामडा मे पण कियौ हो । उठै डाकरी टिगटां, पोस्ट कार्ड अर लिफाफा बेचाता धरिया हा । इण प्रयोग मे पूरी सफलता मिली । इसा समाचार दैनिक हिन्दुस्तान मे छपिया हा ।

खैर ए तो सगली प्रयोगात्मक बाता है, आपा नै ईमानदारी वास्तै आपणौ वैवार सुधारणौ इज पडैला । अर इण वास्तै पूरी कोसिस करणी पडैला ।

परदेसा मे मोकली जागावा इसी है के उठै अखबार बेचण वास्तै फेरी वाला नी रैवै । ठाया ठाया माथै अखबारा रा बडल अर खाली डबला मेल दिया जावै । जिणनै जिकौ छापौ लेवणौ ह्वै वो उठाय लेवै अर उणरी कीमत डबला मे नाख देवै । सभ्या रा वैपारी आवै अर वकरौ गिणनै लेय जावै । वारौ हिसाब बरौबर मिलै, एक पैसौ ई कम नी पडै । आपणै भारत मे तो आ हालत है के लोगडा पोथ्या री पोथ्या उचकाय नै ले जावै अर ले जाय नै अटाला खाता मे नाख देवै ।

नासिक री बात है। साने गुरुजी रौ पे'लौ सिराध हो। वांरी लिख्यौडी पोथ्यां एक खंड मे जमाय नै धरी ही अर कनै इज एक खाली डबलौ पैसा नांखण नै मेल दियौ हो। बेचवा वालौ कोई नी हो। लोगड़ा एक सौ नै इठंतर रुपिया री पोथ्या उचकाय नै रवानै ह्विया। डबला मे फगत छासठ रुपिया मिलिया। आ रकम कोई धर्म खाता मे लगावणी ही। धर्म रा मारग मे ई मिनख कितरी ईमांनदारी वरतै, इणरौ ओ एक दाखलौ है।

जापान मे भारत रै ज्यूं टिगटां री चेकिंग नी ह्वै। टिगट चेकर के कंडक्टर डब्बा मे आवै अर नरमाई सूं फगत इतरौ पूछै—भाई, कोई रै टिगट लेवणौ वाकी तो नी रैयगौ। रह्यौ ह्वै तो कैय दीजौ, म्हूं देय दूं। वो आ बात मान नै चालै के सगला कनै टिगट तो है इज। पण आपणै अठारी तो बात इज दूजी है। अठै हर रेलगाडी मे मोकला डब्लू० टी० मिल जावैला। इसा भाईड़ा देस रौ नुकसांण तो करै इज है, पण इणरै सागै-सागै ईमांनदारी रौ पण देवालौ काढ नाखै। अठै टिगट चेकरां नै कत्तई भरोसौ नी के वे सगलाई टिगट लेय नै वैठा ह्वैला। सूतौडा मुसाफरा नै जगाय जगाय नै पण ए टिगटा री तपास करै। अविस्वास री हद ह्वैगी।

परदेसा मे दूध मे कोई पाणी नी घालै। उठै जे पूछियौ ह्वै के—दूध मे पाणी तो कोय नी तो वानै नवाई लागैला। अर आपणै अठै तो दूध मे पाणी भेलणौ जाणै जन्मसिद्ध अधिकार है। दूध री जागा फाटौडौ दूध, पाउडररौ दूध, घी मे वेजिटेवल के मूंगी फली रौ तेल, अर माखण मे पण वेजिटेबल भेल नाखै। परदेसा मे फेरीवाला दूध री सील वन्द वोतला लेयनै फिरै। वे खाली वोतला उठै सूं लेयले अर भरियौडी मेल देवै। वारणै पडी वोतला रै कोई हाथ ई नी लगावै। अर आपणै अठै तो जे पातरा मे ई कोई चीज वारै रैयगी ह्वै अर आख टालौ ह्वियौ के माल परायौ। भेल सेल रौ वजार तो इतरौ गरम है के खावण पीवण नै सुद्ध चीजां मिलणी ई मोटी वात ह्वैगी। दूजी बाता तो सै गई धेड मे पण अबै तो दवाईया मे पण भेलसेल ह्वै वण लागग्यौ। भला मिनख सर सूं रा तेल मे मूंगफली रौ तेल मिलाय दे। दही मे वेजिटेवल नाख नै नकली माखण तेयार करदे। काली मिरचां मे पपैया रा वीज टेक दे। चाय मे रंग चेप दे। वजार मे सेत

रा नाम सूं खाडरी चासणीज विकै । आटौ पीसती वखत भेला आवली रा कूंका पीस दिया जावै । केसर मे हलदर अर जीरा मे घास-फ़ूस भेल दियौ जावै । सिव्बाजोल जिसी दवारी गोलिया मे पण माटी भेल देवै । दूजी तो सगली व्राता जावण दो पण आज तो जेर ई सुद्ध नी मिलै । जमानौ तरक्की रो है । कितरी तरक्की कीवी है भारत रा मिनखां—बेईमानी रा मामला मे । खावण-पीवण री चीजा मे के दवाईयो में भेल सेल कारण सूं कोई मादौ पडै के मरै तो वारी जाणै बलाराज ! भारत रा बेईमाना नै इण सूं काई लेणौ-देणौ । ओ है भारत री धर्म परायणतारौ नमूनौ ।

दाणचोगी रौ धधौ तो पछै आपणै अठै अपटापार चालै । जिण चीजा माथै जकात घणी है, विसी चीजा के सोनौ विगैरै परदेसा सूं मोकली आवै । सोनौ पकडवा मे सरकार पण मोकली हुँसियारी वरती । पण इसौ चोर धधौ करणिया सरकार रैई माथा ऊपरला है । उणा पोतारी साथला चीर नै माय नै सोनौ भरनै लावणौ सरु कियौ । इण नै रोकण वास्तै सरकार नै 'एक्सरे' री व्यवस्था करणी पडी । 'एक्सरे' री मदद सूं सरीर रा कोई पण भाग मे छिपायौड़ी चीज री वेरौ पड जावै ।

आवक-जावक री चीजा माथै राखियौडी रोक नै तौड नै पण मोकला वैपारी चोरिया करै । ए रोक लागौडी चीजा नै चोरी सूं मगावै अर जाजौ नफौ कमावै । कई लोग गैर काय देसर नाणा वदली री धंधौ पण करै ।

असली चीज रै वदलै नकली चीज देवणी गिराक नै निमतौ देखाय नै ओछौ तोलणौ, बतावणौ काई अर देवणौ काई दूजौ इज, तोल-माप मे गोटालौ करणौ, कपडा रा ताखा माथै जितरौ लिख्यौ व्है उण सूं ओछौ देवणौ, दवाई के कोई दूजी चीज नवी-नवी काढै जरै चोखी काढ णी अर पछै हलकौ माल बणावणौ, कंट्रोल व्है जरै काला वजार सूं माल लेवणौ के वेचाणौ, रासनिंग मे खोटा कारट बणाय नै अनाज वधारै लेवणौ, जीमण माथै अटक लाग्यौडी व्है जरै घणा मिनखा नै जीमावणा, इसी मोकली हराम खोरिया रौ भारत मे कोई तोटौ नी है ।

वीच मे कपडा री कंट्रोल उठग्यौ हो । उण वखत कपड़ा रा वैपा-

रियां अर मिल मालिकां चौडै-धाडै धाप नै कालौ वजार कियौ। उण वखत संस्कृति मासिक रा संपादक लिख्यौ हो–'अेमदावाद रा मिलमालिकां रा हाथ कालौ वजार कर करनै इतरा काला व्है ग्या है के जे उणा नै सावरमती रा पांणी मे धोया व्है तो सगलौ पाणी ई कालौ व्है जाए।' भारत रा मिल मालिका री ईमानदारी री ओ परतख नमूनौ है।

लाग-वाग, दलाली अर कमीसन पण वेईमानी मे वधारौ करै। दलाल बेईमानी करता जरा ए नी संकै। खरीदी कोई भाव सूं करै अर लिखावै कोई दूजो भाव इज। इण भात आढतिया अर दलाल घणी कमांणी करै। अठाताई के नौकर के रसोईयौ जे मालिक रौ माल सांमांन वजार सूं मोल लावै तो उण मे सूं पण दलाली खावण री नीत राखै। इण भात भारत री विणज वैपार बेईमानो सूं भरिजियौडौ है।

विणज-वैपार मे जे ईमांनदारी नी व्है तो सेवा भाव री बात ई पैदा नी व्है। जठै गिराक नै लूट नै फगत पैसौ भेलौ करवारी नीत व्है उठै नर माई रौ लेणौ देणौ ई काई? इण भात वैपारी पोतारौ ओ भव तौ विगाड़ै इज पण इण रै सागै-सागै आगौतर ई बिगाड नाखै।

वैद्य अर डाक्टरा रौ धंधौ पण आज बेईमांनी सूं भरीजग्यौ है। इणा री नीत आ रैवै के रोगी घणा दिना ताई मादौ रैवै अर उणा रा पैसा पाकता रैवै। वे इंजेक्सना रा घोदा देय देय नै पैसा पड़ावा री हरदम नीत राखै। रोगी नै तपासवारी फी पण घणी आकरी व्है। जित रौ वधारै जांणी तौ अर मांनी तौ डॉक्टर, उतरौज वधारै उणरी फी। फी वगर तो बात इज नी करै। इण उपरांत सरकारी दवाखाना मे जिकौ दवाईयां आवै, वे घरै ले जावै अर वानै प्राइवेट प्रक्टिस में काम मे लेवै। सरकारी दवाईया रो स्टोक पाणी घाल नै पूरौ कर नांखै।

आजकाल वकीला रौ काम है–झगडा-टंटा वधारणा। झगडा-टंटा नी व्है तो उणा रा भाव ई कुण पूछै? जिको एक वार वकील री अवटी मे आय जावै, उणनै वे केई ऊंदा–पाधरा कोईड़ा सिखाय देवै। खोटी गवाह देवणी, खोटी बात नै साची कीकर करणी, गुनै गार नै निरदोस सावत कीकर करणी, निरदोस नै गुनैगार कीकर ठैरावणी। दाव-पेच लड़ाय नै खोटा नै खरौ अर खरा नै खोटौ कीकर करणी ए सगली बाता

वकीला वास्तै डावा हाथ री ख़ेल है। इण भांत आज वकीलात री धंधी रास्ट्र घातक, समाज घातक, सत्य अर न्याव विहीणी अर ईमानदारी री खास दुस्मण ह्वै ग्यौ है। फरीक अर दलाल खोटा केस लायनै वकीलां रा खीसा भरवा मे रैवै। अर वकील पण खोटा केसा री मोय मे रैवै जिण सूं खेप पाड सकै। ओ सगली माया जाल धरम नै धोखौ देवै।

जिकौ धणी चोरी अर लूट फाट करै उण नै समाज तिरस्कार री निजर सूं देखै। सरकार पण वानै सजा देवै। मानखौ वारी निंदा करै अर प्रजा ऐडा सू चेत नै रैवै। पण जिको बगला-भगत चोरिया अर बेईमानी करै वा सू प्रजा अजाण रैवे। इणा सूं बचणौ घणौ दोरौ। इण बगला भगता मे खोटी जाहेरात (एडवरटाइजमेण्ट) करण वाला पण भेला है।

एक बुद्धिवान आदमी छापा मे जाहेर खबर दीवी के 'जीमती वखत माखियां रै त्रास सूं बचवा रौ उपाव— फगत एक आना मे।' मिनखा देख्यौ के उपाव तो खूब सस्तौ है। उणां एक एक आना री टिगटा डाक सूं भेजणी माडी। मोकली टिगटा आया पछै उणै आदमी जवाव भेज दियौ के 'जनाब, जीमता वखत एक हाथ सूं जीमता जावौ अर दूजा हाथ सू माखिया उडावौ। माखिया आपनै विल्कुल फोडा नी घालैला।" टपाल खरच वास्तै एक पैसा रौ वधारै टिगट पे'ला सूं इज मंगवाय लियौ हो (उण वखत पोस्टकार्ड री कीमत एक पैसौ इज ही) इण भांत मिनख दीठ चार पैसा हजम ह्वै ग्या। इण जाहेरात मे लोगडा फस्यौडा हा। अर इण भात उण भाईडै तो नो नी करता दस पनरै हजार रूपिया भेला कर लिया।

इणीज भात परदेस मे जे कोई नै कोई पडी चीज लाध जावै तो वो लेय नै रवानै नी ह्वै। लाधौडी चीज पुलिस थाणा मे जमा कराय देवै जिण सूं पाछी घर धणी नै मिल जावै। उण मुलका मे इसा दाखला मोकला मिलै। पण भारत मे गुमियौडी चीज रौ पत्तौ ई नी लागै।

इगलैंड मे थोडा इज बरस पे'ली एक फर्म पोतारा गिराका नै चार लाख पाऊंड (लगभग ५४ लाख रुपिया) री रकम पाछी दीनी। आ फर्म कागद रा खोखा बणावण रौ काम करती। काम सरु करता वखत उण फर्म री धारणा ही के खोखा भाव मे मूंघा पडैला। इण वास्ते ार पात मे खोखारी कीमत वधारै राखी। पण काम कीधा सू फर्म नै

ठा पडी कै खोखा इतरा मूंघा नी पडै । फर्म अणूंतौ नफौ नी कमावणी चावती । इण वास्तै सेवट उण फर्म पोतारा गिराका नै एक पौंड वे सिलिंग हरेक नै पाछा दीना । आ रकम मूल रकम री दस सैकड़ा जितरी ही ।

अर आपणै भारत रौ हाल ओ है के भारत री तरफ सूं रसिया नै चार लाख जोडी बूट भेजिया । रसिया पूरा पैसा देवारौ वचन दीनौ हो पण अठारी उण कंपनी कांई कियौ के बूटां मे कागद रा गत्ता घाल नै माल सफा हल्कौ तैयार कियौ अर भेज दियौ । रसियावालां थोडौ सोक माल तो लियौ अर पछै वानै ठा पडगी के माल सफा हल्कौ है, तो उणां सगलौ माल पाछौ कंपनी नै भेज दियौ । ओ है भारत रै वैपारिया री ईमांनदारी रौ नमूनौ ।

सरकारी कांमा मे पण दक्षिणा दीना वगैर कांम पार पडै इज नी । सरकारी नौकर कांम चोर, वेईमान अर लाचिया ह्वैग्या है ।

इण भात विणज अर वैवार मे परदेस रा मिनख आंपा करता घणा ईमानदार है । आपा वानै अनार्य कैवा । पण वा सूं आपा नै मोकली वाता सीखणी है ।

आंपाणै अठै कौटुंबिक अर सामाजिक जीवन मे वेईमानी मोकली फैल्यौडी है । कुटुम्ब मे पण ईमानदारी सूं काम करण री विरती कम होयरी है अर काम चोरी वधती जाय री है । भाई-भाई मे वंटवाड वास्तै अर लेण देण वास्तै झगडा चाल रह्या है । एक भाई वीजा भाई रौ हक खोसण री ताक मे रैवै । इणीज भात कुटुंब जे कोई निवलौ पडै तो उणरी मिलकियत हडप ह्वैता जेज ई नी लागै । समाज मे वर विक्रय अर कन्या विक्रय धूम धडाका सूं चालै । ए रुढियां पण वेईमानी रौ एक तरीकौ इज है । इणीज भात सीरोली चीजा अर संस्थावा री माल हडपणौ तो एक मामूली वात है । सस्थावा खानगी काम मे आवै, एक काम रै वास्तै मेली कीनीडी रकम दूजा काम मे लागै, जीमण वार ह्वै जठै जीमण वाला री खोटी संख्या बताइजै । सफाकूडा केस लडी जै अर कूडी गवावा देवी जै । वेईमानी रा बीजा पण सैकडा काम ह्वै । ए सगला धंधा आंपणी वेईमानी रौ ढौल वजावै है ।

धार्मिक क्षेत्र मे पण वेईमानी ओछी कोयनी । धर्मादा री रकमनै

घर काम मे वापरणी आ तो एक मामूली वात है। धर्म रा नांम सूं विधवा वा, अपगा अर अनाथा वास्तै रकम भेली करणी अर उणनै हडप कर लेवणी पण कोई मोटी वात नी है। धर्म रा नाम सूं चमत्कार वतावणा अर अधसिरधालु मिनखा नै ठगणा, आ पण एक साधारण वात है। इसा वेईमाना री भारत में कोई टोटो नी है। धर्मस्थांना मे पगरखिया री चोरी तो नितरी वात ह्वंगी है। ए गगली वाता धर्म रा नाम नै वट्टो लगावै।

गाधीजी सेवाग्राम मे जायनै मुकाम कियां पछै वो एक तीरथ वणग्यो हो। उठै एक जापानी आयौ अर उणै गाधीजी नै वादरा री तीन मूरता भेटी दीनी। उण मे एक वादग रै हाथ मू डा आडा, दूजोडा रै काना आडा अर तीजोडा रै आंख्या आडा हा। तीनूं मूरता मोटी सीखामण देवण वाली ही। वे मानखा नै मूंडा, कानां अर आख्या माथै सजम राखण रो वोध पाठ पढावण वाली ही। पण एक दिन उठै कोई अजाण आदमी पूगौ अर तीनूं मूरता नै लेयनै तैतीसा मनाया।

रेल्वाई टेसण सूं लगाय नै सेवाग्राम तक री भाडौ आसरै तीन च्यार रुपिया हो। पण घोडा गाडिया वाला परदेसिया कना सूं पनरै-वीस रुपिया लेय लेवता। पडै ज्यूं ई पडावता। कई परदेसियां अर जात्रुवा री सामानई गायब ह्वै जातो।

भारत भोम रा तीरथा माथै पडा जिकी लूट मचायौडी है, वा देखी ह्वै तो अकल ई काम नी करै। पंडा रै पंजा सूं स्यात इज कोई जात्रु वचतौ ह्वैला। इण भात तीरथा माथै पण ईमानदारी री देवाली निकलियौडी है।

राजनैतिक क्षेत्र री तो वात ई नी करणी। उठै तो वेईमांनी रौ अखंड राज है। काला धवला करणा राजनीतिग्यारै वास्तै डावा हाथ री खेल है। चुणाव मे उभाह्वियौडा उम्मीदवार लोका नै पातराय नै, खोटा बत्ता देयनै, पैसा देयनै, माल मलीदा खवाय नै अर दारू मास तक पूरव नै पोतारौ काम काढलै। चुणाव जीतण वास्तै जिका तरीका काम मे आवै वा मे नीति जिसी तो कोई वात इज नी है। राज काज मे तो जिकौ आदमी ४२० करवा मे परवीण ह्वै वो सफल राजनीतिग्य गिणीजै। राज काज जाणै वेईमाना अर वदमासा री अड्डौ। राजकाज रा दाव पेच इज बेईमानी री बीजौ नाम है। सत्ता हाथ मे आया पछै पोतारा आदमिया नै नौकरी देवणी, लाच-

लेवणी, लाइसंस दिरावणा, विणजवैपार में वैपारिया री मदद करणी के वैपार मे पोतारी ई पाती राखणी, कारखाना खोलावणा विगैरै कई कवाड़ा चालै। पण जिकौ गरीव वेकार है अर जिणा नै धंधा री साचाणी जरूरत है, वांनै रखडतौ फिरणौ पडै। इण ढंग सूं सगली वेईमांनी अर बदमासी सेवा रा नाम माथै चालै। सरकारी नौकरा मे पण ठेट ऊपर सूं लगाय नै नीचै तांई अनीति, लाचरिस्वत अर वगसीस लेवण रौ रिवाज पड़ग्यौ है। जिण पक्ष रौ वहुमत व्है वो अल्पमत पक्षनै हर तरै सूं दबावण री कोसिस करै। उण माथै कूडा आल लगावै।

कला अर संस्कृति रा क्षेत्र मे पण वेईमांनी री पार नी है। एक बीजा री नकल करणी। बीजा रा लिखाण नै पोतारौ वतावणौ, दूजा रा पेटेट चितरांम पोता रै नांम चढावणी, ए सगली बातां आज कला अर संस्कृति री दुनिया मे चाल री है।

सिक्षण रौ क्षैत्र पण वेईमांनी सूं आघौ नी है। इण क्षेत्र मे पण गुरुवा अर चेलां बिचालै बेईमांनी री खैंचाताण चालै। जिकौ विद्यार्थी ट्यूसन राखै वानै परीक्षा मे पास कर दिया जावै अर ट्यूसन नी राखै वे नापास। कारण के विद्यालय मे जो अध्यापक भणा वैनी। जेम तेम करनै घंटा (पिरियड) पूरा करै। कोईक विद्यार्थी रै थोडौ घणौ पांनै पड़ जावै तो ठीक नी तौ पछै लीला लैर करौ। विद्यार्थी पण इसा नाजोगा अध्यापका नै लाच देयनै पोता रौ कांम काढ लेवै। इण भात अध्यापक विद्यार्थियां कना सूं रिस्वत लेयनै वानै पास करै। कईक विद्यार्थी परीक्षा मे चोरिया करै। इण मे पण नितनवी तरकीबा काढै। कोई हाथ माथै लिखनै ले जावै, कोई खीसा मे कागद घालनै ले जावै तो कोई जूता मे घालनै ले जावै तो कोई दूजी तरै सूं। पण कैवण रौ मतलब ओ के विद्यादेवी रा पवित्र मंदिर मे पण वेईमानी पूजा जोरदार सूं चाल री है।

आध्यात्मिक क्षेत्र पण वेईमानी सू आघौ कोयनी। इण क्षेत्र मे ई जोग रा नांम सूं, ब्रह्मविद्या रै नाम सूं अर भगवत भजन रै नाम सूं मोकला पडपच चालै। भगती रै नांम सूं, तो पूरौ वैपार इज चालै। धंधा मे अनीति सूं धन कमाय मै भगवान री भगती रौ अफंड करवारौ अर ईस्वर पौतै नै ई ठगवारौ तो एक रिवाज व्हैग्यौ है। पाप करनै

उणरा खोटा फल सूं बचवा वास्तै ढूंगी लोक रांमनाम री आसरी लेवै। पण भगवान नी छेतरीजे। मानखौ पोतै इज छेतरीजै। ईस्वर इतरौ अन्यायी कोयनी के एडा मोटा-मोटा पापिया नै फगत नाम स्मरण करवा सूं के वखांण करवा सूं इज पाप मुक्त कर नांखै। पापी नै पाप री फल तौ भोगवणौ इज पड़ै। इण नै भोगिया विना छूट कौ कठै?

इणीज भात वचन री ईमानदारी पण एक मोटी ईमानदारी है। भारत रा रैवासी तो हर बात मे लारै है। कोई नै वचन देय नै उणनै पूरौ नी करणौ, मुकर कीनौडा समय माथै काम पूरौनी करणौ के समय माथैनी पूगणौ, दीनौडा वचन री ध्यान नी राखणौ, ए सगला बेईमानी रा इज नमूना है।

खरौखर आज भारत नीति रा मामला में घणौ लारै रैयग्यौ है। भारत मे सगला कामां मे मिनखा मे दुकानदारी री भावना रैवै। सेवा री भावना रौ कठैई अतो पतौई नी है। सेवा री भावना उठै ईमांनदारी पण ह्वै सकै। घर मे मा जचै जिकोई कांम करै पण काम करती वखत उणमे कोई स्वारथ री भावना नी ह्वै। काम करनै कोई मेहनताणौ नी चावै। सेवा रौ ओइज सिद्धान्त है। अर भारत रा लोका में जद स्वार्थ री ठौड़ सेवा री भावना जागैला जणा इज ईमानदारी री जोत पण परगट ह्वैला।

जूना जमाना री एक बात है—हजरत अली साहब राजकाज रौ काम करता हा। मैंणबत्ती सलगती ही। उणीज वखत बे सरदार वानै मिलणनै आया। वां उण सरदारा नै बैठवा री सानी करी अर हिसाब गिणण लाग्या। पूरौ हिसाब गिणिया पछै वा मैंणबत्ती राजकर दी अर खीसा मे सू बीजी मैंणबत्ती काढनै सुलगाई। सरदारा नै अचूंभौ ह्वियौ, उणां पूछ्यौ—आप एक मैंणबत्ती बुझायनै बीजी क्यूं सुलगाई? हजरत अली पडुत्तर दियौ—पे'ली म्हूं सरकारी काम करतौ हौ, उण वखत मे सरकारी मैंणबत्ती सुलगाई, ही अर अबै म्हारौ खानगी काम है इण वास्तै घरू मैंणबत्ती सुलगाई है। ईमानदारी प्रमाणै म्हनै यूं करणौ इज चाहिजै, इणमे खोटौ काई है?

कैवण री मतलब ओके वानै सरकारी काम मे ई सेवा री भावना रा दरसण ह्विया। इण कारण इज वे एक मोटा ईमानदार गिणीजिया।

सेवा भावना रो मतलब ओहै के कोई पण काम बिना स्वार्थ निस्ठा, धुन अर वफादारी सूं करणौ। काम नी तो कोई मोटौ है अर नी कोई नैनो। पोता-पोतारी जगा सगलाई ठीक है। जे इण भांत री विरती व्है तो भारत भोम मूं बेईमानी रो मूंडौ कालौ व्है जावै। पण आज की तारीख मे तो चाफैर स्वार्थ इज स्वार्थ दीसै। निस्वार्थ कठैई निजर ई नी आवै। पण सेवट आपानै बेईमांनी री जड़ खोद नै काढनाखणी है।

मानखा नै जे पोतारा जीवण नै स्रेस्ठ बणावणौ व्है तो उणमे ईमानदारी री जोत जगावणी चाहिजै। नी तो पोतारो जमारौ भ्रिस्ट करैला अर दूजा नै पण डूबौवेला। इण सूं वो पोतारा समाज, देस अर धर्मनै पण वदनाम करैला।

भारतवासिया नै आख्या खोलनै विचार कर लेवणौ चाहिजै। परदेसिया सूं आपानै कई बाता सीखणी है। आध्यात्मिकता री लाबी चौडी बाता करणी फिजूल है। हरेक काम ईमानदारी सूं करनै आध्यात्मिक जीवण बितावणौ चाहिजै।

म्हूं आप सू उम्मीद राखूं के आप ईमानदारी नै जीवण मे उतारौला, हरेक काम मे प्रमाणिकता रौ पूरौ ध्यान राखौला। आ व्हिया सूं इज ईमानदारी री जोत जागैला, मानखा रा जीवण सफल व्हैला।

卐

१

जैनसंस्कृति रौ पुण्य पर्व

जैन सस्कृति मे पर्वाधिराज पजुसण रौ मोटौ महातम है। ओ पर्व आपणै ऊर्ध्वमुखी विराट चिंतन रो सर्वोत्तम प्रतीक है। इण मे आपणी सस्कृति, सस्कार अर सर्वोच्च आध्यात्मिक जीवण रौ रहस्य समायोडौ है।

आपा जद प्राकृत भासा रै साहित्य रौ अभ्यास करा तो पर्युसण सबद वास्तै 'पज्जुसण' अर पज्जोसवणा' सबद मिलै। इण सबदां रौ सस्कृत रूप पर्युपणा, पर्युषण अर पर्युपशम व्है। पजुसण सब्द रौ पूर्ण अर्थ है आतमा नै सम्पूर्ण रूप सूं आत्म भाव मे लवलीन कर लेवणी, आत्माभिमुख व्हैणौ, आत्मानुभव मे तल्लीन व्है जाणौ। आत्मा रै सुद्ध सरूप रौ चिंतन मनन करणौ अर आत्मनिरीक्षण करणौ। संसार रा विकारा सूं आघौ रैवनै आत्मोन्नति करणी। पर्युपशमता रौ अर्थ है—सात रैवणौ। जिण विकारा रै कारण आतमा दुखी, चचल अर चलायमान हुऔ है, जिण सूं आत्मरमण रौ अनोखौ आणंद उठाय नी सकै, उण विकारां नै सात करणा।

पजुसण आत्म चिंतन रौ पर्व है। पजुसण आत्म मंजन, आत्म मंथन अर अत करण नै ससोधन करण रौ पर्व है। इण मगलकारी क्षणा मे साधक चिंतन करै के म्हू कुण हूँ अर म्हारौ काई सरूप है।

आज रौ साधक जितरौ विचार बीजा लोका खातर करै, उण सूं सौ मा भाग रौ विचार पण पोतारै वास्तै नी करै। 'म्हूँ कुण हूँ ?' इण सवाल रौ विचार तो वो करै इज नी।

आपा नै कोई पूछै के 'थे कुण हो ?' तो पडुत्तर मे आपा कैवां के

'म्हारौ नाम फलांणौ है। पण ओ नांम तो आपणै सरीर रौ है। अर ओ सरीर नासवान है। विचार करौ म्हूँ अथवा म्हारौ कैवतां ओ सरीर इज है के इण सू अलगी कोई चीज है।

आंपणी आख्या सगली चीजां नै देखै पण आपां कैवा के 'म्हूँ देखूं हूँ।' नाक गंध सूंघै पण आपा कैवा के 'म्हूं सुगध लेवूं हूं।' चालण-फिरण रो काम पग करै। पण आपा कैवा के 'म्हूँ चालू हूँ।' इण सगली वाता सू एक चीज सफा चवडै आवै के जोवा रौ काम करणा री आख्या, सूंघ वारौ काम करणार नाक अर चाल वारौ काम करणार पग इण सगला सूं न्यारौ कोईक 'म्हूं' है। मिनख रा सरीर मे सू ओ म्हूँ निकल जावै उण वखत ए आख्या, ओ नाक के ए पग कोई काम नी करै। आ माढा तीन हाथ मानख देही है ज्यूं इज पड़ियौ रैवै। धरती माथै पडियौ मडौ नी देख सकै, नी सूंघ सकै अर नी चाल सकै। अबै आप इज वतावौ के आ 'म्हूँ' काई वला है। आप इण 'म्हूँ' रै वावत कदैई विचार कियौ है ?

डॉक्टर कैवै के आंख्या री निजर वे भात री व्है। एक अलगारी निजर अर वीजी नैडारी निजर। अलगारी निजरवालौ अलगी पड़ी चीजा आछी तिरिया देख सकै पण नैडी पडियौडी सावल नी देखै। उणनै कनै पडियौडी चीजा झाखी दीखीजै। आपा उणनै कोई पोथी वाचवा नै देवा तो वो वाच नी सकै। वो कैवैला—'आखर सफा नी दीखै।' जिणरी निजर नैडारी व्है, वो नैडी पडी चीजा तो सफा देख सकै, नैना आखर पण वाच सकै पण वो अलगी पड़ी चीजा भली भात नी देख सकै।

आज आपणी अलगली मानसिक दीठ तो सातरी है। आपा अलगी पडी चीजा नै तो आछी तिरिया जाणा पण आपणै पोता रै वावत आपणौ ग्यांन सफा थोडौ है।

आज रौ विद्यार्थी अकवर, सिकदर, हिटलर अर नेपोलियन री जन्म तिथ अर मरण तिथ तो याद राखै, पण, अचूंभारी बात आ है के पोता रै वाप दादा री मरण तिथ याद नी राखै।

भारत भोम रा रिसिया, स्रमणा अर पडता एक सुर सूं कह्यौ है के सैसू पे'ली आत्मा नै ओलखौ—'**आत्मानविद्धि** जिणै पोतारी आत्मा नै ओलख ली उणै सगली वाता ओलख लीवी। '**जे एग जाणई से सव्व**

जाणई ।' महात्मा ईसू पण कह्यौ है—Know thyself (पे'ला थूं पोता नै इज ओलख के थू कुण है ?)

कुरखेतर रा मैदान मे वीर अर्जुण नै उपदेस देवता स्रीक्रुस्ण कह्यौ—'जो पोता नै नी ओलखै वो पोतारै सागै इज दुस्मण जिसौ वैवार करै ।'

'अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्'

जैन संस्कृति रौ ओ पुण्य पर्व संदेसौ देवै—'थे थानै पोता नै ओलखौ ।' खरी बात तो आ है के आतम दरसण है जिकौ इज जगत् दरसण है । एक जैनाचारज कह्यौ है—पे'ली पोतारौ कल्यांण करौ अर पछै वण सकै तो बीजा रो कल्याण करौ । पण जठै ओ सवाल पैदा ह्वै के कल्याण पोतारौ करणौ के बीजारौ ? उण वखत पे'ली आतम कल्याण इज करणौ चाहिजै ।

आदहिद कादव्व, जदिसव्वकई परहिद च कादव्व ।
आदहिद परहिदो, आदहिद सुट्ठु कादव्व ।।

हिंदी मे एक जाणी ती कैवत है—घर मे दीवा सुलगाया पछै इज मस्जिद मे सुलगावणौ चाहिजै । अंग्रेजी भासा मे पण एक इसीज कैवत है—'Charity begins at home' उदारता के पुन्न री सरुआत पोतारै घर सूं इज ह्वैणी चाहिजै । वैदिक रिसिया पण कह्यौ है—**'विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।'** थे थानै पोता नै आछी तिरिया ओलख लो के म्हूँ कुण हूँ ?'

साधक पोतानै ओलख ले जरै सम्यग् दरसण रौ अनोखौ परगास ह्वै । अर सम्यग्दरसण रौ परगास ह्वै तांई कसाय क्षीण ह्वैवण लागै अर वीतराग भाव री प्राप्ति ह्वै । साधना रौ छेलौ पावडियौ पण ओइज ह्वै । इण वास्तै सै सूं पे'ली पोतानै ओलखणौ जरूरी है । आजरा पुण्य पर्व री पुनीत प्रेरणा आ इज है ।

●

१०

क्षमा पर्व

भारतीय संस्कृति मे सास्कृतिक पर्वों रौ घणौ महात्तम है। यूं ए पर्व कोई खास प्रसगां री पुण्य स्मृति मे मनाइजै। इणा सूं मानखा नै आदर्शों री प्रेरणा मिलै।

यूं तो जैन धर्म रा सगला पर्वां रो महात्तम है, पण पर्वाधिराज रौ विडद तो फगत पजुसण नै इज मिलियौ है। इण पर्व री वाट आवतौडी जांन री गलाई जोई जावै। अर इणरै आवता इज मिनखा रै मन मे नवी चेतना, नवी जागृति अर भव्य भावनावा जागै। जिण लोका री जवांन माथै कदेई धर्म रौ नाम ई नी आवै, वै ई इण पुण्य वेला मे धर्म साधना करता निजर आवै। एक अठवाड़िया री भावपूर्ण साधना रै पछै पर्व रौ जो छेलौ दिन आवै वो संवत्सरी वाजै। संवत्सरी रौ वीजौ नाम क्षमा पर्व है।

धरती पण क्षमा रै नांम सूं ओलखी जै। धरती माथै फूस-फाटा, लकडी-कूकडी अर कूडोकचरौ पडियौ रैवै। धरती इण चीजां नै धीरै-धीरै रेत वणाय नै पोतारै मायनै मिलाय नाखै। इणीज भात विकृत संजोगा नै पातर जावणी, वीजा दीनौडी तकलीफा नै मन मे सूं काढ नाखणी अर वारौ भूंडौ नी चीत वणौ, इणरौ नाम क्षमा है।

क्षमा कायरां रौ नी पण वीरा रौ सिणगार है। जिकौ कायर है वो क्षमावंत नी ह्वै सकै। अठै वीर रौ मतलव सरीर सूं मजवूत ह्वैणौ के आगल जीभौ ह्वैणौ नी है। वीर रौ मतलव है द्रिढ मनोवल वालौ मिनख। जिकौ मिनख फालतू रीस नी करै। कडवी वात रौ पडुत्तर मीठास सूं देवै, विखौ पडिया ई जिकौ चलायमांन नी ह्वै, इसौ मिनख

इज साचौ वीर गिणी जै। इण वास्तै इज रिसि मुनिया कह्यौ है—'खमापहुस्स' वलवान मिनख री क्षमा आइज साची क्षमा है।

आधुनिक कवि दिनकर रा सवदा मे—

क्षमा सोहती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन
विस रहित विनीत सरल हो

स्टर्न नाम रा एक अंग्रेज लेखक लिख्यौ है—

'A Coward never forgives, The brave only know how to forgive.

कायर कदैई क्षमा नी कर सकै। क्षमा करण रौ काम तो वीर रौ है।

जिकौ धणी निवलौ ह्वै वा पारका रौ आस रौ सोवै। जिकण कनै मनोवल अर आत्मवल नी ह्वै, वो इज सस्त्र वल रौ आसरौ लेवै। जिण रौ आत्मवल द्रिढ ह्वै वो सस्त्रा रौ आसरौ नी लेवै। उणनै पंड वल के सस्त्र वल री जरूरत इज नी रैवै।

क्षमा मिनख नै भारी खमौ अर सात वणावै। क्षमा पोतारै वल री ओळखांण देवती कैवै—अपकार माथै अपकार करणी अर गुनैगार नै सजा देवणी मोटी वात नी है। मोटी वात तो है भूंडी करण वाला री भलाई करणी, गुनैगार नै प्रेम सूं वसीभूत करणौ अर हित्यारा रौ अंत. करण वदलणौ, ए काम महापुरखा रा है।

एच० डव्लू० सो नांम रै एक आथमणै विद्वान लिख्यौ है—There is no revenge so Complete as forgiveness दोखी सूं दुसमणी काढणी ह्वै तो उण रौ असली इलाज क्षमा इज है। अवखा सूं अवखा कांम नै करवारी कूंची के वसी करण मंत्र क्षमा इज है। क्षमा एक इसौ सस्त्र है, जो सीधौ आगला रै हिरदा माथै असर करै। मोटा सूं मोटौ पापी क्षमा सूं काबू मे लियौ जा सकै। जिण रै हाथ में क्षमा रूपी अजेय सस्त्र ह्वै, दुर्जन, सूं दुर्जन मिनख ई उण रौ कांई नी बिगाड सकै।

स्पेने एक ठौड़ कह्यौ है—

To retun evil for good is devilish, to return good for good is human, but to return good for evil is Godlike

उपकार री बदलौ अपकार सूं देवणौ रागसी विरती है, उपकार री बदलौ उपकार सूं देवणौ मिनखपणौ है पण अपकाररी बदलौ उपकार सूं वालणौ देव विरती है।

देव गुणा बाबत पोप पण कह्यौ है—

To err is human, to forgive is devine.

मांनखा सूं मूल ह्वणी सुभाविक है, पण उण नै क्षमा करणौ देवी गुण है। किणरैई सागै भगडौ हुओ ह्वै के वैर बंधाणौ ह्वै तो उण नै मन में संचय करनै नी राखणौ। आ राग सी विरती है, देव विरती नी है।

गुनैगार रौ गुनौ मन में सूं काढनै उणरै सागै प्रेम रो वरताव राखणौ आ एक देव विरती है। उणरी गाला नै पण आसी सरूप मे मांनणी चाहिजै।

महात्मा ईसा नै जिण वखत पकडनै फासी माथै लटका वण नै ले जावता हा उण वखत उणा कह्यौ हो—'O father! forgive them They Khow not what they do, (हे भगवान, इणा नै माफ करजौ, कारण के इणा नै ओई ठा कोयनी के ए करै काई है)

स्रमण संस्कृति रा आगीवाण भगवान महावीर क्षमा रा परम उपासक हा। हजरत मुहम्मद पण क्षमा रा पूरा हिमायती हा। मीरा, संत तुकाराम, आचारज अमरसिंह जी, महात्मा गांधी अर विनोबा भावै रै जीवण सूं पण क्षमा रौ बोध पाठ मिलै। क्षमा आपणौ जीवण है, धर्म है, प्रांण है अर आत्मा है। इण पुण्य प्रवाह मे सिनांन करण वालौ मिनख एक वेला तो वोलै ला इज—

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं न मज्झ केणई॥

म्हूं सगला जीवा सूं क्षमा री विणती करूं। सगलाई जीव म्हनै क्षमा करजौ। सगला जीवा सू म्हारी दोस्ती है। कोई रै सागै म्हारौ वैर कोयनी।

स्रमण भगवान महावीर स्रमणा नै वृहद् कल्पसूत्र रा चौथा अध्याय

मे साफ आज्ञा दीनी है–'भिक्खूय कट्टु तं अहिगरणं आवियोसवेता,नो से कप्पई गाहावई कुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, बहिया विआर भूमि वा, बिहारभूमि वा निक्खमित्तए वा, पविसित्त एवा।'

हे साधक ? जो कोई स्रमण सागै कोई कारण सर कजियौ ह्वै जावै, तो उण सूं माफी माग लेवणी। क्षमा नी मिलै उठा ताई खाणौ दाणौ नी करणौ चाहिजै, वन मे लोटी ढोलवा पण नी जावणौ चाहिजै अर अभ्यास पण नी करणौ चाहिजै।

घर मे लाइणौ लागै जरै घर धणी पे'ली लाइणौ बुझावै अर पछै जीमवा बैठे। लाइणौ लागौडौ ह्वै जरै लाइणौ नी बुझाय नै जीमवा बैठे जावै तो मिनख उण नै मूरख गिणै। जिणरै मन मे रीस की आग सुलगती ह्वै, जिणरी आख्या क्रोध सूं राती चोल ह्वियौड़ी ह्वै, जिण रौ लोही गरम पाणी री गलाई ऊकलतौ ह्वै, उणनै भोजन के अभ्यास नही करणौ चाहिजै।

बाई बल रा 'जू ना करार' मे महात्मा ईसू कह्यौ है—थे प्रार्थना करण नै देव मंदर मे जाओ, जरै उठै गयां पछै थानै याद आवै के किण पाडौसी सागै थारौ झगडौ ह्वियौ है। जे याद आवै तो मंदर रा बारणा सूं इज पाछा परा वलजौ। पे'ली जाय नै उण पाडौसी सूं मेल कर लीजौ पछै देव पूजा करजौ।

एक बीजै अंग्रेज लेखक पण लिख्यौ है—

Never does the human soul appear so strong as when it forgoes revenge and dares to forgive an Injury

मिनख जिण वखत आगला री गलतिया नै माफ कर देवै, उणरा अपराधा नै भूल जावै, उण वखत उणरी आत्मा बलवान बणै।

भगवान महावीर कह्यौ है जिणरै सागै थारै वैर बंध्यौड़ौ ह्वै, उण नै माफ कर देवणौ चाहिजै। आगलौ थनै सन्मान देवतौ ह्वै के नी देवतौ ह्वै, उणरै करतबां कानी निजर इज नी नांखणी। थनै तुरंत क्षमा मांग लेवणी चाहिजै

क्षमा माहत्तम वतावता उणै आध्यात्मिक प्रकरण मे लिख्यौ है—एक मिनख छासठ करोड़ उपवास करै अर बीजौ मिनख एक कड़वौ

वैण सांति सूं सेहन कर लेवै, तो उण दूजा मिनख नै पे'ला करता वत्तौ फल मिलै ।

क्षमा पर्व रै माहत्तम रौ संदेसौ ओ है—

जिणरै सागै आंपणी खटपट ह्वियौडी ह्वै के कजियौ ह्वियौ ह्वै, उण सूं माफी मांग लेवणी हिरदा माथै जिकी कालस जमियौडी ह्वै, उण नै अखैल नै हिरदा नै दरपण री गलाई सफा कर नांखणौ । अंत: करण रा कोई पण खूंणा मे कोई पण तरै री वैर विरोध रह्यौडी ह्वै तो उण नैं ऊखैल नै आघौ नांखणौ चाहिजै अर आ वात ध्यान मे राखणी चाहिजै के संवत्सरी पछै जांणै नवौ जीवण इज सरु करणौ है ।

卐

११

जीवण घड़तर रौ पायौ

भारत री संस्कृति अर संस्कार संसार मे सै सूं ऊचा गिणीजै। मांनखा रै जीवण री घडतर केडी व्हैणी चाहिजै, आ वात भारतीय संस्कृति अलेखूं बरसा सूं वतावती आई। जीवण रूपी महेल री चिणाई अर टिकाऊ पणा खातर संस्कृति एक खास गुण दियौ है। वो गुण जीवण घडतर रौ पायौ वाजै। उण गुण रौ नांम है विनय! आपणौ जीवण रौ आखौ महेल इण विनय री राग माथै ऊभौ है। सुद्ध आचार, ऊंचा विचार अर सात्विकपणौ विगैरै जो गुण है, वे जीवण महेल रै ऊपर सोनेरी कलस जिसा है। ओ कलस हरदम जगमगाट करै पर मानखा रौ ध्यान पोतारी कांनी खाचै। जे आपणौ जीवण रूपी महेल री राग मे विनय री इंटा माडियौड़ी व्हैला तो इज ओ कलस जगमगाट करैला।

एक रूखडौ लीलौ छम है। फल अर फूलां सूं लदियोडौ है। पंखेरुआ रै कलरव सूं गूंजै है। मिनख उणरी छिया बैठै। पण ओ रूंख कायम कठाताई रैवैला? जठाताई इण झाड री मूल मजबूत है, उठाताई तो इणरौ काई नी बिगडै। मूल इज निबलौ व्है तो वो रूंख कितराक दिन लीलौ रैय सकै? पखेरु उण माथै बैठ नै कितराक दिन कलरव कर सकैला? अर वटाऊ कितराक दिन उणरी छिया मे बैठ सकैला? वावल रौ एक झपाटौ के भूतेला रौ एक दोट के वीजली रौ एक झबूकौ पडता-इज इसौ निबलौ झाडतो जमी माथै पड जावैला। इणीज भात जे सस्कृति रूपी मोटा रूंख रै विनय रूपी मजबूत मूल नी व्है उणरी पण आ इज हालत व्है।

'ज्ञाता सूत्र' मे एक महत्वपूर्ण प्रस्नोत्तरी है।

जीवण री कसौटी करणार स्रेस्ठी, सुदर्सन मुनि, थावच्चा पुत्र नैं पूछै—जैन धर्म, जैन संस्कृति अर जैन दर्सण रौ मूल कांई है—**किं मूलए धम्मे** ? मुनि पडुत्तर देवतां क्षमा, दया, सरलता अर ईमांनदारी नैं धर्म रौ मूल बतायौ है अर कह्यौ है विनय धर्म रौ मूल है। **'सुदंसणा ! विणयमूले धम्मे।**

भगवान महावीर पोतारा छेला प्रवचन मे कह्यौ हो—**'मूलं धम्मस्स विणओ'** बौद्ध धर्म मे तो महात्मा बुद्ध विनय माथै एक आखौ पिटक लिख्यौ है। हजरत मोहम्मद साहब हदीस मे विनय री महात्तम बतावतां लिख्यौ है— मन या हर मुर्रिफको या हरमुल खैरै कुल्लि ही' जिकौ विनयवान वो इज सद्‌गिरस्ती पण है।

एक आथमणै विद्वान आइज वात वीजी तरै सूं लिखी है। Sense shines with double iusture, when it is set in humility हीरौ जठाताई एकलौ ह्वै, इतरौ सोभायमान नी ह्वै, पण जे उणनै सोना मे मंडाय दियौ जावै तो उणरी सोभा एकदम वध जावै। इणीज भांत जठै वुद्धि अर विनय रौ मेल ह्वै जावै उठै वमणौ परगास ह्वै। एक वीजै विद्वांन पण कह्यौ है—Humility is mother, nurse, root and foundation. नरमाई अथवा विनय सगलाई गुणा री मा, पोसण वाली अर मूल रौ पायौ है।

महात्मा आगस्टाईन नै एकर किणैई जिग्यासू सवाल पूछ्यौ—धर्म रौ सै सूं पे'लौ लक्षण कांई है ? तो विद्वांना एक इज जवाव दियौ के धर्म रौ पे'लौ, वीजौ के छेलौ लक्षण विनय इज है।

विनय एक इसौ लोह चुम्बक है के वो दूजा गुणां नै ई पोतारै कानी तांणै। आप जांणौ इज हो के सोनौ एक धातु है अर लोखण पण एक धातु है। पण हीरा, पन्ना के मांणक मोती री जडत आंपां सोना मे इज क्यूं करा ? आपा ए सगली चीजा लोखण मे क्यूं नी जडां ? कारण साफ है के सोना मे नरमाई है, नरमास है। सोना नै जिणरौ घणौ टीपवा मे आवै उतरौ इज वधारै वो नरम वणै। नरम अर निरमल होवण रै कारण इज तो सोनौ कुंदण वाजै। इणीज भात जिकौ मिनख नरमाई वालौ अर निरमल सुभाव रौ ह्वै वो मिनख इज पवित्र गिणीजै। नरमास कारण इज सोना मे जिण वखत हीरा पन्ना जड़ीजै

उणरी कीमत लाखा रुपिया ह्वै जावै। पण जे सोनी ई लोखण रैव्यूं कठण ह्वै तो अर हीरा री संगत नी करती तो उणरी कीमत लाखां रुपिया नी ह्वैती। जीवण नै नम्र बणावण री अर्थ है उणनै सोनौ बणावणौ। जीवन जद सोनी बणजावै तो उण मे क्षमा, दया, प्रेम, सत्य रूपी हीरा पण जडीज जावै। इसौ जीवण कीमती वण जावै अर ज्यूं-ज्यूं जीवण री कीमत वधै त्यूं त्यूं सुख अर साति पण वधै।

रात री वखत ह्वै। च्यारूं मेर घोर अंधरी ह्वै अर एक ओरडी में चानणो ह्वै तो चोर तो उठै नैडाई नी फरूकै। इणीज भात मिनख रै हिरदारूपी ओरडी मे विनय रूपी दीवारौ परगास है, उठै दुर्गुण रूपी चोर कठैई नेडाई नी आय सकै।

जिकौ साधक अभिमांन मे फूलीज जावै, वे पोता रै पंड री इज नुकसाण करै। जिण मिनख नै कुतुवमीनार माथै चढिया पछै दूजा वांमना इज दीसै बीजा नै पण वो मिनख वामणौ इज निजरा आवै। जिकौ मिनख बीजा नै हलेका गिणै वो जठै जावैला, उठा सूं ई खाली हाथ आवैला। पछै वो साधु संत कनै जावै के भलांई साखियात भगवांन कनै पण जावै। अभिमानी मिनख फूटोडा घडा जिसौ है। फूटोडौ घडौ तो खालीज रैवैला। उण मे ग्यान री परगास हरगिज नी पूग सकै। एक आथमणै विचारक कह्यौ है—थे खाली ह्वै नै जाओला तो सद्गुरु नै पण खाली कर सकौला। थे कुआ मे घड़ौ नाखौ अर वो घडौ पाणी ताई पूग नै नीचौ नी नमैं तो उण मे एक छाटोई पाणी नी आय सकै। इणीज भात थांरै जे कोई मोटा मिनख कनै जावण रौ काम पडै अर उठै जायनै जे थे नमनै नी चालौ तो थानै एक लगारई ग्यान नी मिल सकै। इतरा मोटा दरिया व कानी देखौ। नैनी-नैनी नदिया मे सूं पाणी लेवण वास्तै उणनै नीचौ रैवणौ पडै। इण वास्तै इज एक कवि कह्यौ है—

न हम कुछ हस के सीखे हैं
न हम कुछ रोके सीखे हैं।
जो कुछ थोडा सा सीखे हैं
किसी के होके सीखे हैं।

जिकौ पोतारा अभिमान मे इज गरक रैवै वो बीजा कना सूं काई नी सीख सकै। अभिमान रै कारण साधक री काई हालत ह्वै वा जैन सास्त्र री इण कथा सूं जाण ह्वै—

भगवांन रिखवदेव रा वीजौडा वेटा बाहुवली साधु बण्या। उणरै पे'ली वारै नैनै भाई भगवान रिखवदेव कनै दीक्षा लीनीही। बाहुबलि साधु वणनै जंगल मे तपसा करवा गया। भयंकर वनकटी, च्यारूं मेर सूं न्याड, उठै उणां उभा पगै ध्यान कीनौ। एक वे दिन नही, एक बे महीना नी पण एक वरस पूरौ ह्वैग्यौ। सरीर माथै वेला चढगी। कांना मे पंखरू ए माला घाल दिया। तामपण साधना सफल नी ह्वी। कारण के वांरा अंतर मन मे अभिमांन रौ सरप फूंफाडा मारतौ हो। वां रै मन मे आ भावना ही के म्हूं म्हारा नैना भाई रै आगै कीकर नमूं? अभिमांन रौ ओ खटकौ इज वारी साधना मे अटकाव पैदा करतौ हो। सेवट भगवांन रिखबदेव नै इण वातरी जाण पडी। उणा वारी दीक्षा लीनौडी वेटी ब्राह्मी अर सुंदरी नै वाहुवली कनै भेजी। वे मीठा सुर मे गावण लागी –

वीरा, म्हारा गज थकी उतरो रे!

बाहुबली रा कानां मे ओ अंतर नाद गूंजण लागो। वारौ अभिमान गलग्यौ। उणां नैना भाई नै वंदन करवा वास्तै पग उपाडियौ। अर पग उपाड़ता पांण वांरै अंतर मे केवल ग्यान रौ परगास ह्वैग्यौ। ग्यांन रै सूरज अभिमांन रा अंधकार नै मिटाय दियौ।

ओ है विनय रै चमत्कार रौ एक दाखलो। विनय इतरी मोटी चीज है के वा एक साधारण साधक नै ठेट भगवान ताई पुगाय दे। हलका गोतर री नीसरणी सूं ठेट ऊँची गोतर रा पगौथिया ताई लेय जावै। चावै जिसाई परबत नै पाणी रौ वालौ तोड नांखै अर मारग मोकलौ करदै। इणीज भात विनय रौ प्रबल प्रभाव पण जचै जिसा कठोर हीया नै माखण री पाण नरम वणाय नाखै। विनय साचौ परगास है, साचौ विकास है, अखूट मीठास है अर सद्गुणा रौ भंडार है। पण जरूरत है साचा विनय री। कारण के आजकल दुनिया मे नकली चीजा रौ चलण मोकलौ ह्वैगौ है। साचा मोती री ठौड कल्चर मोती अर खरा सौना री ठौड रोल्ड गोल्ड। इणीज भात असली विनय री ठौड आज हीण भाव, गुलामी, खुसामद अर थोथा वखांण इज चालै। इण सगली चीजा मे अर विनय मे रात दिन रौ फरक है। जठै विनय ह्वै उठै साचौ विवेक ह्वै। पण जठै हीणभाव, गुलामी, खुसामद अर थोथा वखाण ह्वै उठै मोह, असत्य, भय अर तिरसणा ह्वै।

इण वास्तै विनय रौ अर्थ फगत माथौ निमावणी इज नी है। सरीर तो फगत मल मूतर रौ भंडार है, मास रौ पूतली है के हाडकां रौ ढिगलौ है। इण वास्तै असली विनय रौ अर्थ है—पोता रौ पूरी जीवण अर्पण करणौ, महापुरखा री महानता कानी निजर राखणी अर वारै प्रति सद्भावना दिखावणी।

कोई साधक जरै कोई महापुरखरै चरणै जावै, उण रौ माथै सिरधा सूं निम जावै। वो मत्थएण वंदामि' कैयनै नमस्कार करै। माथौ सरीर रौ एक खास अंग है। ओ विचार रौ खजानौ है। मिनख नै जिकी इज्जत मिलै वा उणरै माथा रै कारण इज मिलै। मानखा रा सरीर मे जे माथै नी व्है तो ओ साढा तीन हाथ रौ सरीर मुड़दा जिसौ है। माथौ निमावण रौ अर्थ ओ है के—म्हूं म्हारौ माथौ आपनै भेंट करू हूँ। म्हारा विचार आपरै आधीन करूं हूँ। जिकौ विचार आपरा व्हैला, वे इज म्हारा व्हैला, जिकौ आपरी भावनावा है, वे इज म्हारी रैवैला, आप जिकौ सबद बोलोला, वे इज म्हूँ पण बोलूंला। आपणै बीच मे द्वैत भाव नी रैवै। विचार, बरताव अर चितण मे एकरूपता लावणी ओ इज माथौ निमावण रौ साचौ अर्थ है। फगत माथौ निमाय नै इज थे वानै थारी भावनावा अर्पण नी करी, वारी आग्या रौ पालण नी करी, वानै फोतका बरौबर ई नी गिणौ, वारै संदेसा नै पगा नीचै वाटौ, वारै विचारा नै हवा मे उडावौ तो इसा माथा नमावण रौ कोई मतलब नी। आतो एक यान्त्रिक क्रिया हुई। मसीन री गलाई एक चलवल जरूर हुई। पण इण सू जीवण रौ विकास नी व्है सकै। हाथ जोडण रै सागै मन नी जुडै तो उणरौ अर्थ इज काई? हाथ तो एक कैदी जोडै, एक गुलाम पण जोडै, पण उण मे नरमाई रौ लवलेस ई नी व्है। उण मे हीवडा रौ रणकार नी व्है। वंदन भावना सूं इज व्हैणौ चाहिजै। जठै विचारा मे एक रूपता व्है, भावनावा मे समता व्है, उठै इज भाववदन व्है। उठै इज आतरिक तप पण व्है। बारला तप करता आतरिक तप रौ घणौ महात्तम है। भगवती सूत्र रा पचीसमा सतक मे इण बाबत साफ साफ लिख्यौ है—ग्यान, दरसण अर चारित्र रै वास्ते सिरधा राखणी, ओ इज साचो विनय है, आइज साची तपसा है।

वैदिक संस्कृति रा महान् आचारज मनु कह्यौ है—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्बुद्धि यशोवलम्।

जिकौ मिनख सद्गुणी पुरखां री वंदना करै, वयोवृद्ध अर ग्यान वृद्धां री संगत मे रैवै, चोखै रस्तै चालै, सज्जना नै निमण करै, वानै वांरा जीवण मे च्यार अमोलक पदारथ मिलै—विद्या, जस, सगती अर लांवी उमर।

विनयसील मिनख नै संसार री कोई पण ताकत नुकसांण नी पुगाय सकै। जचै जिसौई विखौ आवौ के विपदा पडौ पण विनयवान मिनख रै साम्ही सै मैंणरी गलाई गल जावै।

एक सेठरी छोकरी पे'ली वगत सासरा सूं पीहर आई। उणरी साथणिया उणनै घेर नें पूछण लागी—वेहन, थारौ सुसरौजी किसाक है? वारौ सुभाव किसौक है? छोकरी वोली—'म्हु ठीक हूँ।' वीजी साथण उणनै सासू वावत पूछियौ—तीजी उणनैं जेठ जेठाणी वावत पूछयौ तो चौथी उणनै उणरा पति वावत पूछयौ। सगलाई सवालां रौ उणै तो एक इज जवाव दियौ के म्हूं ठीक हूँ।' उणरी साथणिया रौ धीरप छूटगी। वे वोली आतो म्हानै ई आछी तरिया ठा है के थूं ठीक है, पण म्हे थारा वावत कठै पूछा हा। थूं म्हांरा सवाला रौ जवाब देवै कोयनी अर कैवती जावै के 'म्हूँ ठीक हूँ।' वा गम्भीरता सूं वोली जे म्हूँ ठीक हूँ तो पछै सव ठीक है। अर जे म्हूँ खराब हूँ तो पछै सव खराव है। कारण के जो म्हूँ खराब होवुं तो पछै जचै जिसौई चोखौ वातावरण ह्वौ झगडा टंटा ह्वैला इज, कुटुम्ब बिखरैला इज, घर में महाभारत मचैला इज अर सुरग रौ ससार नरक वण जावैला आ वात सुणनै उण री सगली साथणिया नै संतोस ह्वियौ। एक विद्वान कह्यौ है के विनयवान मिनख रू जिसौ है। उणनै सातरी तरवार सूं ई नी काप सकौ। आप जाणौ इज होके वावल आवै जरै मोटा-मोटा झाडका जमी माथै ठरकीज जावै, पण कवला झाड वीट पोता री ठौड़ थिर रैवै। वावल अर आंधी री वारै माथै कोई असर नी पड़ै।

महाभारत री एक प्रसंग है। कुरु खेतर रा मैदान मे वाणां री सेज माथै सूतौडा भीस्मपितामह वारै जीवण री छेली घड़ियां गिणता हा। उण वखत धर्मराज एक आग्याकारी विद्यार्थी री गलाई पितामह नै

सवाल पूछ्यौ—जे दुस्मण बलसाली व्है अर हमलौ करै तो उण वखत काई करणौ चाहिजै । सवाल खास हो । इण वास्तै राजनीति रा विद्वांन पितामह जवाब देवता एक रूपक कथा सभलाई—एक दिन दरियाव पोतारी प्रिया सरिता नै कह्यौ—थारौ प्रेम देखनै म्हूं हरख गेलौ व्है ग्यौ हूँ । थूं तो म्हारै वास्तै वरसौ वरस काई नै काई भेंट लावै इज है । पण वेत्रवती काई भेंट नी लावै । इणरौ कांई कारण है ? वेत्रवती इणरौ खुलासौ करता कह्यौ—पतिदेव इण बीजी बेहना नै भेट लावती देखनै म्हारौ ई मन व्है । इण वास्तै म्हैं कईवार कोसिस ई कीनी पण पार नी पडी । इणरौ कारण ओके जिण वखत म्हा मे पूर आयौडौ व्है, उण वखत नेतर नीची नम जावै । उणनै म्हूं उखेल नी सकूं ।' धर्मराज थे पण नेतर (बेंत) जिसा नरम बणौ । तो कोई पण बलवान दुसमणई थारौ बाल वांकौ नी कर सकै । दुनिया री कोई ताकत थानै वकार नी सकै ।

नरमाई रूपी कवच धारण किया सूं मिनख निडर बणै । जीवण री ओ स्वीकृत सिद्धात है के कोमलता टिकाऊ व्है । कठोरता थोडा दिन इज रैवै ।

एक चीणी विद्वांन छेली अवस्था मे रोगी बण्यौ, पथा री माथै सूतौ । उणरा तेज अर पंडिताई रौ पूरा चीण देस नै गुमेज हो । उणरी मादगी रा समाचार उणरा चेला नै मिल्या । वो चेलौ वानै मिलण नै आयौ । मादा विद्वांन रा कुलमिभियौडा मूंडा माथै तेज आयौ । वे वोल्या—वेटा, थूं ठीक अवसर माथै आयौ । म्हूं थनै काई कैवणी चावूं पण अवार म्हारा मे इतरी ताकत कोय नी के म्हूं लावी बात चीत करूं । इतरौ व्है तां थकाई एक सवाल पूछणौ है—आ कैयनै उण विद्वान मूंडौ खोल्यौ अर चेलानै पूछ्यौ के 'बेटा, देख तो खरी, म्हारा मूंडा मे जीभ है के नी ।' चेलौ वोल्यौ—'गुरुदेव जीभ तो है ।' विद्वान वाकौ फाड नै फेर पूछ्यौ—'सावल देख, दात है के नी ?' चेले बरौबर तपास करनै कह्यौ—'गुरुदेव, दात तो एकई कोय नी ।' गुरु पूछ्यौ—जीभ तो सावत है तो पछै दात क्यूं कोय नी ? चेलौ विचार मे पड़ग्यौ के अबै कांई जवाव देवणौ । सेवट सोच विचार कीना पछै उणनै जवाब ऊकलियौ । वे वोल्यौ—गुरुदेव ! वात आ है के जीभ तो है नरम अर दांत व्है कठण । जिकौ नरम व्है वो तो कायम रैय जावै । पण जिकौ कठण व्है वो तुरत वरवाद व्है जावै ।

अबै तो आप विनय रौ महत्व समझग्या ह्वौला। आप ओ पण समझग्या ह्वौला के जीवन घडतर वास्तै विनय री सै सूं पे'ली जरूरत है। तिलक महाराज कह्यौ हो—नरमाई, प्रेमालु वरताव अर सहन सीलता सूं मिनख तो बापडौ काई देवता ताई वस मे ह्वै जावै। खरी-खर विनय एक वसीकरण मंत्र है। विनय सूं दुस्मण ई साथी बण जावै। एक गुजराती कवि कह्यौ है—"शामल विद्या वसीकरण नी विनय विशे वासो वसै"—संसार मे जो मंत्र-तंत्र अर विद्या है वां मे सै सूं सिरै मंत्रतंत्र के विद्या विनय है।

पंडता, विनय वांन मिनख रा तीन गुण गिणाया है—(१) जिकौ कडवा बोला रौ पडुत्तर मिठास सूं देवै।

(२) जिकौ रीस रौ अवसर ह्वैता थकाई मूंन राखै।

(३) जिकौ गुनैगार नै दंड देवता मन मे दया राखै।

आ सही है के जिकौ धणी विनम्र होवै वो आगै वधै।

इण भांत विनय वत अर सद्गुणी मिनख जठै-जठै गया, जीत लेय नै आया। वारी कीरत च्यारूं मेर फैलै।

थानै जे थांरौ जीवण सुधारणौ ह्वै, जीवण नै फूटरौ बणावणौ ह्वै तो विनय रूपी पायौ रोपौ। जीवण रूपी महेल मे विनय रूपी ईटा लगावौ। विनय सूं थारौ पोतारौ जीवण तो सुधरैला इज, पण इण रौ असर कुंटुंब समाज अर देस माथै पडैला।

卐

१२

जीवण : एक नाटक

मानव जीवण रै बाबत जितरौ ऊंडौ विचार भारत री संस्कृति मे हुऔ है, उतरौ विस्तार सूं स्यात इज कोई बीजी संस्कृति मे व्हियौ व्है इण संस्कृति मे मानव जीवण नै भात भात सूं समझण री कोसिस हुई है। मानव जीवण नै बणाबण वाला खास-खास मुद्दा, मानव जीवण रा न्यारा-न्यारा देखाव अर मानखा रै भातभात रा सुभाव माथै जिण ढंग सूं ऊंडौ विचार व्हियौ है, उण ढंग सूं स्यात इज कठैई हुऔ व्है। अठारा धर्म संस्थापका, विचारका अर सास्त्रकारा मानव जीवण री हर बात माथै पूरौ विचार कियौ है। जीवण रा उतार-चढाव, सुख-दुख अर हरख सोक माथै पूरी मैंणत सूं खोज कीनी है। इतरौ इज नी पण संजोग आया मानखा रौ जीवण एकदम कीकर पलटौ खावै, मिनख रै दिमाग अर हिरदा माथै केडा-केडा संस्कारा री छाप पडै इणरौ पूरौ विवेचन उणां कियौ है।

अठारा कलाकारा, कविया अर सिल्पकारा जिण भात मानखा रै वारला जीवण रौ चितराम उतारियौ है, उणीज भात उणै मायला जीवण रौ पण सागौपाग खाकौ खाचियौ है। उणा ग्रंथां अर सास्त्रा मे मानखा रै न्यारा-न्यारा रूप रौ आछौ हाल लिख्यौ है। इण उपरात किण संजोग मे हिरदा, मन अर बुद्धि नै थिर राखणा अर आत्मा नै एक मुखिया री गलाई ओलखणौ आ वात समझाय नै लिखी है।

उणा संसार रा जीवा खातर हमदरदी वतावता लिख्यौ है के ओ ससार एक नाटक साला है, सिनेमा घर है के चित्रपट साला है।

सगला जीव इण नाटक साला मे आवै। अर वारी प्रमाणै एक्टिग

करनै पोतारी आवडत वतावै । अर कांम पूर्ण ह्वियां रवानै ह्वै । पछै थोडी ताल अठी उठी फिर नै आवै अर पछै पाछौ नवौ नाटक वतावै । इण भात ओ चक्कर अनंत काल सूं चाल्यौ आवै । मानव जीवण रो नाटक घणौ मनोरंजक ह्वै । देखै जिसौ ह्वै अर हीया मे उतारै जिसौ ह्वै । इण वास्ते ओ नाटक आंपणै वास्तै घणौ कांम रो है । यूं तो सग लाई जीवण नाटक सूं आंपा नै वोध पाठ लेवणौ चाहिजै, पण मांनव जीवण रा नाटक सूं तो आंपणै वमणी प्रेरणा, वोध पाठ अर ग्यान लेवणौ चाहिजै । कारण के मांनव जीवण रा नाटक मे सूत्रधार पण मिनख इज ह्वै अर देखणियौ पण मिनख इज ह्वै । इण नाटक रा देखाव उणरै पोतारै जीवण जिसा इज ह्वै । इण कारण सूं वे वधारै जोवा लायक ह्वै ।

थां मे सूं घण खरा सिनेमा, नाटक के चित्रपट तो देख्यौ इज ह्वैला सिनेमा रा पड्दा माथै के नाटक री जवनिका माथै कित रा फूट रा-फूट रा देखाव आवै । अर ए देखाव कित री फुरती सूं वदल पण जावै । करैई एकदम सोवणौ देखाव आवै तो करैई साफ खराव । करैई भयंकर देखाव निजरां आवै तो करैई करुणा मूं भरियौडौ ! करैई सूगलौ देखाव दीसै तो करैई वीरता रौ । करैई सिणगार रौ देखाव देखीजै तो करै ई हंसण रौ । करैई रौद्ररस रौ देखाव आवै तो करैई सांत रसरौ । इण भांत जुदा-जुदा देखाव देख नै थे करैई राजी ह्वौ तो करैई उदास ह्वै जावौ ।

करैई मोह माया मे डूव जावौ तो करैई आंख्यां भरीज जावै । करैई थानै सूरापण चढै अर आख्या राती चोल ह्वै जावै तो करैई दुख सूं घवरीज नै वैराग कांनी मन करौ । मानव जीवण रा इण कूड़ा नाटक री थारै माथै कितरौ असर पडै ? थारै पोतारै जीवण मे कोई वखत हरख तो कोई वखत सोक चालता इज रैवै । अर सुख-दुख रौ जोडौ है सो ए तो आवता-जावता इज रैवै । पण जे थे अनुभवी मिनख नी हो तो जीवण रौ हरेक देखाव, हरेक चित्राम थानै डावाडोल कर नांखैला । थे जौ विवेक अर विचार सूं नाही चालौ तो थारै मन नै चलायमान ह्वैता कोई वार नी लागै । इण सगला ढेखावा रा संस्कार आप रै माथै पड़्या विना नी रैवै । अर पछै तो इण सस्कारां प्रमाणै आप नै वारंवार करना रौ नाटक करणौ इज पडैला । याद राखौ के इण जीवण रूपी

नाटक मे आप नै देखण वालो पण वणणी है। देखण वाला री हैसियत सूं आपनै थिर मन सूं विचार पण करणो है। जचै जिसा ई देखाव देख्या पछै ई आपनै आप री इच्छा माफक इज विचार पकड़णा है। साथै साथै थानै नाटक रौ एक्टर पण वणणो है। एक्टर वण नै नाटक आछी तरिया करणी है। जीवण रूपी नाटक मे सुख अर दुख, चढती अर पडती आवतीज रैवै। इसा सजोगा मे अभिनेता नै पोतारी धीरपनी गुमावणी चाहिजै। अभिनेता जो पोतारी असली ठौड भूल जावै तो आडो अवलो भटकतो इज रैवै। पछै नी तो वो साचो अभिनेता वण सकै अर नी साचो देखण वालो।

जिणां अभिनेतावा नै नाटक मे काम करतां देख्या है, वे जाणता ह्वैला के वे करैई राजा वणै तो करैई भिखारी। करैई दीन दुखी वण जावै तो करैई स्रीमंत। पण ए सगला पार्ट करता वखत वो ऊपरला मन सूं तो सगलो वरताव करै पण काई पण उणरा अंतरमन मे हरख सोक ह्वै खरो? भिखारी रौ पार्ट करता उणरा अतस मे दुख ह्वै? कोई रौ बेटो मर्‌यौ ह्वै, इसो पार्ट करता काई उणरा मन मे पीडा ह्वै? थे एक इज जवाब देवौला के दुख नी ह्वै। इणीज भात जिको देखण वाला है वांनै देखनै ई थानै थोडो विचार करणो पड़ैला। ठीक है के आणंद रो देखाव देखनै वारै मन मे खुसी भलाई ह्वो, पण कोई रौ जनम के मरण देखनै वानै असली खुसी नी ह्वै। आ जीवण रूपी नाटक री असली हकीगत है।

इण भात सिद्धात ओ राखणो चाहिजै के जीवण रूपी नाटक मे पण सखरा नरसा प्रसंग माथै नाटक रा नायक नै हरख सोक नी मनावणो चाहिजै। अबखा सूं अबखा वखत माथै ई अथवा कांई पण संजोग मे उणनै पोतारो धीरप नी गमावणो चाहिजै। पोतारी अक्कल नै थिर राखनै जो समै परभाणै वरत सकै बो इज नाटक रौ साचो खेलाड़ू है। इण सिद्धात माथै इज कर्मजोगी स्रीकृस्ण अर्जुन नै कह्यौ है—

> सुखे दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
> ततो युद्धाय युज्यस्व नैनं पापमवाप्स्यसि॥
>
> —भगवद्गीता, अध्याय २।३८

सुख अर दुख, नफौ के नुकसाण, हार के जीत इण सगला मौकां माथै समतुला राखनै जीवणरूपी जुद्ध मे कूद जा । यूं करया सूं पाप नी लागै ।

जीवणरूपी नाटक मे पण सुख-दुख, नफौ-नुकसाण, जीवण-मरण, संपत-विपत के हार जीत मे मन थिर राखणौ चाहिजै जिण सूं जीवण रूपी नाटक ढंग सर ह्वै अर इण नाटक में गरक ह्विया सू जो पाप लागै, उण सूं पण आघौ रह्यौ जा सकै । जीवण नाटक बावत आपानै एक कविरा इण सब्दा माथै पण विचार करणो पडैला—

जीवन के अविराम समर मे
कभी हार है, जीत कभी ।
कभी पराजय का रोना है
गाना जय के गीत कभी ।

जीवण रा चित्रपट मे पण कोई वखत हार, कोई वखत जीत, कोई वखत आणद, कोई वखत सोक, कोई वखत गावणी तो कोई वखत रोवणौ चालतौ इज रैवै । पण कोई पण मौका माथै मिनख नै निरलेप रैवणौ चाहिजै । इण भात ह्वै सकै जरै इज आंपां जीवण रूपी नाटक रा साचा अभिनेता वण सका ।

मानव जीवण रा नाटक मे पण मिनख कोई वखत रांम वण नै पोतारौ पार्ट करै तो कोई वखत रांवण वणनै । नाटक पडदा माथै राम अर रांवण, क्रुस्ण अर कंस, महावीर अर संगम, पारसनाथ अर कमठ, वुद्ध अर देवदत्त, गाधी अर गोडसे जिसा भात भातरा अभिनेता निजर आवै । पण उण वखत नाटक देखणिया नै इण सूं बोधपाठ लेवणौ चाहिजै । लोभ अर मोह माया सू अलगौ रैवणौ नै संसार री भलाई ह्वै जिसौ काम करणौ, इसौ सार लेवणौ चाहिजै । जे आछा संस्कार नी लिरीजै इण सूं नुकसाण होवै ।

इण वास्तै जीवणरूपी नाटक मे अभिनय करती वखत मानखा नै पूरौ-पूरौ ध्यान राखणौ चाहिजै । कारण के इणरौ असर सीधौ समाज माथै पडै । इण सू संसार रा सगला प्राणी संस्कार पकडै । इण वास्तै ओ ध्यान राखणौ चाहिजै के इण सूं मानखा नै कोई पण तरै रौ नुकसांण नी पूगै । कारण के अभिनेता पोते इज मोह माया अर भ्रमजाल मे पडण लागै तो पछै वो सफल अभिनेता नी गिणीजै ।

सुख-दुख, हार-जीत, सपत-विपत अर जीवण-मरण यारौ एक दिन तो अंत आवणौ इज है। ओ सगलौई खेल नासवान है, इण में पड्यां पछै मिनख पोतारा सुख के कल्याण री कल्पना नीं कर सकै। इण वास्तै-इज भारत रा मोटा मनीसी स्री क्रस्ण कह्यौ है—

य हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
सम सुख दु:ख धीरं, सोऽमृतत्त्वाय कल्पते ।

सुख अर दुख मे समता धारण करण वाला इण धीर मिनख नै ए सगली अड़चणी दुखी नी कर सकै। पोतारा मारग सू चलाय मान नी कर सकै। हे नरवीर अर्जुन इसौ मिनख इज अमरता रौ अधिकारी है।

साधारण मिनख पोतारा जीवण में आवण वाला विकट संजोगां मे, सुख-दुख मे अर हार-जीत मे चलायमान ह्वै जावै अर हरख सोकरी लागणी अनुभव करै। वे पोतारा मन नै काबू मे नी राख सकै। पण जिकौ जाणकार अर पक्कौ खेलाड़ू ह्वै वो भवैई चलायमान नीं ह्वै। जचै जिसी ई तिसणा री आधी उणनै नी डिगाय सकै। जचै जिसी ई मोह रौ भूतेलौ उणनै नी उखैल सकै। माया रौ फदौ उणनै हटाय नी सकै वो तौ निरभै होयनै, निर्स्चित, निस्काम अर निरद्वंद होयनै पोतारा मारग माथै आगै वधतौ इज रैवै।

भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, मरजादा पुरसोत्तम राम, प्रेम जोगी क्रस्ण अर प्रेम सागर ईसू खिस्त जीवण रूपी नाटक रा असली खेलाड़ू हा। जगत रूपी रंगमंच माथै आयनै उणा इतरी हुंसियारी सूं अभिनय कीनौ, इतरा वैचारिक ढंग सूं दूजां रौ जीवण नाटक जोयौ, इतरी हुंसियारी सूं पोतारै फरजा री पालणा कीनी के उणारौ अभिनय सगला सूं सिरै मांनी जियौ। इणा पोतारै जीवण रौ जिकौ धे वणायौ, उण सूं चलायमान नी ह्विया। आगै सू आगै वधता इज गिया। उणां जीवण रौ महानाटक सफलता सूं पार पाडियौ। उणा रै पाइंगा मे कई विरोधी, निंदा करणारा अर भाडण गाला आया अर मोकला वखाण करण वाला ई आया। लोभ री वावल आई अर दुख रा भाखर पण टूट नै माथै पडिया। भय रा उल्कापात हुआ अर अखकार रौ इमरत पण मिलियौ। पण वे सगला आणंद अर सोक री लागणी

माथै रह्या। वे पोतारा जीवण पंथ माथै समता री पग डाडी सूं आगै वधता इज गिया।

फुटबॉल रा खेलाड़ू फुटबॉल सूं रमै। दोन्यूं कानली दोन्यूं टीमा पूरी सावचेती सू रमै । पण छेवट दो मे सूं एक टीम हारै। हारण वाला नै कोई ऊडौ पछतावौ नी ह्वै । कारण के आ हार है। इण सूं वारै जीवण माथै कोई असर नी पडै।जीत्यौडी टीम पण थोड़ीक वार हरख गेली वण्यौडी रैवै। इण जीतरी पण वारै जीवण माथै कोई कायम रो असर नी पडै । रांमत मे हार-जीत ह्वै तीज रैवै। इणीज भांत जीवण नाटक रा खेलाड़ू पण कोई वीज मिलया सूं, अमीरी सूं के गरीवी सूं, कोई री हाजरी सूं के गैर हाजरी सूं, हार सूं के जीत सूं, कोई भात रौ हरख सोक नी मनावै। कारण के ए सगली चीजा आत्मा सूं अलगी है। ए सगली चीजा छिन मात्र री है, इणा मे फंसनै मांनखा नै पोता रौ असली खेल नी विगाडणौ चाहिजै।

भगवांन महावीर रै जीवण मे गोसालक अर चंडकोसिक जिसा माठा संजोग आया, वानै गौतम अर आणद जिसा सत पुरख मिलिया। छता पण वांरै मन मे कोई भांत रौ हरख सोक नी ह्वियौ। भगवान महावीर सत्य रा मारग सूं कदैई चलायमांन नी ह्विया।

भगवान राम नै एक कानी तो राजपाट मिलै अर दूजी कानी वनवास मिलै। एक कानी सीता-हरण रौ सदेसौ मिलै अर दूजी कानी वानर सेना सूं ओलखाण ह्वै। पण इण सगला संजोगा मे वांरै स्री मुख माथै हरख के सोक रो एक सल ई नी पडियौ। भारतीय संस्कृति रा अमर ग्रंथ रामायण मे आ बात इण भांत लिखी है—

प्रसन्नतायां न गताभिषेकतः,
तथा न मम्लौ वनवास दुःखतः।
मुखाम्बुजश्री रघुनंदनस्य,
सा सदाऽस्तु मे मंजुल मंगलप्रदा॥

राजपाट री आलाणौ ह्वियां पछै ई रांम रा मूंडा माथै आणंद री झलक ही। अर वनवास रा समाचार सुण्या पछै ई वारै मन मे कोई भात रौ दुखनी हो। जीवण रा अमर नाटक मे रघु पुत्र राम रौ मुख-कमल हर वखत हंसतौ इज रह्यौ। इसौ हास्य आपानै पण मिलौ।

कर्मजोगी कृस्ण नै एक कानी तो कंस जिसा सांमरथ सूं भिडंत करणी ही। जिण सूं इसौ लागतौ जाणै मौत मूंडौ फाडनै उभी है। दूजी कानी गुवालिया अर जादवा रौ प्रेम हो। इण दोनूं संजोगा मे नी तो वे घबराणा अर नी हरखगेला ह्विया। वे तो फर्ज रै मारग माथै आगै वधता इज गिया। जिकौ जादव वारै खातर जीव देवानै तैयार हा, उणीज जादवा मे दुर्गुण भरीजग्या। स्रीकृस्ण वानै समझावण री पूरी-पूरी मैंणत कीवी पण जादव नी मान्या। छेवट एक दिन नास ह्वियौ। पण स्रीकृस्ण तो पोतारी मस्ती मे इज रह्या। वारै चेहरा माथै हरख हो। वानै किणैई पूछ्यौ—'आपरी निजरा सांमी आपरा जादवकुल रौ नास ह्वै रह्यौ है अर आपरा मूंडामाथै हरख निजर आवै, काई आ बात जोग है?' स्रीकृस्ण हंसतौ थका जवाब दियौ—म्हे म्हारौ फर्ज पूरौ कीनौ। जीवण रा नाटक मे म्हारा पार्ट मे म्हैं, म्हारै खपता कठैई खामी नी आवण दीवी। पछै म्हनै ए सखरी नरती बाता देखनै हरख सोक क्यूं ह्वै? म्हू माया नटणी रा जाल मे क्यूं फसूं? ओ तो सगळोई माया जाल है। इण माया जाल मे आसक्त ह्वणौ म्हारौ काम नी है।

सम्यग निजर राखणियौ मिनख पोतारा जीवण मे सगलाई काम करै पण पोतारी मरजाद कायम राखै अर निरलेप रैवै। मायाजाल मे गरक नी होवै।

समदृस्टि वालौ मिनख पोतारै कडूंबा रौ भरण पोखण करै, छता पण उण मे लवलीन नी ह्वै। वो पोतानै इण सगला वैपार सूं अलगौ मानै। जिण भांत धाय पारका टाबर नै खवडावै, पीवडावै, रमाडै पण उणनै पोतारौ नी समझै, फगत आपरौ फर्ज बजावै। जीवणनाटक मे मिनख किण भात पोता रौ फर्ज बजावतौ थकौ तटस्थ रैय सकै अर भात-भांत रा संजोगा अर प्रसंगा रौ पोता रै माथै असर नी होवण देवै, इणरौ एक जीवतौ-जागतौ दाखलौ इण भांत है—

पे'ल रा जमाना मे अरब देस मे गुलामी री प्रथा रौ बडौ जोर हो। निबला अर गरीब मिनखा नै धनवान माडाणी पकड लेवता अर वासू मन माफक काम लेवता। अरबस्तान रै एक खानदानी कुटुंब रौ एक छोकरौ इण चक्कर मे आयग्यौ। जिणा उण छोकरा नै पकडियौ, उणा उणनै ले जायनै एक श्रीमत आदमी रै घरै बेच नाख्यौ। उण घर रौ

मालिक घणौ दुस्टी हो। वो नौकरां री खाल उदेड़तौ। वा सूं अबखा सूं अबखौ काम लेवतौ। पण वो छोकरौ तो अलमस्त सुभाव रौ हो सो खूब डट नै कांम करतौ अर मस्त रैवतौ। एकर उण गांम में कोई दूजा मुल्क रौ एक वैपारी आयौ। उणै, उण छोकरा नै पूछियौ—"भाई, थूं तौ घणौ इज दुखी दीसै?" छोकरौ बोल्यौ—नी तो म्हूं पे'ली दुखी हो अरनी अबै हूं। थोडा बरसा पछै वो वैपारी पाछौ उणीज गांम मे आयौ अर उणैं आयनै देख्यौ के जिण स्रीमंत रै अठै वो छोकरौ नौकरी करतौ वो स्रीमंत मरग्यौ हो अर उणरै घर री हालत पण घणी खराब ही, सफा खालीपौ आयग्यौ हो। वो गुलाम छोकरौ मैंणत-मजूरी करतो अर उण सूं उणरै पेलडा मालिक रै परिवार रौ गुजारौ चलावतौ। वैपारी उणनै वो सागै ई सवाल कियौ अर छोकरै वो सागै ई जबाब दियौ। इणरै पछै मोकला बरस बीतग्यौ वो इज वैपारी फिरतौ गिरतौ फेरूं पाछौ उणीज गाम में आयौ। अबकै आयनै उणै देख्यौ तो खिलकौ कांई ओ रो इज हो। वो छोकरौ उण इलाका रौ मुखियौ बणग्यौ हो अर हजारूं मिनख उणरी हाजरी मे हा। वैपारी चकडी गम ह्वैग्यौ। वैपारी उणनै सदैई को सवाल पूछियौ अर छोकरै पण सागैई जवाब दियौ। थोडा बरस फेर बीत्या अर वो जवान तो उण मुल्क रौ राजा बणग्यौ हो। कोई लडाई मे उणै राजा री मदद करी जिण सूं राजा उणनै पाटवी थाप दियौ। वैपारी हिम्मत करनै अब कालै पूछियौ—कीकर अबै तो आप पूर्ण सुखी हो? पण वैपारी नैं ओ सुण-सुण अचंभौ ह्वियौ के उण जवांन तो वो सागै ई पड्उत्तर दियौ जिकौ उणै बरसा पे'ली दियौ हो। उण जवान रा जीवण मे कितरी चढत-पडत आई। पण वो जवान पाका खेलाड़ू हो। उत्तम अभिनेता हो। वो मोह माया मे फस्यौ कोयनी। वो तो पोता रौ फर्ज बजावतौ, खेल देखावतौ अर मस्त रैवतै।

म्हूं आपनै केवतौ हो के इण जीवणनाटक मे भात-भातरा देखाव देखती वखत के संसार रा रंगमंच माथै अभिनय करती वखत मायानटी रा जाल मे फंस नै पोतारी कमजोरी मत बताईजौ। नाटक देखणवाला रै रूप मे पण थांरी मोकली जवाबदारिया है। इण जवाबदारिया नै निभावणी आप रौ फर्ज है। थे इतरौ ई नी कर सकौ तो संसार थांरी हासी करैला। संसार ओ सगलौ तमासौ देखनै थारी मूर्खाई माथै थानै घुरकारैला अर थासूं नफरत करैला।

भारत रा रंगमंच माथै जीवण रा कितराई हुँसियार नाटक करणिया आया। उणा पोतारी पार्ट वहोत खूबीसूं कियौ। उणा जिण वखत आख्या उघाड़ी ह्वैला, स्यात् वे अचेत हालत मे ह्वैला, जीवण रा सफल अभिनेता पण नी वण्या ह्वैला। इतरौ ह्वैता छतापण वारै जीवण नाटक रौ पडदौ सत्यम् सिवं अर सुंदरम् रै सागै उघडियौ। उण नाटक री सरुआत तालिया री गडगड़ाट रै सागै हुई। जीवण-नाटक रा इसाज एक मांनीता अभिनेता रौ एक दाखलौ याद आवै—

एक ठौड नाटक होवण वालौ हो। इण नाटक नै जोवण वास्तै मोकला छोकरा अर छोकरिया आई। जवान ई आया अर मोट्यार लुगायां पण आई। आधकड मिनख-लुगाया अर डोकरा-डोकरी पण आया। वारै सन्मुख रंगमंच माथै एक अभिनेत्री हाव भाव सागै निरत करती ही। सगलाई एक निजर सूं उणनै देखता हा। तालिया री गडगडाट वाजती ही। एक सेठ रौ वेटौ कई जोड़ीदारां सागै वैठ्यौ निरत देखै हो। सेठ रा वेटारी उंमर काची, अनुभव काचौ अर लियाकत अधूरी ही। सगलाई देखणिया भांत-भात रा थोडा घणा संस्कार लेयनै रवानै ह्विया पण सेठ रा वेटा रै मन माथै उण नटी नै देखनै बीजौ इज असर ह्वियौ। वो उणरौ सरूप देखनै मोहित ह्वैग्यो। उणरै कालजा मे वासना रौ तीखौ कांटौ वैठग्यौ। उर्दू मे एक सायर कह्यौ है—

इश्क ने गालिव निकम्मा कर दिया,
वर्ना हम भी आदमी थे काम के।

वासना, मोह माया के आसक्ती रौ काटौ घणौ ऊंडौ अर दर्द कारी ह्वै। जठा ताई ओ काटौ नी निकलै, उठा ताई चैन नी पड़ै। सेठ रौ वेटौ घरै आयौ पण उणरै दिमाग मे तो वा नटी ठसियौडी ही। उणरी याद आवती जरै वो खाणौ पीणौ ई पातर जावतौ। उणरै अंतर मन मे रात दिन उणरीज रटणा चालती। उणरा साथिया सू उणरा मा बाप निगै कराई। बेटा रे चाहिजै काई है? उणरी इच्छा काई है? साथीडां नै उणरै दर्द री खवर ही। उणा मा वाप नै कह्यौ—'जिण दिन सूं ओ नाटक देख नै आयौ है, अभिनेत्री उणरै मन मे बसगी है, वो उण साथै लग्न करणौ चावै।' आ बात सुण ताई मा बाप री आख्यॉं आड़ी तो अधारी आयगी। इसो लाग्यौ जाणै पगा हेठा सूं धरती सरकगी। उणां वेटा नै समझावण री पूरी कोसिस कीवी। 'वेटा थूं जिकण माथै

मोहित ह्वियौ है, वा नाटक री अभिनेत्री ही । नाटक जोवण रौ मतलव मन नै आणंद देवणौ है, मोहित ह्वणौ कोयनी । लुगाई री फूटरापौ तो नासवान है । वो काचा मन मे फगत वासना री आग सुलगावै । जिकौ इण मे पड जावै, उणरौ नास ह्वै । थूं जिण नै सरूपमान नै वैठौ है, वो वादला री गलाई वदल तौ रैवै । अभिनेत्री सागै ह्वियौडौ थारौ प्रेम नी है, ओ फगत मोह है । इण सूं थारौ धै पार नी पडै । इणरौ आरंभ अर अंत सगलाई दुख दाई इज ह्वै । इण मोह रौ फदौ मिनख नै साचौ अभिनेता के देखणियौ नी बणण देवै । पलक-पलक मे वदलता नाटक रा देखावां मे थारौ मन भटकतौ रैवैला । थनै कोई ठौड़ साति नी मिलै । इण वास्तै वेटा, थूं थारा विचार वदल दे । विवेक सूं काम ले अर पछै थारौ मांरग नक्की कर ।

मा वाप री इण वातां रौ वेटा माथै कोई असर नी पडियौ । जिण मिनख नै वासना रौ भूत लाग जावै उणरै ऊपर कोई उपदेस असर नी करै । उणनै पोतारै भला-भूंडा रौई मांन नी रैवै । उणरी विवेक रूपी आंख्या माथै मोह री पाटी वंध्योड़ी ह्वै । इसा मिनख भीत भीतां ह्वै, उणनै कांई नी दीसै । वो उण वखत जीवण नाटक रा वदलता देखावा रा मोह मे फंस जावै । उण मोटयार री पण आइज हालत ह्वी । उणरी एक इज मरजी ही के उण अभिनेत्री सागै विवाह करणौ । उणै मा बाप नै फोतका वरौवर गिण नै वो सीधौ उण अभिनेत्री रा वाप कनै पूगौ । उण रौ वाप पण उणीज नाटक मंडली में एक हुसियार खेलाडू हो । उणनै उणै सगली वात बताय दीवी । उणै पूरी वात सुण नै कह्यौ— 'थारी बात म्हूं एक सर्त माथै मजूर कर सकूं । वा वात आ है के थूं पोतै नाटक मंडली मे भरती ह्वै अर एक हुंसियार अभिनेता बण । पछै कोई राजा महाराजा नै राजी कर अर उण सूं इनांम इकरार जीत । जे वो धन म्हारी उमर भर री कमाई सूं वत्तौ ह्वै तो म्हूं म्हारी बेटी नै थारै सागै परणाय दूंला ।' मोट्यार रै वात हीयै ढूकगी । अवै कांई वाकी रह्यौ । वो तो इण कांम में लवलीन ह्वैग्यौ । कई वरसां तांई उणै नाटक रौ कांम सिखीयौ । वो नाटक कला मे पारंगत ह्वैग्यौ ।

छेवट राज मैं'ल रै सांम्ही नाटक रौ रग जम्यौ । एक कानी आभै अडता राज मैं'ल हा तो दूजी कांनी धनवतियारी हवेलियां । सागोपाग मंडप इसौ हो जिण मे पग मेलै जित रीई जागा नी ही । ठसाठस भरी जग्यौ हो । कितराई मिनख मकानां री छातां माथै छाजा माथै उभा

हा। हुंसियार खेलाड़ू सेठ री बेटी पोतारी करणी री तपसा नै आज संसार साम्ही लावणी चावती। वो चावती ही के मिनख उणरी कला देख नै आणंद मे गरक व्है जावै नो रुपियां री वरखा कर नाखै। ख़री खर आज नाटकसाला री सजावट ई अनोखी ही। मिनखा पोतारी आखी जिंदगी मे इसी खेल नी देख्यो हो। उणा रा हिवड़ा आणंद सूं छलकता हा। सगलाई एक आवाज सूं इज कैवता हा—आज तो इण अभिनेतै कमाल कर नाखी। इण रा अभिनय री कैवणी ई कांई।' उण नै भेंट देवण खातर मिनख उंतावल करता हा। आपस री रो होड लागोड़ी ही अर राजा रै पे'ली वे भेंट देवणी चावता।

दिन ऊगी। सोने री किरणा चमकी। उण मोट्यार री आसा रूपी किरणा पण जगमग-जगमग करण लागी। आखी रात अभिनय करण सूं वो थाकग्यो हो। उणरी निजर सामली हवेली माथै पड़ी। एक मोटि-यार तपसी धीमै पगला उण हवेली मे वलतो हो। उणरै मूंडा माथै तपसा री तेज चमकतो हो। हवेली मे सन्मुख फूटरी-फूटरी लुगायां वैठी ही। वां री देखाव इज अनोखो हो। साखियात जाणै मकरांणा री पुतलिया। वारी मोटी अर काली आख्या तारा री गलाई जगमगती ही ए चदरमा जिसी सीतलता बरसावती ही। वांरा डील रेसम जिसा सुंवाला अर झाकल जिसा सफेद हा। वारा दात दाडम रा दाणां री गलाई चमकता हा। वारा लाबा अर काला केस आकास रा बादलां री भात ओपता हा। वांरा होठ मामलिया जिसा लाल अर गाल गुलाब रै फ़ला जिसा हा। वारी फूटरापो अनोखौ हो। तपसी आयौ देख नै वे सगली एकण साथै भच्च करती वैठी व्ही अर वदणा करतां पूछ्यौ— धिन घडी धिन भाग जो गुरुदेव आज म्हारै आगणै पधार नै इण झूपड़ी नै पवित्र कीनी। आप जिकण चीज री जरूरत व्है, वा फरमावौ।

ओ अनोखी देखावौ देखनै वो निरत करतौ मोटियार जराक थोबियौ मन मे विचारा री दोट उठियौ। ओ मोटियार तपसी कितरौ संजम धारी है। अपसरावा जिसी सरूपवान लुगाया कानी पण वो आख ऊंची करनै ई कोय नी जोवै। वो कितरौ निरलेप है, कमल री गलाई अना-सक्त है। इण लुगाया रै सरूप आगै वा अभिनेत्री सफा कडौपी लागै। इण अभिनेत्री नै परणीज वा सारूं म्हैं कितरा तलफा तोडिया। अर ओ तपसी पण है तो मिनख इज। पछै म्हैं इण माया रा फदा मे कीकर

फंसग्यौ ? कठै तो ओ पोतारी मस्ती मे रैवण वालौ ओ संजमी तपसी अर कठै म्हूं महा कामी हरामी कीडौ। धिरगार है म्हनै जो म्हूँ काया रा मोह मे पड़नै दूजी सगली वाता भूलग्यौ। ओ सरीर तो मायनै सूं सगलां रौ एक सरीखौ इज ह्वै। पछै इण अभिनेत्री रे सरीर मे एडी काई वताई हो के म्हूँ इण रा नासवांन सरीर माथै मोहित ह्वैग्यौ। म्हे म्हारै वाप रौ कैवणौ नी मान्यौ। उणा म्हनै जीवण रूपी नाटक रौ उपदेस दीधौ हौ। पण वो उपदेस म्हारै अंगै नी लागौ। म्हारा विजोग मे म्हारी मा रोय रोय नै आंधी ह्वैगी, पण म्हे म्हारौ हठाग्रह नी छोड़ियौ अर इण माया रै लारै वारै वरसा ताई कालौ ह्वियौडौ फिरतौ रह्यौ। इतरा कियां पछै ई म्हारी अभिलाषा पूरी नी ह्वी। थोडी ताल रै वास्तै मान लो के म्हारी मनो कामना पूरी होवण वाली है, पण मनो कांमना पूरी हुवां पछै ई ओ काया रौ फूटरापौ तो कायम री चीज नी है। ए विचार आवताई उण मोटियार रौ हियौ चलायमान ह्वैग्यौ। उणरै अंतस मे विवेक री जोत चमकी। आसक्ती री जाली काचा डोरा री गलाई तूट नै हेठौ पडियौ। नाटक देखणिया हसता हा अर तालियां वजावता हा। मोटियार पण मन मे हसतौ हो। उणरै जीवण संगीत रौ ताल अर लय संवीजतौ हो। नाटक करता करता इज अभिनेता रै अंतस मे आत्म जोत प्रगट ह्वी। उणरी आत्मा मे केवल ग्यान रौ परगास वापरियौ। नाटक पूरौ ह्वियौ अर अभिनेता मंच ऊपर सूंनी चौ उतरियौ। राजा अर प्रजा री तरफ सूं सोनौ, चांदी, हीरा, पन्ना, अर मांणक मोतियः री वरखा होवण लागी। देखता-देखता मोटौ ढिगलौ ह्वैग्यौ। पण अभिनेता रै मन मे तो कोई दूजीज बात ही। उणै तो ढिगला कांनी निजर ई नी नांखी। उण अभिनेत्री रै बाप उणरौ हाथ पकडतां कह्यौ—कलासम्राट, अवै सिद्ध पधारौ हो ? आज म्हारी प्रतिग्या पूरी ह्वी। चालौ अबै म्हारी वेटी सागै लग्न करौ।

मोटियार हाथ छोडावता कह्यौ—ए ऊपरली चीजा तो इण आत्मा नै मोकली वार मिली, पण इणां रौ टिकाव काई ? उमर कितरी ? पण आज म्हनै जिण ग्यांन रा दरसण ह्विया है, आज पे'ली वा चीज म्हनै कदेई मिली कोयनी। आभै मे रणकार फूटग्यौ, सगलाई केवलग्यानी री जै जै कार करण लाग्या। अबै वो अभिनेता विवेक द्रिस्टीवालौ ह्वैग्यौ हो। वो जीवण रौ नाटक आछी तरियां कर सकै हो।

बस, जीवण रूपी नाटक रौ सार ओ इज हैं। इण भेद ने जाणण री आंपा नै कोसिस करणी चाहिजै। आध्यात्मिक भासा मे कैवा तो इण जीवण रूपी नाटक रौ भेद जाणवा वास्तै सुभाव मे रमण करणी चाहिजै। अर पर भाव सूं अलगौ रैवणी चाहिजै। जैन धर्म में वतायोड़ा नव तत्वा मे सूं जीव, संवर, निर्जरा अर मोक्ष मिनख रै वास्तै ठीक है। ए सगला आत्मा री स्वभाव रमणता मे मदद देवण वाला है! अजीव, पुण्य, पाप, आद्धव अर बंध ए ग्येय ह्वै। आत्मा नै इणा मे नी फंस णौ चाहिजै। वा मे फस्या पछै आत्मा साचौ ग्यान द्रिस्टा नी रैय सकै। आ वात समझा वण खातर आचारज कुंद कुंद एक ग्रंथ लिख्यौ है, जिणरौ नाम है 'समय सार' उण माथै अमृतचंद्र आचारज अर कविवर बनारसी दास 'समय सार नाटक' नाम सूं टीका लिखी है। उणा लिख्यौ है के जीव पोतरै जीवण रा नाटक मे मूल सरूप मे नी रैवै। वो परभाव में इज भटकतौ रैवै। उणरौ कारण मोह माया, सुभासुभ कर्म के हेरफेर है। इणा रै कारण वो आस्रव बंध हेय तत्वा नै पण चोखा मानै, वामे रस लेवै, घारी आसक्ती अर राग द्वेष मे फंस नै पोतारौ सरूप भूल जावै। कवि री आध्यात्मिक अंतर्वाणी मे कैवा तो—

'हूं स्वतंत्र निश्चल निष्काम
ज्ञाता दृष्टा आतमराम ध्रुव

मैं वह हूं जो है भगवान, जो मैं हू वह है भगवान ।।
अतर यही ऊपरी जान, वे विराग यहां राग वितान ।।१।।

सुख दुख दाता कोई न आन, मोह राग ही दुख की खान ।।
निज को निज,परको निज जान, फिर दुख को नहीं लेस निदान ।।२।।

होता स्वय जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम ।।
दूर हटो पर कृत परिणाम, ज्ञायक भाव लखूं अभिराम ।।३।।

इण कविता मे आ बात बतायौडी है के नायक नै जीवण नाटक मे किण भांत रैवणी चाहिजै। अर रग भूमि माथै किण भांत प्रवेस करणी चाहिजै।

सही रूप सूं जिको सम्यग ग्यान रौ जाणणियौ ह्वै, सम्यग अभि-नेता ह्वै, वो पौद्गलिक पदार्था नै अल्प जीवी मानै। वे धन के मिनख इस्ट वियोग सूं के इस्ट संजोग सूं चलायमांन नी ह्वै। धन अर पोता

रा सगा रा नास ने ह्वै पोतारो नास नी मांनै। पाप अर पुन्न री भावना सूं ऊपर उठनै वे सुद्ध भाव सूं उपासना करै, सुद्ध जोग री साधना करै। हरख मे हरख गेला नी वणै अर सोक मे सोकातुर नी ह्वै वे पोतारा अध्यात्म मार्ग मे, ब्रह्म वीथी मे मस्त होयनै आगै वधता इज रैवै। इणरै पछै वारै जीवण मे सुख, संतोख अर साति रौ प्रवाह वैवतौ इज रैवै।

वेदांत री भासा मे कैवा तो वो संसार री मोह माया मे नी फसै। वो माया नै ब्रह्म रै कनै नी आवण देवै। माया नै औपाधिक भाव मान नै उण में रमण नी करै। माया नटी री आसक्ती के उणरा रूप जाल में फंसवा सूं मिनख निकामौ वण जावै अर ब्रह्म मारग सूं आघौ ह्वै तौ जावै। इण वात नै एक कवि इण भांत कही है—

जीवन है एक कहानी

मानव है इसका नायक, माया है नटी पुरानी
आशा और निराशा दोनों माया की हैं दासी।
निशिदिन मानव की आखो को करती रहती प्यासी।
आज निराशा के दामन मे कल आशा है रानी
जीवन है......

मानव है अविवेकी अधा, समझ नहीं कुछ पाता
सुख मे हसता रहता, आंसू दुख में खूब बहाता
अपने पन को भूल गया है, माया का अभिमानी
जीवन है . .

कवि री वाणी मे जीवण एक कहाणी है, एक नाटक है। मांनखौ इण नाटक रौ सूत्रधार है। माया नटी पण इण नाटक मे तैयार रैवै। वा मांनखा नै नसा मे गरक कर नांखै। इण वास्तै मांनखा नै उण सूं सावचेत रैवणौ चाहिजै अर पोतारै पार्ट रौ ध्यान राखणौ चाहिजै।

जीवन नाटक मे मिनख जे एकाद वखत ई सावचेत होय नै माया नटी रा फंदा सूं वच सकै, तो उणरौ मारग साफ ह्वै जावै। उणरौ जीवण वरौवर आगै वधतौ इज जावै। अर जे आ वात नी ह्वै तो माया नटी उण नै भटकाय नाखै अर जुदी-जुदी जुणां मां जनम लेय नै इण नै भान पण भूलणौ पड़ै।

इण वास्तै आपा नै आपणी जीवण ठीक ढंग सूं वितावणी चाहिजै भूमिका भजतपा वखत निरलेप होय नै मोह माया सूं अलगी रैवणी चाहिजै। बीजा री नाटक देखता वखत पण साची जाणकार रैवणी चाहिजै अर माया नटी रा फंदा मे हरगिज नी फसणी चाहिजै। आपणै जीवण नाटक री सफलता इण मे इज है। आपणै जीवण नाटक री पूर्णता पण इण मे इज है।

卐

१३

दांन रौ आणंद

संसार रा टण का आंगणा मे मिनख जिण वखत आख्यां उघाड़ै, उणरी निजरा आगै भांत भात रा जीवा री दौड भाग ह्वैती दीसै। भात-भात रा मुभाव वाला प्राणिया सागै जरै वो संपर्क मे आवै तो उण मे मतैई एक वैवारिकता आय जावै। इण वैवारिकता रै कारण वो जचै जिसा ई सजोगा रै अनुकूल वणजावै। मानखा री विकास धीरै-धीरै ह्वै। इण विकास काल मे पण उण रै आगै भात-भात रा संजोग आवै। उणनै कई तरै रा वातावरण मे सूं निकलणी पडै। पण एक वात तो अखरै है के सजोगा अर वातावरण में पण मानखा री दयाल विरती री परगास जगमगती रैवै। उण हालत मे करै ई करै ई चढाव उतार जिसी ई आवै। उण वखत उणरी साधारण दयालु विरती माथै पडदी सो आय जावै।

मिनख एक सामाजिक प्रांणी है। वो पल छिन समाज रै सागै रैयनै इज जीवै। जनम सूं लगाय नै मौत ताई वो कितराई मिनखा रै संपर्क मे आवै। वारी मदद लेवै अर काम पड़िया वानै पण मदद देवै। मोटी ह्वियां पछै वो पैसौ जोड़ै, वो पण समाज री मदद सूं इज। समाज सूं इतरी फायदी उठाया पछै मिनख रै मन मे आ भावना जागै के उणरी वाई खपतां वोई कोई री मदद करै। कोई नै जरूरत ह्वै तो काई देवै। इण देवण री विरती नै इज आपणा सास्त्रकारा 'दान' कह्यौ है।

- समाज कना सू वार वार लीनौडी मदद रै वदलै पाछी वीजा नै मदद देवणी उधारी हांती है। कोई मिनख जे समाज कना सूं तो लियां

जावै पण देवण री नीत नी राखै तो वो नुगरौ वाजै। एक धनवान आदमी है। उणरै कनै अखूट धन है। वो पोतारा धन मे सूं गरीब गुरबा नै एक कौडी पण नी देवै तो वो एकतरै सूं समाज द्रोही है। इसा मिनख रौ पुण्य धीरै-धीरै क्षीण ह्वै जावै। कारण के उणे जिको धन भेलौ कीनो है वो कोई आभा मायनै सूं तो टपकियौ कोयनी। वो आयौ तो समाज कना सूं इज है। उण धनवान नै जे सून्याड रोही मे छोड देवां अर कैवा के उठै दुकान माडनै कमाव तो वो कमाय सकै काई ? म्हारौ मत तो ओ के दुनिया मे जितरा मिनख है, वांरै व्यापार व्यवसाय मे समाज रौ प्रत्यक्ष के परोक्ष सहयोग तो है इज पण मिनखरा जीवण मे तो पंखी जिनावरा, वनस्पती, जल थल, अग्नि, सूरज अर आकास रौ कितरौ सहयोग रैवै वो कोई सूं छानौ कोयनी। इण वास्तै तत्वार्थ सूत्रकार उमास्वामी कह्यौ है—

'परस्परोपग्रहो जीवानाम् !'

प्राणिया मात्र रौ जीवण एक दूजा रै उपकार माथै चालै। इतरौ ह्वैता छता ई घणखरा मिनखा नै ओ गुमेज ह्वै के 'म्है समाज कना सूं काई नी लीनौ। म्है कोई री मदद पण लीनी नी। म्हूं तो म्हारी हिम्मत रै पाण आगै वध्यौ हूं।' पण खरी बात आ है के ओ फगत भरम है। कोई गरीब गुरबारी मदद करनै कोई कैवै के--म्हे थनै अमुक चीज दीनी जरै इज थू जीवतो रह्यौ। म्हारै बिना बीजौ थनै कुण देवतौ। इण भात री विरती समाज द्रोह है। जो मिनख समाज रा सहयोग सूं भेला कियौड़ा धन मे सूं जरूरतमंदां नै देवण री नीत राखै तो ओ उणरो फर्ज है। इण वास्तै मनु महाराज लिख्यौ है—

'न दत्वा परिकीर्तयेत्।'

कोई नै दांन दैयनै पछै दांन रा बखांण नी करणा चाहिजै।

सूरज आखा संसार नै उजास देवै, अग्नि सगलां रौ अनाज रांधै, बादला मेह बरसावै, अर वनस्पती सगलां रै कामै आवै। पण ए सगला रै कांम आयां पछै इणानै कठैई ऊद पाडता देखिया ? छापां मे कठैई इणा री एडवरटाइजमेंट देखी ? गाय, भैस, बकरी अर ऊँट जिसा जिनावर पण मानखा रै कितरा कामरा है। पण उणां जुग थण्यां पछै कदैई छापा मे जाहेरात काढी है ? कठैई जायनै ऊद पाडी है ? मिनख एक विचारवान जीव है। उणै पोतारी अक्कल हुसियारी सूं संसार री

कई चीजा लीनी है। पण नगारा बजाय नै वांरी जाहेरात करणरी कांई जरूरत है ? विवेकी मिनख री तो ओ फर्ज है के मानव जीवण नै सार्थक करण खातर दान अर भोग स्वीकार करणौ चाहिजै। भोग रौ स्वीकार ओछा सूं ओछो करणौ अर दान रौ स्वीकार घणा सूं घणौ करणौ चाहिजै। दांन देवण वास्तै मिनख नै पूरी तक राखणी चाहिजै। दांन किणनै देवणो, इणरी पण सोजी राखणी चाहिजै। मन मे फकत एक इज भावना राखणी चाहिजै के समाज रा सहयोग सूं भेलां कियौडा धननै मौकौ आया समाज रा कांम मे लगावणौ अर रिण मुगत व्हैणौ।

मिनख पैसौ कमावै इण वास्तै इजहै के उणारौ जीवण आराम सूं निकलै। पण वो पैसौ तीन तरै सूं वापरीजै। एक नीतिकार कह्यौ है—

'दान भोगो नाशः त्रिधा गतयो भवन्ति वित्तस्य।'

धन रौ तीन भात सूं उपयोग व्है। दानरा रूप मे उपयोग व्है तो वो धन सार्थक है। उण धन रौ जे भोग कियौ जावै तो पण थोडौ घणौ उपयोग इजहै। पण जे नी दान दिरीजै, नी उपयोग व्है अर फगत दाटौ देयनै इज धरीजै तो उण धन रौ नास व्है। कई दानी मिनखा रौ सुभाव इज इसौ व्है के उणानै बस देवण मे इज आणंद आवै। इसा मिनखारी मांनता व्है के जे कोई हाथ सूं देवा वो आंपणौ है अर आपा जे नी देवा तो वो आपणौ नी। जोधपुर महाराजा जसवत सिंघजी कह्यौ है—

खाया पींया खरचिया, दीना सोई सत्य।
जसवत धर पोढाविया, माल पराए हत्य॥

इंदौर रा नामी सेठ सर हुक्मीचदजी कै जीवण रौ एक प्रसंग म्हनै याद आवै। किणैई वानै पूछियौ—सेठजी; आपतो लक्ष्मी पुत्र हो। आप री संपत रो कोई पार नी। घणखरा मिनख कै वै के आपकै कनै दस करोड री मिलकत है। कई जणा इण आकडा नै बीस पचीस करोड़ ताई ले जावै। पण ए सगली वाता फगत अंदाज री है। इणां रै लारै कोई पीठ वल कोयनी। मिनखा नै गैर समझ पण वधारै व्है। इण वास्तै आपकै धन रौ सही-सही आंकडौ आपइज बतावौ। सेठा हंसता-हंसता पड्उत्तर दियौ—भाई, म्हारी पोतारी मिलकत तो सफा ओछी

है—'फगत साढा सत्तावीस लाख ।' सेठां रा मूंडा सूं ओ जवाब सुणनै वो इचरज मे पडग्यी । उणै अचूंभा सूं पूछियौ—'सेठ सांव, आप कोई बीजा नै पातराइजौ । इसी विना पतारी बात म्हूं मान लूं, इतकौ भोलौ म्हूं कोयनी । पचास लाख रूपिया री तो ओ एकलो कांच कौ मैल इज है । आपरा वीजा वंगला पण मोकला है । मिल पण है । कांई आ सगली आपरी मिलकत कोयनी ?' सेठजी पोतारी वात री खुलासौ करता कह्यौ—'भाई, थूं म्हारी वात इजनी समझ्यौ । म्है म्हारै हाथ सूं दान मे फगत साडा सत्तावीस लाख रूपिया दीनां है । इणवास्तै म्हारी असली मिलकत आइज है अरवा घणी ओछी है ।

ओ है एक साचा दानी री नरमाई री दाखलौ ।

दान देवणौ आगला माथै ऐहसान करणो नी है । दांन कोई इसी चीज कोयनी के जिणरै वास्तै जाहेरात करणी पडै । दान तो मिनख री फर्ज है, आत्मसुद्धि री दरवाजौ है, उदारता री अंतर्नाद है, आत्म विकास री सोनै री मौकी है । सजागता री चौकीदार है । कोई पण करसौ पोतारा खेत नै वीज नै आ वात नी कैवै के म्हैं म्हारा खेत नै इतरौ वीज दीनौ । कोई पण वैपारी पोतारा विणज वैपार मे रकम लगाय नै आ वात भवैई नी कैवै के म्है वैपार मे इतरी रकम रोकी । इणरौ कारण काई ? इणरौ कारण ओ के करसी खेतर नै :बीजै तो पोतारै स्वारथ खातर अर वैपारी वैपार मे रकम रोकै तो ई पोतारै स्वारथ खातर, इण मे कोई माथै थोरी-नोरी के ऐहसान कोयनी । इणीज भात जे समाज मे सूं भेला कियोड़ा धन नै समाज खातर कोई खरच करै तो इण मे ऊद पाडण री के जाहेरात करण री काई जरूरत है ? इण मे तो उणरी पोतारी भलाई है । उण सूं जिकी धर्म लाभ होवै वौ उणनै पोतानै इज तो व्है । दांन देवण सूं मिनख नै जिकौ सहज आणद मिलै वो धन भोगविया सू के उणनै पोतारै स्वारथ मे खरच करण सू के तिजोरिया भरण सूं नी मिलै । एकर तलाव धन गैलो वणनै नदी नै कैवण लाग्यौ—'थू खरोखर मूरख है । थूं थारौ सगलौई पाणी ले जाय नै दरिया मे ठालदै । इणरै एवज मे थनै काई मिलै ? थारी इतरी मेणत उपरात ई दरियौ तो खारी रो खारौ है । नदी बोली—'वैवतौ रैवणौ ओ म्हारौ धर्म है । दरिया नै म्हूं म्हारौ आपौ सू पू जरै इज म्हनै आणद आवै । एवज मे म्हनै काई मिलै, इसी म्हारै मन मे भावना इज नी आवै ।' परिणाम सरूप नदी रौ प्रवाह

चालू इज रह्यौ । उणनै तो परबत मे सूं नवौ-नवौ पाणी मिलतौ गियौ पण तलाब रो थिर पांणी एक दिन सूखीज गियौ । तिरसा मुसाफिर सूखा सरवर री पाल माथा सूं पाछा वलवा लागा पण नदी वानै मीठौ इमरत जल पावतीज री ।

दांन तो फल प्राप्ति री गेरंटी है । इण मे कोई नुकसांण री बात कोयनी । उण सूं आणद मिलै, फर्ज पालण रौ संतोक मिलै । जैन आचारज उमास्वामी दांन री व्याख्या कीवी है—

'अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।'

पोतारी आत्मा रा अनुग्रह वास्तै, पोतारी उदारता रा विकास वास्तै, पोतारी चीज रौ त्याग करणौ, इणरौ अर्थ इज दान है । 'इल्म देने से दूना होता है' आ केवत तो जग जांणीती है । पण पैसा अर वीजी चीजा खातर मिनखां री अवली मानता है । वे जाणै के पैसौ खरचियां सूं के चीज दीनां सूं बीत जावैला । पण आ मांनता भूल सूं भरियौडी है । पैसौ फगत भेली करनै भेलिया सूं घटै, वधै अंगाई कोयनी । कुरान सरीफ मे एक ठोड लिख्यौ है—"पैसौ व्याज सूं नी पण दान सूं वधै ।" इस्लाम धर्म रौ आदेस है के हरेक मुसलमॉन नै पोतारी आवक मे सूं चालीसमौ भाग दांन मे देवणौ चाहिजै । आपा जितरौ खावा, आंपणै सरीर मे उतरौ लोही नी बणैं। सगली खुराक रौ उपयोग नी ह्वै । उण मे सूं नकांमा भाग मलमूत्र रै रूप मे बारै फेंकीज जावै । इणीज भात मिनख नै पण समाज सूं मिलियौडा सगला साधना नै पाछा समाज नै सूंप देवणा चाहिजै । सगला साधना नै पोतारै स्वारथ मे लगावणा ओछी बात है ।

आइज बात अद्वैतवाद रा मोटा आचारज शंकराचारजजी दानरी व्याख्या वतावतां कही है—

'दान सविभाग.'

जिकौ संपत के साधन समाज सूं मिल्या है वांनै ढगसर वैंट देवणा चाहिजै । खरौखर दान करती वखत मिनख नै पोतारौ अह भूल जावणौ चाहिजै । मिनख जे पोतारी मरजी सूं दान करै, समाज मे जिकण नै जरूरत ह्वै, उणनैं देवै, तो संग्रह विरती नी फूले-फले । समाज मे कंजूस मिनखा इज संग्रह विरती री लालसा वधारी है । इसा सगलाई जणा जे पोतारै गजा प्रमांणै वत्तौ धन समाज री वैंक मे

जमा करावता जाय तो संसार मे लीला लेहर ह्वै जाए। जूंना-जमाना मे स्रीमंत फगत पोतारीज सुख सगवड रौ ध्यान नी राखता पण आजु-बाजु रा गरीब गुरबारौ ई पूरौ ध्यांन राखता। मौकौ पड्या वे छूटा हाथ सूं दान देवता। वारै जीवण मे–"हाथ दिये कर दान रे!" रौ सूत्र तय कीनौडौ हो। इण कारण इज उण जमाना मे आर्थिक विसमता ह्वैता छता पण वर्ग सघर्ष नी हो। सगलाई सतोक सूं रैवता। कोई बेकार के भूखौनी हो। साधना रा अभाव मे कोई दुखी नी हो। उण जमाना मे पैसावाला रौ धन देखनै गरीब-मन मे बलता नी हा। गरीब री आइज भावना रैवती के 'म्हारै जिकण चीज री जरूरत है वा चीज म्हनै मिलै इज है तो पछै म्हनै धन भेलौ करनै काई करणौ। पैसा वाला रौ जिकौ धन है वा म्हारी बैंक है। म्हारी मरजी ह्वै जरैई म्हूं उण मे सूं लेय सकूं।'

पण आज रा स्रीमंता री तो बात इज न्यारी है। गरीबा सागै वा रौ कोई लगाव नी रैवै। वे गरीबा री सुख सगवड रौ कोई ख्याल नी राखै। इण वास्तै पैसा वाला रौ धन वारी आख मे काकरा री गलाई खटकै। गरीब संतोक राखै किण विध ? ओ इज कारण है के आज गरीब गुरबौ साम्यवाद कानी रूख राखें। पण साम्यवाद रा जनम पे'ली इज भारत मे रिसि मुनिया मानखा नै इण ढग री सीख दीवी ही के समाज रा श्रीमता अर गरीबा बिचै राड नी ह्वै, गरीबा री आख्या मे स्रीमंता रौ धन नी खटकै।

भगवान महावीर श्रावका खातर इण भात रौ एक व्रत इज फरमायो है। इण व्रत रा पालण सू सगली दैण मिट जावै। इण व्रत रौ बोलतौ नाम 'अतिथि संविभाग व्रत' है। पण उणरौ अर्थ घणौ सकुचित रूप सूं करै। इण व्रत रौ जूनौ नाम 'अहासविभाग' (यथा सविभाग) पण है। अर उणरौ पूरौ अरथ करा तो इण भात है–के पोतारै कनै जिकौ चीजा है, वानै ढंग सरू वैंट देवणी। ओ व्रत समाज रा सगला वर्गो खातर हो।

गोविंदानंद 'दानक्रिया कौमुदी' मे दान री व्याख्या इण भांत कीवी है—

'उद्देश्यगत स्वामित्वजनक त्यागो दानम्'।

दान री क्रिया रौ मतलब धन माथै सू पोतारौ धणियाप छोडणौ। 'इदं न मम' (ओ म्हारौ कोयनी) इसी भावना दाता मे जनमै तो इज

वो साचौ दांन है। जठै दान देय नै बदला मे पाछौ कांई लेवारी भावना ह्वै, के जठै स्वारथ-साधन खातर दान दिरीजै, वो दांन नी है, वो तो एक भात री सोदौ है।

सगला सद्गुणां री प्रवेस द्वार दान है। जिण मिनख में उदारता री गुण नी ह्वै, उणमे बीजा कोई गुण ई नी ह्वै। संकुचित मन रा गुण पण संकुचित ह्वै। दांन हियारै विकास री तालीम है। अपणात पणौ दांन रै मारफत इज संसार रा हरेक जीव ताईं पूग सकै। मिनख मे जरै दांन री भावना कुटुंब, गांम, सहर अर देस नै भेद नै आखा संसार तांई फैले, विश्व बंधुत्व री भावना उण वखत इज फैलै। तीर्थ-कर संसार प्रेमी बणवा वास्तै अर संसार सागै अपणात पणौ वरत वा सारू, सै सूं पे'ली दांन सूं इज सरुआत करै। इण भात वे समाज, देस अर संसार नै दांन मारफत इज उदारता री विरती सिखावै।

पोतारै कनै जिकौ साधन सामग्री ह्वै, उणनै बीजां खातर देवण मे कर कसर नी राखणी चाहिजै। बीजा वास्तै तन, मन अर धन रौ उप-योग करणौ, समाज मे दुखी, निर्धन अर निराधार ह्वै वांरै वास्तै कनै ह्वै जिकी हाजर करणौ, दुखियौ नै धीरप बंधावणौ, पोतारी बुद्धि माफ़क वांनै चोखौ मारग बतावणौ, अर धन सूं सै नै मदद करणी, ए सगला दान रा इज प्रकार है।

कोई ओ विचार करै के दान किया सूं म्हारौ धन ओछौ ह्वै जाएला। पछै म्हूँ कांई खाऊंला अर म्हारा टाबर टूबर कांई खावैला? ओ सगली एक भांत रौ भरम है। आत्म सिरधा मे अधूरा पणा रौ नमूनौ है। मिनख मे इतरी आत्मसिरधा तो ह्वणी इज चाहिजै के म्हा मे कांई खोट है? कोई नै वखत माथै मदद करूंला तौ म्हारै टोटौ नी जावै। आपा तपसा करा हां। कोई नै निस्वार्थ भाव सूं दीना पछै कांई नी वचै के ओछौ बचै तो उण मे इज गुजारौ चलावणौ, बचियौडा भोजन के कपड़ा सूं काम चलावणौ, आइज साची तपसा है, ओ इज आभ्यंतर तप है।

दान देवण सूं चीज ओछी नी ह्वै। वधै। कूवौ इणरौ परतक्ष दाखलौ है। कूवा मे सू पाणी काढिया मे उण मे खूटण गालौ नी आवै। काढता जावां ज्यूं सागलतौ जावैला। इणीज भांत धन रौ सदुप-योग करण सूं वो वधतौ इज जावै। कूवा मे सूं जे पाणी नी काढां तो

उण पाणी री काई हालत व्है ? नवौ पाणी नी सागलवा सूं जूंनौ पाणी वास मारण लाग जावै । जिण कूवा रौ पाणी वास मारै, उणरै कोई नैडौ ई नी जावै । इणीज भात जे धन री तिजौडी मे धन ऊंडौ धर दियौ जावै, हिरदारी तिजौडी रै कंजूसाई रौ मजबूत तालौ दे दियौ जावै, अर उदारता माथै वंधण लगाय दियौ जावै तो इसा कंजूस रै कोई नैडौ ई नी जावै । सवार पे'ली कोई उणरौ नाम ई नी लेवै । पण जिकौ धणी दान देवतौ व्है अर मन रौ उदार व्है, उणरौ नाम इज मानखा री जीभ माथै वारंवार चढै । राजा करण एक मोटौ दानी हुऔ । वो नित दिनूंगै दान देवतौ । इण वास्तै उण वेला नै आज ई दुनिया राजा करण री वेला कवै ।

भारत रै अमर कवि संत कबीर इण वास्तै इज कह्यौ है—

'पानी बाढै नाव मे, घर मे बाढै दाम ।
दोनो हाथ उलिचिये, यही सयानो काम ॥

समंदर री छाती माथै नाव अरडाट करतौड़ी आगै वधै । उणमे जे पाणी भरी जण लागै तो हुँसियार मिनख तुरत दोनूं हाथा सूं उलीचण लाग जावै । कारण के नी उलीचै तो नाव डूब जावै अर उणरै सागै मुसाफर पण तापी रै तलै जावता वाजै । इण वास्तै जिण वखत घरमे पैसौ वधण लागै, डाह्या मिनख रौ ओ फर्ज है के उणनै छूटा हाथ सूं दान देवणौ चाहिजै । समझू मिनख नै गरीबा नै दान देवणौ चाहिजै । कारण के जे जरूरत सू ज्यादा पैसौ भेलौ व्हैला तो चोरी सकारी रौ भौ रैवैला । अर जीव नै पण खतरौ'रैवैला । इण भात पैसौ ई जावैला अर जीव पण जावैला । गायनै दोव नै दूध नी काढां तो दूध री सरा मतैई बद व्है जाएला । इणीज भात भेला कियौडा धन रौ उपयोग किया बिना नवौ धन नी मिलै ।

धन री रामत फुटबॉल रै ज्यूं व्हैणी चाहिजै । कोई फुटबॉल पोता कनै इज मेल दे तो रामत कीकर व्है सकै । इण वास्तै इज फुटबॉल कनै आवता इज खेलाडू उणनै आगला खेलाडू कानी फेंके । इणीज भात पैसा री रामत पण पैसा नै आगौ फेंकने इज रमणी चाहिजै । समाज मे पैसौ वैवतौ रैवै तो समाज रूपी सरीर निरोग रैवै । संस्कृत भासा मे धन नै 'द्रव्य' पण कैवै । जिणरौ अर्थ है के जिकौ पाणी री गलाई बैवै वो 'द्रव्य' है—'द्रवतीति द्रव्य' लुगाया नै पोतारै गैणा-गाठा रौ धणी

गुमेज ह्वै । वे हेम रा जडाऊ गैणा पैर नैं पोतारी श्रीमंताई दुनिया नै दाखवैं । पण जे वे गैणा री घडाई जोगा पैसा ई समाज री भलाई खातर खरचै तो समाज री विसमता मिटै अर वांरा जीवण मे पण सादगी वापरै । भर्तृहरि कह्यौ है—

'दानेन पाणिर्नतु कंकणेन'

हाथां री सोभा जड़ाऊ काकण पेहरिया सूं नी ह्वै, दान दियां सूं ह्वै ।

अंग्रेजी मे पण एक ओपती कहेवत है—

The hand that gives, gathers'

जिकौ हाथ दान देवै वो देवै कोयनी भेलौ, करै ।

मारवाड रा एक नैनकडा गांवडा मे एक लुगाई रैवती । उणरौ मन घणौ मोटौ हो । उणरै घर में जे कोई आवतौ तौ वा उणनै जीमियां वगर पाछौ नी जावा देवती । केवण रौ मतलव ओ के घर मे खालीपौ ह्वै तां थका ई वा घरै आयौडा नै भूखौ नी जावण देवती । उणरौ घर-धणी पण एक मांमूली आदमी हो । वो मैंणत मजूरी करनै पोतारौ गुजराण चलावतौ । उण वाई नै उणरी दान विरती रै कारण सगलौई चौखलौ उणनै ओलखतौ' अर इण कारण उणरा घरधणी नैं पण सगलौई चोखलौ ओलखतौ । एक वेला उणरा घरधणी नै मैंणत मजूरी वास्तै थोड़ौ आगौ नेडौ जावणौ पड़ियौ । रवानै ह्वैती वखत वो लुगाई नै कैवण लागौ—म्हारै फलाणै गांम जावणौ है, आठ-दस दिन लागैला थूं कोथली मे थोडौ आटौ घाल दे ।' लुगाई आछी तरिया जाणती ही के म्हूं आया गिया री इतरी सरवरा करूं तो पछै म्हारै धणी री पण मिनख सरवरा करैला इज । इणां नैं भूखौ नी रैवण देवैं । इण वास्तै साथै आटौ लेजाण री जरूरत इज कोयनी । वो आदमी वीर ह्वियौ जरै उणरै संतोक वास्तै उणरै सांमान मे एक खाली कोथली मू डौ वांध नै घाल दीवी । वो आदमी तो जठै-जठै गियौ, मिनखां उणनै अधर राखियौ । उणनै खूब सोरौ राखियौ अर आछी आगता—सागता कीवी । उणरै नी तो जावती वखत कोथली खोलवा री कांम पडियौ अर नी आवती वखत संभालवा री कांम पडियौ । घरै आया उणै पोतारी जोडा यत नै कह्यौ —'म्हारै तो कठैई पण आटा री कोथली खोलवा री ई कांम नी पडियौ । कोथली ही ज्यूं री ज्यूं पाछी लायौ हूं ।' लुगाई

बोली—'कोथली तो फगत थारै संतोक खातर सफा खाली बाधने मेली ही । आ देखौ साफ खाली है । बाकी थारै खुराक तो म्है पे'लीज पुगाय दीवी ही ।' आदमी नै नवाई लागी । वो बोल्यौ—'खुराक पे'ली कीकर पुगाई ? अर कदै पुगाई ? म्है तो नी देखी ।' लुगाई उणनै समझावती थकी बोली—आपणै अठी होय नैं जितरा वटाउडा निकलै, म्हूं उणारी पूरी खातरी राखूं । घर मे जेडी जवजुआर री ऊकलै, वानै खवाय नै मेलूं । इण वास्तै म्हनै पूरी खात्री ही के थानै कठैई कोथली खोलवा रो काम इज नी पडै । आपणी रोटी आगै त्यार लाधी ।

जिकौ मिनख रात दिन दांन देवै, उणनै दान दिया वगर चैन इज नी पडै । उणनै आणंदइज नी आवै । इसौ मिनख जद दूजा नै भूखा-तिरसा के दुखी देखै तो पोतै पण दुखी व्है जावै । पोतै पण भूखौ तिरसौ रैवै । अर जठा ताई पारकौ दुख नी मिटै वो दुखी इज रैवै ।

महाराजा रंतिदेव पोतारा राजमेल रा आगणा मे बैठिया हा । अडतालीस दिना री उपवास व्हैता छताई भूख तिरस वारै नैडी ई कोयनी ही । दिन रात अलेखूं जीवा नै भूखा तिरसा देखनै वारौ जीव हरदम दुखी रैवतौ । वारै मन मे हर वखत एक इज अतर्नाद गूंजतौ के इण सगला निरदोस प्राणिया नै बचावण खातर म्हनै काई करणौ चाहिजै । इतरा मे महामंत्री उठै आयौ । वो बोल्यौ—'महाराज, आज आपकै उपवास रा अडतालीस दिन पूरा व्है ग्या । दिन-दिन आपकी जीवण सगती क्षीण व्है री है । इतरौ व्हैतां छता ई आप कितरी चिंता करौ हो ? महाराज, आपरी तपसा अनोखी है ।' रंतिदेव धीरेसीक बोल्या—मंत्री जी, म्हनै काई करणौ है सो बोलौ । पूरा राज मे हालत खराब व्है री है, उणसूं म्हूं घणौ दुखी हूं । इण मे सूं छूटवा रौ म्हनै कोई रस्तौ इज निजर नी आवै ।' महामंत्री बोल्यौ—महाराज, दुस्काल सूं प्रजा नै बचावण खातर आप काई नी कीनौ ? राज भंडार उघाडौ नाख दीनौ, राज मैं 'ल री सगली सपदा बाट दीनी ! अर इतरौ कीनौ पछै ई आप अडतालीस दिना सूं भूखा हो । मिनख पोता रै पाण जितरौ कर सकै, उतरौ तो आप कर छूटा । पण अबै ।' इतरा मे राजमैल रै बारै हाकौ-हूबौ सुणी जै । जय हो महाराज रंतिदेव री जय हो ! महाराज उपवास छोडा वौ अर पारणौ करावौ ! लाखा मरौ पण लाखा नै पालण वालौ मत मरौ ! महामंत्री राजा नै कह्यौ—'महाराज, आप

प्रजा री पुकार सांभली ? प्रजा री पुकार नै प्रजापालक राजा कीकर ठुकराय सकै ? महाराज अबै तो आप नै पारणौ करणौ इज पड़ैला ।'
महाराजा रंतिदेव सरलता सूं बोल्या— 'महामंत्री जी, प्रजा रौ म्हारै माथै इतरौ प्रेम है सो म्हूं भागसाली हूं । पण जिण वखत अलेखूं जीव भूखा मरता व्है, उण वखत म्हैं मूंडा मे कवौ कीकर घाल सकूं ।
महामंत्री बोल्यौ—'महाराज, आप कोई प्रजा रै मूंडा मे सूं तो ग्रास लेवता कोयनी । आप इतरा दिन अन्नजल रौ त्याग कीनौ, वो किणरै कारण ? प्रजा रै कारण इज तो । आप रौ मोटौ त्याग देखनै राज रा एलकार अर सगली प्रजा आप नै विणंती करै है । इण वास्तै अबै तो आपकै वास्तै नी पण प्रजा कै वास्तै आपनै पारणौ करणौ पड़ैला । आपकै सरीर री हालत देखनै प्रजा आरतनाद करै है । वा आपनै सांभलणी इज पडैला ।' रंतिदेव पोता रै मन रा दुख नै दाखवतां कह्यौ —म्हूं सगली वातां समझूं हूं । म्हारी व्हाली प्रजा रा प्रेम नै पण समझूं हूं । पण म्हारा राज मे जठा सूंधी अनाज रा एक-एक दाणा वास्तै कंवला टाबरिया मरता व्है, धानरा एक-एक कवा वास्तै के पांणी रा एक-एक घूंटिया वास्तै मिनख मिनखपणौ भूल जावता व्है । उठा तांई आपकौ रंतिदेव राजमैल रा एक खूंणा मे जाय नै कीकर जीम सकै ? महामात्य ! भूख अर तिरस सगलां नै एक सरीखी लागै । इण वास्तै प्रजा की जिंदगी करता रंतिदेव पोतारी जिंदगी नै मूंघी गिणै, आ वात कदै ई नी व्है सकै ।' उणीज वखत प्रजा री आवाज फेरुं सुणी जी, महामंत्री विणती करतौ बोल्यौ—'साभ लौ महाराज, प्रजा री आ करुण पुकार सामलौ । आ सगली प्रजा म्हारै कनै जवाब मांगैला । म्हैंपण लोकमत री अवगणना कीकर कर सकूंला । इण वास्तै प्रजानै संतोक देवणरी किरपा करौ महाराज !' रंतिदेव चिंता मे गरक व्हियौडा बोल्या— 'महामत्री ! काई म्हनै प्रजा री इच्छा माफक उपवास तोड़णौ इज पडैला ? म्हूं विचार करूं हूं के कठैई प्रजा री इच्छा प्रमाणै चालवासूं म्हारै हिया री निबकाई म्हनै मोह रूपी, अंधकार मे तो नी नाख देवै ? जीवण रौ पंथ तलवार री धार जिसौ है । इण सरीर रा मोह मे पडनै म्हूं ईस्वर रा मारग सूं तो नी चूक जाऊं ।' महामत्री तुरत कह्यौ—महाराज ! आपनै ईस्वर रा मारग सूं डिगावा जितरी ताकत म्हा पापियौ मे कठै ? म्है तो आपकी तपसा अर दान विरती रौ दरसण करनै धिन व्हैग्या ।' आ बात सुण नै रंतिदेव बोल्या—'तो

म्हूं आज उपवास छोड़ूं हूं, महामंत्री जी ! म्हूं आज पारणौ करूंला ।
म्हारी साधारण सूं साधारण प्रजा नै जितरौ मिल सकै म्हूं उतरौ इज
अन्न लेवूं ला ।' महामंत्री कह्यौ, 'आपरी कृपा महाराज ! म्है आप रै
वास्तै काची-पाकी रोटी अर जल त्यार राख्यौ है । आपरी प्रजा खातर
आप पारणौ करो । आप रौ तप यावच्चंद्रदिवाकरौ तपैला ।

महामंत्री लूखी रोटी अर जल महाराज रै सांम्ही धरै । रोटी रौ
टुकडौ तोडता महाराजा रौ हाथ धूजै । कनै बैठा मंत्री चिंता मे गरक
ह्वियौडा राजा रा मूंडा कांनी देखै । वे मन मे विचार करै—इण
दुनिया मे भूतकाल मे अर वर्तमान काल मे इसा परदुख-भंजण राजा
कितराक ह्विया ह्वैला ? महामंत्री राजा नै काई कैवण रौ विचार करै
के इतरा मे थग-थग करती एक लुगाई आवै । उणरै मूंडा मे सूं सबद
निकलै—महा राजा बापजी ! इण लुगाई नै देखनै महामंत्री
धूजण लागै । वो उणनै हाथ सूं सानी करनै जावण रौ कैवै । लुगाई
पाछौ जावण रौ मतौ करै । इणीज वखत मूंडा कानी जावतौ रंति-
देवरौ हाथ रुक जावै । वो लुगाई नै जावती नै रोकै अर पूछै—'बोल
बाई, थूं कीकर आई ? अर आई तो म्हारा आगणा सूं पाछी क्यूं वली ?
वा लुगाई बोली— महाराज, म्हनै माफ करौ, म्हूं आ जाणूं हूं के आप
अडतालीस दिन रौ उपवास किया उपरात प्रजा री अरज मान नै आज
पारणौ करण नै विराज्या हो । पण राजन् ! इतरौ बोलनै वा
लुगाई अटकगी । राजा बोल्यौ—काली थूं अटकी क्यूं ? थारै कैवणौ
ह्वै जिकी कैयदे । ओ अन्न जल तो फगत म्हारा पंड नै साति देवैला,
पण थारौ आरतनाद सुणनै म्हारै हिरदारी साति मिट जावैला । पंड
री साति करता हिरदारी साति घणी कीमती ह्वै ।' लुगाई बोली—
'महाराज, फगत म्हारी भूख रौ इज सवाल ह्वै तो म्हूं अठा सूंधी नी
आवती पण म्हारौ मा रो हिवडौ आज म्हारै काबू मे नी रह्यौ ।
म्हारै कालजा री कोर म्हारौ लाडकडौ बेटौ म्हारी आंख्या सांम्ही
भूखां मरतौ मरै आ म्हूं नी देख सकी महाराज ।' रंतिदेव राजी
होयनै बोल्या, 'काली, म्हारा इसा भाग के थारै हिरदा मे म्हारै वास्तै
इतरी सिरधा जनमी । म्हू थारी सिरधानै नी डिगण देवूं । आ रोटी
लेयनै जा अर थारा निरदोष बालकिया नै खवड़ाव ! थारी कलकलती
आंतरडिया ठरवादै, म्हारी बैन !' राजा वा लूखी रोटी उण लुगाई नै
देय दी । लुगाई धूजता हाथा वा रोटी लेयनै पाछी वली । सिरधा सूं

महामंत्री बोल्यौ—महाराज, आप धिन्न हो। आपरी आ मंगलकारी सुभ निजर देखनै इज म्हूं निहाल ह्वैग्यौ।' रंतिदेव कह्यौ—'महामत्री, प्रजा री मनवार सूं इज म्है पारणी करण रौ विचार कियौ हो पण जठा ताई प्रजा रो एक वालक ई भूखौ पड्यौ ह्वै म्हारै गलै अन्न कीकर उतरै ?' महामंत्री गंभीर होयनै बोल्यौ—महाराज ! इतरा लांबा उपवास पछैई आपरै गलै अन्न नी उतर सक्यौ। अवै आप म्हारी विणती सुणनै पांणी रा घूंटिया सूं पारणौ करावौ। देही रै ज्यूं देह रौपण धर्म ह्वै। सरीर त्रिना सरीरधारी कीकर टिक सकै ? महाराज, सरीर रा धर्म री पालणा करणीज पडै।' रंतिदेव बोल्या—भाई, थांरा सगला रा संतोक खातर म्हूं पाणी रो घूंटियौ भरनै पारणौ करूं हूं।' रतिदेव प्यालौ हाथ मे लेय नै मूंडा रै अड़ावणौ इज चावै के इतरा मे एक चंडाल थग-थग करतौ उठै आय उभौ ह्वै। चडाल बोल्यौ—'महाराज, म्हूं कोई आवार नी होवण सूं आपरै कनै आयौ हूं। सगली प्रजानै वैराजी करनै म्हूँ आप तांई पूगौ हूं। म्हूं आई जांणू हूं के इण वैराजी पणा रौ कांई फल मिलैला, पण म्हूं कांई करूं।' इतरौ त्रोलनै वो अटक जावै। उणरै आख्यां मे सूं गंगा-जमना वैवण लाग जावै। वो लकडी रा टेवका सूं पाछौ वलवा लागै। रंतिदेव उणनै उभौ रैवण रौ इसारौ करै अर कैवै— उभौ रै भाई, उभौ रै ! म्हूँ थारा अंतर मे जगती दुख री ज्वाला देख सकूं हूं। ए आख्यां हिवड़ा रौ दरपण है। इण वास्तै थारौ दुख-दरद म्हनै साफ दीसै।' आ साभलता पाण चडाल हुचकौ भरीज नै रोवण लाग्यौ। राजा रा पगा मे पडनै बोल्यौ—'महाराज ! म्हूँ पोतानै रोक नी सक्यौ। इण वास्तै इज अठै आयौ हूँ। इण जिंदगी मे म्है कोई बीजी खेवना राखीज नी। नैनौ थकौ हो जरै एक कूकरियौ पालियौ हो। वो कूतरौ आज दिन ताई दुख-सुख मे म्हारै सागै है। केडीई आफत पड़ी पण कूतरै म्हनै ख़ोलियौ कोयनी। पण आज च्यार दिनां सूं उणरै मूंडा मे पाणी री एक छांट ई नी पडी। म्हारी झूंपड़ी रा वारणा आगै वो पड़ियौ तड़फडै है। उणरौ साद पण बैठग्यौ है। उणरी पीडा म्हारा सूं देखांणी कोयनी। इण वास्तै म्हूँ अंदाता रै सांम्ही हाजर ह्वियौ हूँ।' रंतिदेव उणनै दिलासा देवता कह्यौ—भाई ! थूं रोव मती। मांनव कुल रौ कल्याण ह्वैजौ ! म्हनै आज मांनव हिरदा मे करुणा रा दरसण ह्विया है। भाई, लेजा ओ पाणी ! थारा कूतरा नै ओ पाणी पाव, जिण सूं उणरी तरफड़ती आत्मा नै सांति

मिल'ला। थूं विस्वास राखजै के प्रजा रौ रोस थारौ कोई विगाड नी करै।' आ कैयनै राजा रंतिदेव वो पाणी रौ प्यालौ उण चंडाल नै सूंप दियौ। चंडाल सिरधा सूं माथौ झुकायनै उठा सूं रवानै व्हियौ। महाराज री करुणा सूं मरियौडी आख्या चंडाल रा पगा कानी इज लाग्यौडी रही। महामंत्री राजा री करुणा सूं पूर्ण आख्यां देखनै कह्यौ - महाराज! पुण्यनिधि विन्न है! आज रौ ओ धिन्न अवसर म्हूं ताजिंदगी नी भूल सकूं। मानखा जूंण मे आवण वाली भयानक अव खाईया मानखा नै मिनख पणा सूं चलायमान कर नाखै पण ए अब खाईया इज मानखा रै मन री फूटराई रा पण दरसण करावै। आपरा पुन्न-परताप सूं म्हूं उण फुटरापा रा दरसण करनै कृतार्थ व्हियौ।' रतिदेव नम्रता सू बोल्या—महामत्री जी, आपरी कैवणी सही है। आप सगला नै म्हूं आज मोटौ मिनख दीसूं हूं। पण हिरदा री विसालता अर मन रौ फूटरापौ तो भगवान सगला नै एक सरीखौ इज सूंप्यौ है। उणनै सकुचित करणौ के उणरौ विकास करणौ ओ मानखा रै हाथ री बात है। इण वास्तै कोई मिनख रतिदेव सूं कमती नी है। प्रजा नै म्हारौ इतरौ सदेसौ पुगाय दीजौ के म्हारी अंध सिरधा मे आपनै कोई इण दोनू मिनखा नै किण भात री इजा नी देवै।' महामंत्री महाराज रा दरसण करनै रवानै होवै। रंतिदेव री विसाल आत्मा मे जनता रौ ओ दुख देखनै 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' री भावना निजर आवै।

न त्वह कामये राज्य न स्वर्गं न पुनर्भवम्।'
कामये दु ख तप्ताना प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

म्हनै नी राजपाट चाहिजै, नी सुरग रौ फूटरापौ चाहिजै, अर नी मोक्ष चाहिजै, म्हूं तो फगत दुखी प्राणिया रौ दुख मिटावणौ चावूं।

ओ है एक मोटा दानी रै दरिया समान दिल रौ एक दाखलौ। इतरा मोटा मन वालौ मिनख ससार रा सगला प्राणिया नै पोतारा नी बणाय सकै? उण सूं विस्वबंधुत्व आगौ रैय सकै? जिण वखत मन रूपी दरिया मे दान री लेहरा उछलवा ढूकै, उण वखत मानखौ पर दुख काटणार बणै। दान मे चढाव उतार आवै अर दांन मे पगौथिया पण व्है। मानखा रै मन री उदारता रौ माप दान सूं निकल सकै।

कई जणा दान देवै खरौ पण पोतारी मरजी सूं नी देवै। इसा मिनख सरमसूं, लाचारीसूं के दबाण सूं दान देवै। वो दांन हाथ सूं

जरूर दिरीजै पण मन सूं नी। इण दुनिया में इसा मिनखां री ई तोटौ कोयनी के जिकौ कंजूसाई अर मन री ओछाई मे सगला सूं आगै रैवै।

कई जणा राजी खुसी सूं दान देवै। वारै मनमे सच्चाई पण व्है। पण उणारौ दांन गरीब गुरबा री जरूरत प्रमाणै नी व्है तौ गरीबा नै जरूरता मोकली व्है अर ओ सुभाविक पण है। वारी जरूरता दांन सूं पूरी नी व्है।

तीजी भांत रा मिनख इसा है के जिकौ पूरा मन सूं दान देवै। राजी खुसी सूं दूजा री मदद करै। इसा दान सूं सामला मिनख री जरूरत पूरी व्है। आ बात जरूर है के इसा दानियां मे थोडौ अहभाव व्है। वे बिना माग्यां कोई नै दान नी देवै।

चौथी तरै रा मिनख इसा व्है के जिकौ पोतारी खुसी सूं दांन देवै। वे सामला मिनख री जरूरत करतांई वत्ती दान देवण री मंसा राखै। वे मागिया पे'लीज देय देवै। पण इसा मिनख दान दुनिया रै सामनै देवणी चावै। दांन लेवणिया कई इसा पण व्है के जिकौ दांन लेवता सकीजै। अर बिरती पण चोखी कोयनी। इण मे ई अहंभाव री पुट निजर आवै।

पांचमी भांत रा दानी इसा व्है के जिकौ पोतारी राजी खुसी सूं मानखा नै वारी जरूरत माफक बिना मांग्या एकांत मे दान देवै। इण दान री खबर लेवण वाला नै के देवण वाला नै इज पड़ै। कोई तीजा मिनख नै इणरी गंध पण नी पड़ै।

छट्टी तरै रा इसा पण दानी व्है के जिकौ गुप्त दान देवणी चावै। वे पोतारा धनरौ उपयोग इण भात कर के उणरी खबर वानै पोतानै इज रैवै। दान लेवणिया नै उणरी कौई खबर नी रैवै। उण दान री कोई जाहेरात नी करै। दान लेवणिया नै पण कोई भात रौ सकोच नी रैवै। दुखी मिनख नै अठी उठी रखडणौ पण नी पड़ै। दान लेवणिया नै दातार रौ उपकार पण नी मानणौ पडै। इण भात ए गुप्त दानी घणा मोटा मन वाला मिनख व्है।

सातमी भातरा मिनखा रा मन इतरा मोटा व्है के उणमे लेवण वाला नै अर देवण वालां नै किणनैई ठा नी पड़ै। सस्थाआ री पेटी मे दांन नाखण वाला नै इण बात री कोई जांण नी रैवै के इण दान री

फायदौ किणनै मिलैला ? दान लेवण वाला नै पण इण वात री कोई बेरौ नी रैवै के दान देवणियौ कुण है ?

आठमी तरै रा दानी सगला सू ऊचा व्है। नी तो कोई रै माथै उपकार जतावणौ चावै अर नी वारी निजरा मे कोई छोटी-मोटौ व्है। वे तो दुखी मिनख नै देखनै उणरा दुख मे सीरु वणै। ओ दान इतरौ उत्तम तरै रौ है के आगला नै आखी उमर कठैई मांगवा नै नी जावणौ पडै। सामला रौ दालदर ताजिंदगी मिट जावै।

इण भात दांन री भावना रंतिदेव जिसा महापुरखा रै मन मे प्रगटै। इण सूं संसार री फूटरापौ फैलै। पछै तो दुनिया मे मांनखा नै दुखरी जाणाई नी पडै।

म्हूँ आपनै कैवतौ हौ के जे दांन री आ उत्तम भावना आंपणै जीवण मे प्रगटै तो आपणौ जीवण सुखी बण जावै। सगला जीवां सागै आपणौ अपणात पणौ वध जावै। आपणा जीवण मे मोकली आत्मसुद्धि आय जावै।

卐

१४

परोपकार रौ इमरत

इण भूमंडल माथै अनत काल सूं अलेखा जीव जनम लेवता आया अर मरता आया। जनम-मरण रो ओ चक्कर आगै पण अनंत काल तांई चालतौ रैवैला। इणरौ कोई छेवाडौ कोयनी। सगलौ चेतन जगत जनम मरण रा हिंडौला मे झूलै है। इण हिंडौला मे झूलता जीव वारंवार एक दूजारै संपर्क मे आवै। ए जीव कोई वखत मानखा जूंण मे आवै तो कोई वखत जिनावरा री जूंण मे आवै। करैई पंखेरू वारी जूंण में आवै तो कोई वखत वनस्पति, धरती अर जल रूप सूं जनम लेवणौ पड़ै। इण भांत एक इज जीव तरै तरै री जूंण मे भटकतां-भटकता कई वार पाछौ मिनख जमारै मे आवै। पण इण सगली जूंणां मे भटक्या पछै पाछौ मानखा जूंण में आवण रौ भेद कांई है? इण वात रौ आपा कदैई विचार कियौ है? आंपां ओ पण कदैई भर ऊ घ मे ई विचार कियौ है के आंपां नै मिनख जमारौ मिलियौ कीकर है? आंपा नै पछी-पंखेरू के वीजी कोई जीवा जूंण क्यूं नी मिली। ससार साम्ही ओ एक सुल्गतौ सवाल है जिकौ वारौमास आंटा देवै। आज रा स्वार्थ, कृतघ्नी पापी मिनख कनै इणरौ कोई पडुत्तर कोयनी। आंपां इण वात माथै जे ऊंडौ विचार करां तो आपां नै इणरौ एक इज जवाब मिलैला के 'जिणै मिनख पूरबला भव में कोई पण जूंण मे वीजा रौ कोई भलौ कीनौ ह्वै पर उपकार कीनौ ह्वै, दूजा रै खातर पोतारौ स्वार्थ छोड़ियौ ह्वै उण नै इज इण भव मे मानखा जूंण अर मानखा सरीर मिलै।

जैन सास्त्र मे इण वावत एक सागोपांग दाखलौ है—

एक जंगी वन हो । उण मे कई मोटा-मोटा झाड वोट, वेलडिया अर जाडी झाडी ही । उण मे पूरी सूंन्याड होवण सूं मोकला जिनावरा री उठै ने कम बासौ हो । नाहर सूं लगाय नै हिरण ताई सगली तरै रा हिंसक अर अहिंसक जिनावर उठै मौजूद हा । इण वन मे हाथिया री एक टोलौ पण रैवतौ । इण टोला मे एक फूटरौ मस्त हाथी पण हो। संजोग इसौ वण्यौ के इण वन मे एकर' दव लागग्यौ । दव लागा वन कटी री अर जीवा जूंण री काई हालत व्है, वा आप सूं छानी कोय नी । वन, मसाण वण जावै । जीवा जूंण मे दौड भाग माच जावै । सगलाई पोत पोतारौ जीव लेय नै नाठै । सो दव लागता इज सगलाई जीव अठी उठी नाठण लाग्या । जिण दिस दव चेत्यौ हो उण सू उल्टी दिस मे सगलाइ जीव जावण लाग्या । वो मस्त हाथी पण सगलां रैई सागै दौडण लाग्यौ । नाठतां-नाठता उणरी निजर एक ठौड पडी । उठै वनस्पति के झाड झखाड काई नी हा । हाथी विचार कियौ—आ म्हारै वास्तै बचाव री जागा है । बापडा बीजा जिनावर पण नाठ नै आवैला तो वानै ई आसरौ मिलैला । अठै जिकौ थोडी घणी वनस्पति है, म्हूँ उणनै ई साफ कर नाखू , जिण सूं दव अठा ताई नी पूगै । छेवट उणै खासी भली जमीन साफकर नाखी । बीजा जिनावर ई प्राय नै उठै भेला हुआ । हाथी सबरै बिचालै चोखी जागा ढाब नै उभौ रह्यौ । इण ठौड आवण सूं सगलाई जिनावरा रौ बचाव व्हियौ । सगलाई आपसरी रौ वैर भाव भूलग्या हा । वांरौ सब रौ एक इज धै हो के दव सू कीकर बचणौ । वा पूरी जमीन जिनावरा सूं खचाखच भरी जगी ही । एक कीड़ी उभी रैवै जितरी ई जागा नी ही । इतरै तो एक खरगोसियौ उण टोला भेलौ आसरौ लेवण नै आय पूगौ । खरगौजी डाफा चूक व्हियोड़ा हा । उणै देख्यौ के कठैई खाली जागा नी ही । अवै काई करणौ ? कठै जावणौ ? वो हाथी उठै घणी ताल सूं उभौ हो । उभा-उभा वो कायौ व्हियौ सो खाज खिणण खातर एक टाग ऊंची उपाडी । खरगौ मौकौ देखर' पग री ठौड़ आय नै बैठग्यौ । उणै इत रौई विचार नी कियौ के जे हाथी पग नीचौ मेलियौ तो म्हारी चटणी व्है जाएला । भोलौ जीवडौ जीव बचावण रा सतोक सागै जमनै बैठग्यौ । हाथी सरीर खजवालता-खजवालता नीचै देख्यौ तो पग रै हेठै खरगौ बैठौ । कठैई पग मेलवा नै ई जागा कोय ही नी । अक्कल वान हाथी मनौ-मन विचार कियौ—जे म्है पग नीचै मेलियौ तो इण खरगिया

रौ गीसौ निकल जाएला। म्हूं थोडी ताल तीन पगा माथै ई उभौ रैय सकूं। पण ओ खरगौ वापडौ कठै जावैला ? हाथी नै खरगा माथै दया आई अर उणरै मन मे परोपकार री भावना जागी। मन मे स्वार्थ त्याग री लैरा उठण लागी, अपणात पणा री संगीत गूंजण लाग्यौ अर हमदरदी री सुर लै' रिया वाजण लागी। परोपकार मे मस्त ह्वियौडौ हाथी पोतारौ आपौ भूलग्यौ। घडी माथै घडी अर पो'र माथै पो'र वीतण लागा। पण हाथी नै इण बात री भान इज नी रह्यौ के वो तीन पगा माथै उभौ है। निरोई समय बीतग्यौ। दव हाल आजमांणां कोय नी हो। भयानक दव देखनै चीसा पाडता जीव अवै सायत सूं बैठा हा छेवट उण परोपकारी जीव रौ सरीर अपणात पणा रा प्रवाह मे रैवै चीज नै आत्मा सू न्यारौ ह्वैगौ। हाथी री आत्मा उठा सूं विदाय लेय नै मानखा देही धारण कीवी।

आपणी वात अठै इज पूरी ह्वै। बात रौ सार ओइज के मिनख जमारा रौ सार परोपकार है।

परोपकार एक अमोलक सद्‌गुण है। मानखा री जीवण परोपकार रा टेका माथै इज ठैरियौड़ौ है। परोपकार रूपी इमरत मिलिया सूं इज मिनख ओ नासवांन खोलियौ छोडनै अजर-अमर वण सकै। मिनख रौ जीवण सौरभ वाला फूल जिसौ होवणौ चाहिजै। जो पोतारौ भोग देयनै, बीजां नै सौरभ देवै। बीजा रै खातर पोतानै होम करणौ, इणरौ नाम इज परोपकार है।

एक गांधीडारी दुकान मे गुलाव रा फूल पीसीजता हा। मारग वैवतै एक वटाऊड़ै पूछ्यौ—'अरे फूलां, थे बगीचां मे फूल्या हो, थे इसौ काई कसूर कीनौ है के थानै इण भांत पीसीजणौ पडै है ?' फूल बोल्या—म्हारौ सैसू मोटौ गुन्हौ ओ है के म्है एकदम फूलीजग्या अर खदखद करनै हंसण लाग्या। म्हांरौ ओ हंसणौ दुनिया नै सूवायौ कोयनी। दुनिया दुखिया नै देख'र वांनै थावस बधावै, वा रै सागै अपणात पणौ जतावै। पण सुखियां नै देख'र वांसूं ईसकौ करै। वारी जडा वाढवा री कोसिस राखै।' कई दूजा फूल बोल्या—बीजां खातर मर पूरी देवणौ, इण मे इज जीवण री सार्थकता है। फूल पीसीजता रह्या अर वारै मांयनै सूं परोपकार री सौरभ आवती री।

अगरबत्ती पोतै तो बलै अर बीजा नै सुगंध देवै। इणीज भांत

जिकी धणी पोतै दुख वैठ नै दूजा नै सुख देवै, वो इज दुनिया मे अमर रैवै ।

मरना भला है उसका, जो अपने लिये जीये ।
जीता है जो मर चुका, इन्सान के लिये ।

एक एकात आश्रम मे एक डोकरा मुनि रैवता । वे मोटा तपसी, त्यागी, अर संजमधारी हा । उण वखत एक वृत्तासुर नाम रौ रागस मिनखा नै खूब हैरान करतौ हो । पोतारा बल रै मद मे वो सगला नै ई तुच्छ मात्र गिणतौ । वो अेलेखा जुल्म करतौ अर रिसि मुनिया रै तप मे पण अतराय नाखतौ । त्रासियौड़ी प्रजा छेवट इन्द्र नै अरदास कीवी— 'वृत्रासुर म्हारी जडा खोद रह्यौ है, इण नै किणी भांत खत्म करनै म्हानै बचावौ ।' इन्द्र रै कनै वैभव री कोई कमी नी ही पण आत्म बल रौ घाटौ हो । सो वो रिसिया कनै गयौ अर पूछियौ—'भगवान, इतरी कोसिस करता छताई वृत्रासुर मरतौ क्यूं नी ? आपणै कनै अस्त्र-सस्त्र मोकला है । पण वो दुस्ट आपणा सगला सस्त्रा नै न कामा कर नाखै इणरौ कारण काई ! रिसी बोल्यौ—इन्द्र ! दुस्मण जो सिर जोर ह्वियौ है, इणरौ ई कोई कारण है, बिना कारण तो सिर जोर नी ह्वैयौ है । आज देवतावा अर मिनखा मे सूं स्वार्थ त्याग री भावना खत्म ह्वैगी है । त्यागी अर निस्वार्थी मिनख तो आगलिया माथै गिणै जितरा रह्या है । इसा मिनख जे पोतारी सगती रौ प्रेम सूं संगठन करै तो दुस्मण नै जीतणौ कोई मोटी बात कोयनी । इन्द्र पूछियौ—'भगवन् ! इण सगती नै आपा किण विध मेल सका ?' रिसी बोल्या—'आप दधिचि रिसि कनै जाओ ! ओ रिसी त्यागी, तपसी अर दयालु है । जे किणी भात इण रिसि रा हाडका मिल सकै इण हाडका सूं अस्त्र सस्त्र बणै तो उणरै साम्ही वृत्रासुर नी टिक सकै । इन्द्र भौतिक सपत्ति रौ मालिक हो । हाडकां सूं जीत मिल सकै, आ बात उण रै मगज मे बैठती नी ही । उणै रिसिया नै कह्यौ—'भगवन् ! दधिचि तो पतला, थाकौडा अर डोकरा आदमी है । उणारा हाडका कीकर कमा आय सकै ? फर म्हूं वानै जायनै विणती करूं अर वे रीसा बल जावै तो ! रिसि बोल्या—वृत्रासुर जिसा पापी रागस भौतिक अस्त्र सस्त्रा सूं कदैई नी मरै । म्है जाणा हा के आपरौ मत भौतिक अस्त्र सस्त्रा कानी है । वृत्रासुर रा नास वास्तै तो पुण्यसाली पुरखां रा सस्त्र इज कांम आय सकै । इण रिसि पर उपकार

खातर इज ससार मे सरीर धारण कियौ है। वारी अंतरेच्छा पण आइज है के वारौ अंत पण जगत रा परोपकार मे व्है। आप झट पधारौ। दधिचि रिसि सरीर छोडण वाला इज है।' बस अबै काई कैवणौ वाकी रह्यौ? इन्द्र अर प्रजा जनां मगला ई जाय नै दधिचि नै आ वात कही अर वा सूं हाडकां री मागणी करी। रिसि बोल्या—'घणा आणंद रा समाचार है। अबै सूं धी म्हनै यूं लागतौ हो के सरीर कोई रै विना कांम आयां नस्ट व्है जाएला। पण अबै थारी बात सुण नै म्हारै मन मे मोटौ हरख उपनियौ। म्हारै सरीर रौ उपयोग इण सूं वधारै काई व्है सकै? इण दुनिया मे सूं जे दानवता अर आसुरी विरती रौ नास व्हैतौ व्है, तो म्हूं एक वखत काई हजार वखत ओ सरीर छोड वानै तैयार हूं।' इन्द्र बोल्यौ—'महाराज! आप रै जिसा पुगता मिनख सूं जुद्ध वास्तै हाडका री मदद मागता म्हनै सरम आवै पण करणौ काई? आपरौ सरीर संसार मे कायम रैवै, इसी म्हारी इच्छा है।' पण इन्द्र ना देवै जिण पे'लीज रिसि तो सरीर छोड़ दियौ। वारा हाडका सूं इन्द्र सस्त्र त्यार किया। जुद्ध भोम मे इण सस्त्रा रै प्रहार सूं वृत्रासुर ठिकाणै पूगग्यौ। सतां अर महात्मा वारौ जीवण परोपकार वास्तै इज व्है। एक स्लोक मे कह्यौ है—

परोपकाराय सता विभूतय

इण संसार में पोतारौ पेट पालवा वास्तै तो कूतरा अर मिनका जिसा जीव ई कोसिस करै ए सगला पोतारै वास्तै जीवै। पण जिकौ बीजा वास्तै जीवै, वारौ जीवण इज सार्थक है। बीजां रौ पेट भरवा वास्तै जिकौ जीवै वारौ जीवण सफल है। स्कद पुराण मे इणीज भावार्थ रौ एक स्लोक है—

मुहूर्तमपि जीवेद्धि नर शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि जीवेच्च लोकद्वय विरोधिना॥

एकाध घडी जितरौ ई जीवणौ व्है तो ई मिनख नै चोखा काम करनै, जीवणौ चाहिजै। पण मिनखा रौ भूंडी करनें के पाप करनै एक कल्प तांई पण नी जीवणौ चाहिजै।

यूरोप मे दरिया काठै एक नैनी सीक झूंपड़ी ही। इण झूपडी मे एक डोकरी रैवती। डोकरी रौ सरीर गरडौ हो, पण उणरौ हिरदौ परोपकार रा काम करण वास्तै मोटियार हो। इण डोकरी री झूंपड़ी

परोपकार रौ नमूनी ही । एक दिन उठै कई वटाऊ सहेल करवा आया । उण वखत बरफ इतरौ पडतौ हो के पूछौ इज मत । डोकरी देख्यौ के सगलाई वटाऊ वरफ अर ठड रै कारण थर-थर धूजता हा । वारै कनै ठंड सूं बचाव करण रौ कोई साधन नी हो । डोकरी नै वारै माथै दया आई । उणै धकली बात रौ कोई विचार किया बिना पोतारी झूंपडी विखौरी अर उणरै लकडा रौ तप कियौ । ठाड मे धूजता वटाऊ बचग्या । डोकरी री झूपडी अगरबत्ती री गलाई सुलगाती ही, पण उण मे सूं सौरभ आवती ही ।

आज रौ स्वार्थी मानखौ का तो पोतारै सरीर रौ पोसण करण मे लागौडौ है नै का पारका री सोसण करण मे लागौडौ है । पण आ डोकरी तो पारकां रै सरीर रा पोसण नै इज पोतारै सरीर रौ पोसण मानती ही । मानखा रा हिरदा मे जिण वखत परोपकार रौ इमरत उतर जावै उण वखत उणनै पारकारा सुख मे पोतारौ सुख दीसै अर दूजां रा पोसण मे पोतारौ पोसण दीसै । पद्मपुराण मे ठीक इज कह्यौ है—

मनसो यत्सुख नित्य स स्वर्गो नरकोपम ।
तस्मात् परसुखेनैव साधव सुखिन सदा ।।

परोपकारी विरती वाला मिनख नै उठै सुरग व्है तोई नरक निजर आवै, जठै फगत स्वार्थरीज भावना व्है । इण वास्तै परोपकारी गृहस्थ बीजारा सुख मे इज पोतारौ सुख मानै । इसा मिनख काम पड्या दूजारै वास्तै जीवपण देवणनै त्यार रैवै । परोपकार करण सूं वानै जिकौ आणंद मिलै वो अगत उपभोग मे नी मिलै । घोडा रौ पूंछ जचै जितरौई लांवौ व्हौ, पण उणसू वो फगत पोतारै पड माथै बैठ्या माखी-माछर इज उडा सकै । इण वास्तै लावा पूछरी कोई खास कीमत कोयनी । पण गाय रा हाचल नैना व्हैता थकाई परोपकारी व्है । उणां सू दूध पीयनै मानखौ वलवान वणै । इण वास्तै वारौ मान पण घणौ है ।

प्रकृति कांनी निजर नाखौ तो च्यारू मेर परोपकार रा इज दरसण व्है । सूरज, चद्रमा, नदी पर्वत बादला, रूख, सरोवर, पवन पाणी अर तावडो, ए सगलाई परोपकार मे इज लवलीन व्हियौडा है । सूरज पोतारै उजास रौ पोतै भोगनी करै पण दूजा नै देवै । चदरमा ससार री भलाई खातर इज ठाडी चादणी रेलै । खलखलाट करती नदिया

अर झरणां री पांणी पण दूजा रै वास्तै इज व्है। रूंखा रा फल फूल अर वनस्पति पण दुजारै वास्तै इज व्है। वादला संसार वास्तै इज वरसै। पवन जगत रा कल्याण खातर इज वैवै अर अग्नि पण दुनियारा पोषण वास्तै इज प्रज्वलै। प्रकृति री आ परोपकारी विरती देखनै कांई आंपा कैय सकां के मिनख सगलाई जीवा मे स्रेस्ठ है? एक कवि ठीक कह्यौ है—

'परोपकाराय फलन्ति वृक्षा परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहति गाव परोपकाराय इद शरीरम् ॥'

परोपकार वास्तै झाड़ फल देवै अर नदियां वैवै नै गाया दूध देवै। ओ सरीर परोपकार वास्तै इज है।

इण संसार मे जिणनै मानव जनम मिलियौ है, जिण नै मानखा देही रूपी सगलां सू सिरै साधन मिलियौ है। मन, वचन धन अर वीजा साधन पण मिलिया है। इणरी जे सार्थकता करणी व्है तो परोपकार इज एक मात्र साधन है। जिणनै मोक्ष मे जावणरी खरौखर इच्छा व्है, उणनै पोतारै सरीर, मन, वाणी, बुद्धि अर सासारिक वस्तुआं पर सूं मोह छोडनै स्वत्व री विसर्जन करनै वहुजन हिताय वहुजन सुखाय वण जावणौ चाहिजै। इसी परोपकारी विरतो वाला मिनख कै वास्तै संसार में कोई पारकौ रैवै इज नी। सगली ससार उणरौ पोता रौ वण जावै अर वो पोतै सगलां संसार कौ वण जावै। तीनू लोका मे इसा मिनख कै वास्तै कोई चीज दुर्लभ नी रैवै। सत तुलसीदासजी इण भावार्थ मे इज लिख्यौ है—

परहित वस जिनके मनमाहि।
तिन कहू जग दुर्लभ कछु नाहि।

परोपकार मे बस साची मानवता अर साचौ मिनख पणौ है। परोपकार विनास मिनखरी कल्पना करणी मानखा जूण रौ अपमान करणौ है। संस्कृतरा पंडिता इण वास्तै इज **'परोपकारो ही मनुष्यत्वम्'** री वात कही है। जिण मिनख मे परोपकारी विरती नी व्है उणनै मांनखा जूंण मे गिणणौई वृथा है।

खरौखर जिकौ आणंद परोपकार मे, है वो दूजी कोई ठौड कोयनी। एक अंग्रेज विद्वांन कह्यौ है—

The luxury of doing good surposses every other enjoyment.

बीजा री भलौ करण सूं जिकौ आणद मिलै वो सगलां सूं सिरै है ।

जे हिरदा मे काखी फैरनै उंडौ विचार कियौ जावै तो सूरज रा उजास री गलाई साफ समझ मे आय जावैला के परोपकार है । जिकौ मिनख परोपकार करै वो पोता रै हिरदा मे भागीडौ काटौ बारै नाखै । जे पोतारी आत्मा रौ कल्याण करणौ ह्वै तो परोपकार वालौ मार्ग पकडणौ इज पडै । परोपकार करणौ कोई रै माथै ऐहसान नी है । ओ तो पोतारी आत्मा रौ इज विकास है । जो परोपकार वालौ मार्ग नी पकडी जै तो मिनख री उदारता, हिरदारी विसालता अर हिरदै कमल री पाखडिया रौ विकास भवैई नी ह्वै सकै । इण भात जिकौ धणी पोतारी आत्मा अहं भाव रा अर अभिमान नै जडा मूल सू उखैलणौ चावै उणरै मूंडासूं म्हूं, म्है, म्हारी विगैरै सवद नी निकलणा चाहिजै । इसा मिनख नै तो परोपकार नै इज पोतारौ स्वार्थ माननै चालणौ चाहिजै । उण वखत उणरौ स्वार्थ के स्व उपकार इज इतरी विसालता धारण करै के उणरौ आपौ सगला ससार मे फैल जावै । उण मे पछै कोई परत्व नामरी चीज रै वै इज कोयनी । तत्वज्ञानिया इण वास्तै इज सारतत्व री तारवणी कीनी है—He that does good to another does good to himself जिकौ बीजारौ भलौ करै, वो उणरो पोतारौ इज भलौ है ।

इण संसार रा वाडिया मे च्यार भात मिनख रै वै । पणवांरै सुभाव मे घणौ फर्क ह्वै । च्यारूं भाँत रा मिनख इज ह्वै पण इणा रा सुभाव मे रात दिन रौ फर्क ह्वै वारै हिरदा री उदारता अर कंजूसाई मे पण फर्क ह्वै । वारै मनरी ऊंचाई-निचाई मे पण फर्क ह्वै । राज जोगी महात्मा भृर्तहरि मर्मवेधी वाणी मे कह्यौ है—

> 'एके सत्पुरुषा परार्थघटका स्वार्थ परित्यज्य ये,
> सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृत स्वार्थाविरोधेन ये ।
> तेऽमी मानुषराक्षसा परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
> ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहित ते के न जानीमहे ।।

इण संसार रा वाड़िया मे कई क इसा विरला पाकै के स्वार्थ वारै आगौं-नेड़ौई नी रैवै। इसा मिनख पोता रै खावा-पीवारी के गामा छोतरा री कोई चिंता नी करै। वे पोता रै पंड रौ ई ध्यान नी राखै। इसा सतपुरख दूजां खातर जीव देवण नै त्यार रैवै। वे हरदम परोपकार मे लाग्योड़ा रैवै। ए महापुरख उत्तम प्रकार रा व्है। इसा मिनख तीर्थंकर, पैगंबर, महापुरख अर रिसि मुनि वाजै। कई इसा मिनख व्है के जिकौ दूजॉ कना सूं मांमूली लेवै अर दूजा नै घणा सूं घणौ देवण री नीत राखै। वारी विरती इज परोपकार री व्है। इसा मिनख वीचली रास रा व्है। वारी निजर स्वार्थ अर परमार्थ दोनूं माथै रैवै। तीजी भात रा मिनख इसा व्है जिकौ कोई दिन परोपकार रौ नाम इज नी लेवै। इसा मिनख फगत पोतारै स्वार्थ रो इज ध्यांन राखै। करैई मौ का माथै वारै हाथ सूं पण परोपकार व्है जावै, पण वा फगत लाचारी व्है। वारै हिरदा मे परोपकार री साची भावना नी व्है। इसा मिनखा मे स्वार्थ री भावना इज खास व्है। परोपकार रौ वे ध्यांन इज नी राखै। जे करैई भूल सूं परोपकार करै तो वे फगत स्वार्थ खातर, नाम खातर, प्रतिष्ठा खातर, अथवा वाह-वाह खातर। स्वार्थ निकलिया पछै इसा मिनख परोपकार रौ नाम इज नी लेवै। चौथी तरै रा मिनख इसा व्है जिकौ नी तो पोतारौ स्वार्थ कर सकै अर नी पारकां रौ परमार्थ कर सकै। इसा मिनखां रौ पोतारौ स्वार्थ नी सधै तो दूजा रा परमार्थ मे ई घोचौ घालै। इण मिनखा मे विचार करै जिसी बुद्धि इज नी व्है। पोतै खाए नी सकै तो दूजा कना सूं पण ढोलावा री नीत राखै। भृर्तहरि कह्यौ है के 'इसा मिनखां नै किण नांम सूं वतलावणा, एहड़ां नैं काई पदवी देवणी, काई जाण इज नी पडै।'

खरौखर ऊपरला भावार्थ मे मांनखा रै मन रौ झीणौ विस्लैसण हुवौ है। अवै आपणै पूरौ-पूरौ विचार करनै इण च्यार भांत मे सूं एक भांत पसंद करणी है। म्हनै विस्वास है के आप उत्तम भांत इज पसंद करौला। आप उत्तम मिनख बणण वास्तै कोसिस पण करौला। पण आपरी आत्मा रै माथै लाग्योडौ स्वत्व, मोह अर ममता रौ लेप, आपरै हिरदा-माथै आयौडौ आसक्ती रौ पड दौ अर आपरी बुद्धि माथै छायौडौ अहंकार रौ अंधकार आपने भलौ आदमी नी वणण देवै। इण लेप, पड़दा अर अधकर रौ घेरौ इतरौ जाडौ है के इणनै मिटावण खातर

आपनै मैंणत करणी पडैला। पण मिनख जे इण मारग जावण री पक्की तेवडले तो भलौ आदमी बणणौ कोई अबखी काम कोयनी। महात्मा गाधी जिण वखत देस खातर तन मन अर धन अर पण करणौ रौ मतौ कियौ। वानै कोई अबखाई नी लागी। मोकली अडचणा आई पण वे डिगिया कौयनी। गाधीजी एक ठीड लिख्यौ है—It does not cost to be kind (परोपकारी अर दयालु बणण वास्तै कोई कीमत नी देवणी पडै) गाधीजी नै परोपकार करण मे आणद आवतौ। इण नै वे पोतारी साधना रौ एक ऊंचौ साधन मानता। महात्मा जी की लागणी फगत भारत साथै इज नी पण सगला संसार सागै ही। वे विस्व बंधुत्व रा पक्का पुजारी हा। वे चावता के इण वास्तै तन, मन, धन, वाणी अर बुद्धि सगला रौ ई उपयोग ह्वैणौ चाहिजै। इण कारण इज वे सगला संसार मे पूजीजग्या। अलेखूं मिनख वांरा वतायौडा मारग माथै चालै। वांरै परमारथी कामा री सौरभ लाखां करोड़ा मिनखां ताई पूगी।

भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, मरजादा—पुरसोत्तम रांम, करम जोगी क्रिस्ण अर प्रेम रा सागर ईसू इण सगला महापुरखा पोतारी ऊमर परोपकार मे इज गाली। इण भारत भोम माथै हजारा तीरथंकर ह्वैग्या, पगबर ह्वैग्या, रिसि-मुनि अर संत ह्वैग्या। ए सै जणा परोप कार री पगडाडी माथै चालणिया हा। वारी जिंदगी परोपकार मे इज बीती। भारत भोम री माटी री आ वत्ताई है के अठै एक-एक सूं आगला परोपकारी जनमिया। परोपकार रौ पाठ पढवा वास्तै वानै पाठसाला मे नी जावणौ पडै। वांनै कठैई पण परोपकार री ट्रेनिग नी लेवणी पडी। मन रै माय नै मतैई जनमियोडौ परोपकार इज वांरै जीवण रौ इमरत वणग्यौ। वांरै तो रूं-रूं मे परोपकार रौ इमरत वैवतौ। इण सगला महात्मा वा पोतारै हिरदा में बैठौड़ा देव पणा नै परोपकार रै पाण जागतौ राखियौ।

पण आपणा दुरभाग सूं भारत भोम माथै आज पाछा स्वारथ रा वादल ऊपडण लागा है। मांनखा रै मन मे लोभ री वैतरणी बैवण लागी है। लोगा रै मन मे अहकार रौ नाग फूफाड़ा मारै है। आसक्ती रूपी पूतनारागसी बुद्धि रौ सत खावै है। वांणी नै स्वारथ पूरण वजावै अर ममता री जैर पाचू इंद्रिया मे फैलाय नै परोपकार रौ

खोज काढै है। भारत भोम माथै आथमणा कुविचारां हमलौ वोलियौ है। मांनखा रै रू रू मे स्वारथ वलग्यौ है। लगूबगू दोय सौ बरस री गुलामी भारत रा सगला संस्कारां रौ नास कर नाख्यौ है। परोपकार री विरती, मेहमांणां री आगता सागता, पाडोसी धर्म, गामधर्म, नगर-धर्म अर रास्ट्र धर्म रा संस्कारा माथै आथमणा विचारां रौ कालौ पोतौ फिरग्यौ है। नतीजौ ओ निकलियौ है के सगलाई पोत पोतारी पंचायत मे पडिया है। सै जणा आप आपरी खोचडी राधवा री चिंता मे लागौडा हैं। पोतारा कडूंबा रै सिवाय कोई किणरी परवानी करै। केई इसा भला मिनख पण है के जिणा नै फगत पोता रै पंडरीज पडी है, वानै कडूंवा सूं ई कोई तल्लौ-मल्लौ कोयनी। ओ भारत भोम रो दुरभाग समझणौ चाहिजै। इसा संजोगा मे स्वारथ री जडा मजबूत वणै। मांनखौ पोतारा स्वारथ सूं आगै वधैतो पोतारी कौम रौ भलौ करै। उण सूं ई आगै वधै तो सप्रदाय के धर्म वास्तै उदारता वतावैला। ओ सगलौ परोपकार रौ नाटक है। साचौ परोपकार नी है। आंपां जठै परोपकार री मरियादा वाधा, आपणी मांनता रौ लेवल देखनै काई करवानै त्यार ह्वा,उठै नी परोपकार ह्वै अर नी स्व उपकार पण ह्वै। करडी भासा वापरा तो आपणै अहं रौ पोसण ह्वै। परोप-कार री नी तो हदवंदी ह्वै अर नी सीमा रेखा ह्वै। परोपकार रौ 'लेवल' देखनै आगै वध्या के साइन वोर्ड जौया काम पारनी पड़ै। परोपकार में तो हिरदा रा सगला किवाड़ खुल्लामेलणा चांहिजै। वुद्धि माथला सगला पडदा आगा नाखणा चाहिजै। वुद्धि रौ सगलौ स्रोत वैवतौ रैवणौ चाहिजै। अर इंद्रिया रौ वैपार सेवा मे गरक ह्वै जाणौ चाहिजै। काई कुदरत री सगली चीजा दूजा खातर वैवार करै के पोतारौ इज ध्यान राखै। वैपार अर विरती ए दोनूं सव्द अठै विसेस अर्थ मे आया है। इण मे न्यात-पात, धर्म-सप्रदाय के देसवेस रौ भेद भाव नी रैवै। कुदरत पोतारा वारणा सगला रै वास्तै खुल्ला राखै। पछै मांनखौ ओ विचार क्यूं करै के अमुक चीज म्हारै पोतारै वास्तै, म्हारी जात वास्तै के अमुक मिनख वास्तै इज रैवणी चाहिजै। दूजानै आ चीज नी देवूं। कांई ओ स्वार्थ साधन कोयनी ?

मिनख पोतै सगला संसार ताई के संसार रा सगला देसा ताई नी पूग सकै आ वात खरी। संसार रा सगला जीवा तांई पण उणरी

पूग नी व्है सकै, आ वात पण साची। पण मिनख रा विचार, उणरी बुद्धि अर उणरो हिरदो उतरो विसाल व्हैणो चाहिजै के उणमें सगलो संसार समाय सकै। उणनै पोतारी बुद्धि सूं ओडज विचार करणो चाहिजै, मन सूं ओडज मनन करणो चाहिजै, वांणी सूं ओडज वोलणो चाहिजै, हिरदा मे आडज धारणा राखणी चाहिजै के जिको प्राणी के मिनख म्हारै नेडा आवै, के जिण मिनखां नै जीवाकनै म्हैं जावूं, उण सगला री म्हारी मारफत कल्याण व्हैजो, भलो व्हैजो, सुभ व्हैजो, वारो जीवण सुखी अर निरविकार वणजो। आपा आपणा मन, वाणी, बुद्धि, हिरदा अर इंद्रिया माय सूं ओछापणो नी काट सकां? जिको मिनख पोतारै मन, वांणी अर हिरदा सूं ओछा पणो आगो नी कर सकै, फगत पोतारै पग रो विचार इज करै, उणरै जीवण मे उजास किण विध आय सकै? वे भलाई कोई पण सप्रदाय नै मानता व्हैं, कोई पण धर्म मे सिरधा राखता व्हैं, भलाई धार्मिक क्रियावां मे रात दिन लागोडा रैवता व्हैं, लांवा लावा भापण देवता व्हैं, पोतारी जात, प्रांत, भासा अर देस खातर परसेवो पाड़ता व्हैं, पणजे उणा मे परोपकार री, मरियादावंधी रा अभाव री, सीमारेखा का अभाव री, अर लेवल नै साइन वोर्ड रै अभाव की भावना नी प्रगटै, उणरी इन्द्रियां, मन, बुद्धि अर वाणी जीवा अर मिनखां रा कल्याण मे नी लागै तो उणरी आ सगली भगती-भावना, पूजा-पाठ, सिरधा, क्रिया कांड, भासण अर जात-पात वास्तै कीनोड़ी मैंणत फिजूल है।

अवै तो आप समझग्या व्हौला के मांनखा रै जीवण मे परमार्थ अर परोपकार री कितरी जरूरत है। परमार्थ विहूणो मानव जीवण निसार है, नकामो है।

आप जाणो हो के आपरो ओ सरीर पण नासवान है। ओ मोड़ो वेगो सेवट एक दिन माटी भेलो व्हैणो है। इण सरीर रै सागै सगली इद्रिया पण नासवान है। आपणी बुद्धि री विचार करवारी ताकत, आपणै मन री मनन करवारी सगती, अर आपणै वाणी री वोलवारी सामरथ इण सगला रो सरीर रै सागै इज नास व्हैणो है। आंपा जिको साधन सामगरी भेली कीवी है, धनरा ढिगला सचिया है, हूंटा-ढचा करनै जिको साधन भेला कीना है, ए सगली चीजा पण नासवान है। परलोक मे एकपण सागै नी चालै। आंपा सगलाई आछी तरिया जाणा के इण मे सू एकपण आपणै सागै नी चालैला।

इणरै पछै आंपणै आगै ओ सवाल आवै के जिण वखत आंपणी आत्मा परलोक में जावण लागैला, उण वखत आपणै सागै कांई चीज आवैला ? सरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियां, धन-दौलत अर दूजी चीजां तो अठै इज रैवण वाली है पण आप कैवौला के पाप-पुन्न तो साथै चालैला इज ।

म्हूं पण आपनै आइज वात कैवणी चावतौ के ए सगली चीजा तो अठैइज रैवणी है । तो पछै इण चीजा री मदद सू संसार मे चोखासूं चोखा कांम करनै, आरौ चोखा सूं चोंखौ उपयोग करनै पुन्न री थैली आंपणै सागै क्यूं नी लेवणी ? इण साधनां सू पापरा पाटका वाव नै परलोक मे दुखी क्यूं व्हैणौ ? भारत भोम कौ हरेक मिनख आ बात तो आच्छी तिरिया जाणै के जिणरा जिसा काम व्हैला, इणनै विसीज गति पण मिलैला । तो पछै भला काम करनै, आंपणा साधना सूं वीजा री भलाई करनै परलोक वास्तै पुन्न क्यूं नी कमावणौ ? थोड़ी जेज वास्तै परलोक की वात छोड़ दो । परलोक तो हाल आगै है । इण लोक मे पण कियौ मिनख दूजारी भलाई करै, परोपकार में मस्त रैवै, उणनैं जीवण में सुख अर संतोक मिलै । उण नै परोपकार करण में इज सुरगरा आणंद कौ अनुभव व्है । पण इण लोक मे जिकौ धणी पातारौ स्वार्थ देखनै इज पग धकै मैलै, काछवारी गलाई संकीजतौ २ आगै वधै, पूजारी परवा नी करै तो कांई वो मिनख सुखी व्है सकै ? अनुभव तो ओ बतावै के जिको मिनख पोतारा स्वार्थ मे इज लवलीन रैवै, उणनै नी तो कडूंवा मे सुख मिलै, नी जात मे अर नी समाज मे सुख मिलै । अर नी उण मिनख नै देस में पण सुख मिलै । उणकै लोरै तो चितावारी कतार रैवै । इसा मिनख नै तो फगत पैसा भेला करवारी, के उण पैसा रौ पोरौ देवण री चिंता लागौड़ी रैवै । इसौ स्वार्थी मिनख नी तो पोता रा कडूंवा नै राजी राख सकै, नी पाडोसियां नै अर नी जात-पांत वाला नै । मिनखा री तणिजियौडी आख्या के ललाड रा सलां री परवां नी कर नै पोता रा मन मे महाराज वण्यौडौ भलाइ रै वौ पण इसौ स्वार्थी अर अभिमानी मिनख सुखी तो हरगिज नी व्है सकै । इसा मिनख कनै थोड़ी टेम वास्तै पैसा री गरमी भलांई रै वौ के साधन सांमग्री वधारै भलाई व्है । पैसा रा जोर सूं वो दूजां नै मोल ले सकै पैसा देय नै पोता री

सेवा चाकरी पण कराय सकै। पण सेवट बीजा मिनख उणकै आगा नेड़ाई नी रैवै। जे रैवैला तो टिक नै नी रैवै अर जे कदाच रैवैला तो कांमचोरी करैला। अर सेठजी छाती कूटौ करता इज रैवैला। वांनै न चिंताई कदैई नी मिल सकै। कैंवण रौ मतलब ओ के इसा संजोगां मे पण वांनें सुख नी मिल सकै। वांनै साचौ सुख तो उण वखत इज मिल सकै के जद वांरौ मन बदलै, हिरदौ उदार वणै अर मन मे परोपकार री भावना पैदा ह्वै।

अढारै ई पुरांण लिखीज्यां पछै व्यासजी नें पूछ्यौ—इण सगलाई पुराणां रौ सार कांई है? ए अढारैई पुरांण लिखनै आप दुनिया नै कांई सिक्षा देवणी चावौ? इणा में मानखा कै ग्रहण करवा लायक चीज कोइ है? व्यासजी फगत एक स्लोक मे इज जवाब देय दियौ—

> अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
> परोपकार. पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

अढारै ई पुरांणां में व्यासजी रा फगत दो वचन इज सार रूप है के परोपकार कियां सू पुन ह्वै अर दूजां नें दुख दिया सूं पाप ह्वै।

जे सगला मिनख इतरा सास्त्र, इत रा पुरांण, इत रा वेद अर इतरा सूत्र नी घोख नै फगत ए बे वचन इज याद राखता ह्वै तो घणा। इण वचनां रै माफक एक कांम वरजंत है तो दूजौ करणौ चाहिजै। बीजा नै दुख नीं देवणौ अर बण सकै जितरौ परोपकार करणौ।

केई मिनखा री इसी मांनता है के परोपकार फगत पैसा सूं इज ह्वै सकै। पण वांरी आ मांनता एक भरम है। पैसा सिवाय सरीर सूं, मन सूं वुद्धि सूं, वांणी सूं अर बीजा साधनां सूं पण परोपकार ह्वै सकै।

चोखा कांमा मे पैसौ वापरणौ, गरीब गरबारी मदद करणी, वांनै अन्न, कपडौ अर दवाइयां देवणी, ए सगला कांम धन अर बीजा साधनां कै पाण किया जा सकै।

कोई मादा के गरडा मिन्नख री सरीर सू सेवा करणी, कोई निबला मिनख री मदद करणी, पंड मैणत सूं बीजां रो भलौ करणौ, कोई नैं पंड रै मदद री जरूरत ह्वै तो उण नै देवणी, ए सगला परोपकार रा कांम पंड सूं वण सकै।

पोतारी बुद्धि सूं कोई रो भलो करणो, कोई नें चोखो मार्ग बतावणो, जोग सलाह देवणी, कोई नै हिम्मत बंधावणी, वेहमी मिनख री वेहम मेटणो, रलपट मिनखा नै चोखै मार्ग घालणा, कोई लुगाई के आदमी नै अवला मार्ग सूं पाधरै मार्ग लावणा, वे भाई माहोमाह झगडता ह्वै अर कचेड़ियां मे नांणा फगडता ह्वै तो वांनै समझावणा समाज, जात-पांत के देस में जिको खराब रीत-भात चालतो ह्वै, उण नै मिटावणो, नकामा खरचा ओछा करणा, ए सगला परोपकार रा कांम बुद्धि सूं होय सकै।

कोई दुखी भाई वैंन नै दिलासा देवी, जिकण माथै आंपणा बोलां री असर ह्वै सकै, वे कैयनै उणनै मदद देवणी, मांदा मिनख नै धीरप रा वे बोल कैवणा, ए सगला परोपकार वांणी सूं ह्वै सकै।

मन सूं संसार, समाज अर जीव मात्र री भलो चावणो, संसार रै कल्यांण री विचार करणो, इसा परोपकार मन सूं ह्वै सकै।

इणीज भांत पांचूं इंद्रियां सूं पण परोपकार ह्वै सकै। कानां सूं कोई दुखियारी पुकार सुणनें उणरी मदद करणी, आंख्यां सूं कोई कस्ट भोगवता के गुलामी भोगवता मिनख नै उणरी मदद करणी, नाक सूं सूंघ नें जठै गंदगी पडी ह्वै, उणनै हटाय नै दूजां नै उण गंदगी सूं वचावणा, जीभ सूं वासी के सडियौड़ी चीजां चाखनै वांनै आघी नखावणी, जिण सूं दूजां री पेट खराब नी ह्वै, परस इंद्रियां सूं सरीर री ज्ञानेंद्रियां अर कर्मेंद्रियां रो चोखो उपयोग करणै री प्रेरणा देवणी।

परोपकार वाबत मोकली कैय दियो। एक वाक्य मे इज केवणो ह्वै तो सार ओ है परोपकार इज मानव जीवण री साची निसांणी है। जिको मिनख परोपकार सूं अलगो रैवै वो पोतारा जीवण मे सफलता पण नी पाय सकै। इण वास्तै हर वखत पलक-पलक आंपणा हिरदा मे, बुद्धि मे, वांणी में, अर इंद्रियां मे परोपकार रो इमरत वैवतो रैवणो चाहिजै। इण भांत जे हर वखत परोपकार रो इमरत वैवतो रैवें तो आंपां इण भव नै अर आगोतर नै, दोनूं नै सुधार सकां।

卐

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

- भगवान अरिष्टनेमि और कर्मयोगी श्रीकृष्ण : एक अनुशीलन
- चिन्तन की चांदनी
- अनुभूति के आलोक मे
- विचार रश्मिया
- विचार और अनुभूतिया
- खिलती कलियां : मुस्कराते फूल
- प्रतिध्वनि
- फूल और पराग
- बुद्धि के चमत्कार
- अतीत के उज्ज्वल चरित्र
- बोलते चित्र
- जिन्दगी की मुस्कान
- जिन्दगी की लहरें
- साधना का राजमार्ग
- ओकार : एक अनुचिन्तन
- नेम वाणी
- श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र
- सस्कृति के स्वर
- रामराज
- मिनख पणारो मोल
- सस्कृति रा सुर
- कल्प सूत्र

संपर्क करें—

तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, पदराड़ा उदयपुर (राजस्थान)